जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 260 प्रभात कोटा, शुक्रवार 4 जुलाई, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'अमेरिका, उन देशों पर जो रूस से ऑयल खरीदना जारी रखेंगे, 500 प्रतिशत टैरिफ लगायेगा'

अमेरिका के सिनेट में प्रस्तुत इस विधेयक, जिसे दोनों पार्टियों, रिपब्लिकन व डेमोक्रेटिक पार्टी, का आंशिक समर्थन प्राप्त है, का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

वॉशिंगटन/नई दिल्ली, 3 जुलाई। अमेरिकी सिनेट में पेश एक नया बिल (सैंक्शनिंग रशिया एक्ट ऑफ 2025, एस.1241) यह कहता है कि जो भी देश, जिनमें भारत भी शामिल है, से रूस से तेल, गैस, पैट्रोकेमिकल्स या यूरेनियम की खरीद जारी रखेंगे, उनके उत्पादों पर अमेरिका 500 प्रतिशत टैक्स (आयात शुल्क) लगा सकता है।

यह विधेयक सीनेटर लिंडसे ग्राहम और रिचर्ड ब्लूमेंथल द्वारा पेश किया गया है और इसे 80 से अधिक सीनेटरों का समर्थन प्राप्त है। डॉनल्ड ट्रम्प ने न केवल इस विधेयक के कांग्रेस में पारित होने का समर्थन किया है, बल्कि भविष्य के राष्ट्रपतियों को रूस पर दबाव बनाने के लिए एक "टूलबॉक्स" देने की वकालत की है, हालांकि उन्होंने इसमें एक प्रेज़िडेंशियल छूट का प्रावधान भी सुनिश्चित किया है, जिससे राष्ट्रपति चाहें तो टैरिफ को निलंबित कर सकते हैं।

- रूस ने प्रत्युत्तर में चेताया है कि भारत जैसे देश पर इस तरह का दबाव बनाना, यूक्रेन में चल रहे शांति प्रयास को जोखिम में डाल सकता हैं।
- भारत, अमेरिका को फार्मास्युटिकल्स, टैक्सटाइल्स, आईटी सर्विसज़, ऑटो पार्ट्स तथा जवाहरात निर्यात करता है। भारत के ये निर्यात, अमेरिका में बिना किसी रूकावट के पहुँचते हैं। पर, अगर, अमेरिका ने भारत के इस निर्यात पर 500 प्रतिशत टैरिफ लगाया तो ये आईटम इतने महँगे हो जायेंगे कि अमेरिका में इनकी बिक्री खत्म सी हो जायेगी।
- अमेरिका अपनी इकोनॉमिक ताकत का उपयोग, भारत की विदेश नीति को प्रभावित करने के लिए काम ले सकता है। अतः भारत ने अब ज्यादा से ज्यादा ऑयल अमेरिका से खरीदना शुरु कर दिया है, जिससे वो अमेरिका की व्यवसायिक धमकी में भी जी सके तथा अमेरिका के समृद्ध मार्केट में दीर्घकालीन एन्ट्री बनाये रख सके।

क्रेमलिन ने चेतावनी दी है कि भारत जैसे प्रमुख खरीदारों पर दबाव डालने जैसे कदम यूक्रेन में शांति प्रयासों को कमज़ोर कर सकते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह 500 प्रतिशत टैरिफ का प्रस्ताव एक गंभीर खतरा है। यह उन देशों को निशाना बनाता है, जो रूस से तेल खरीद जारी रखते हैं, लेकिन यह दंड सीधे उनके तेल व्यापार पर लागू नहीं होता।

भारत के संदर्भ में, यद्यपि वह अपनी कुल जरुरत के कच्चे तेल 40 प्रतिशत आयात रूस से करता है, लेकिन अमेरिका को वह तेल निर्यात नहीं करता, इसलिए ऊर्जा क्षेत्र में प्रत्यक्ष टैरिफ लगाने का कोई रास्ता प्रत्यक्ष नहीं है। भारत को यह झटका किसी और क्षेत्र से लग सकता है, खासकर अन्य क्षेत्रों में अमेरिका को किये जाने वाले निर्यात से।

इन क्षेत्रों में फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र, आईटी सेवाएं, ऑटो पार्ट्स और रत्न-आभूषण शामिल हैं, जो फिलहाल अमेरिका में न्यूनतम व्यापार बाधाओं के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्र.मंत्री मोदी को मिला घाना का सर्वोच्च सम्मान

अक्कारा/नयी दिल्ली, 03 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को घाना के सर्वोच्च सम्मान, 'द ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ घाना' से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति जॉन महामा ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

मोदी ने बुधवार को इस सम्मान के लिए घाना के राष्ट्रपति को धन्यवाद दिया और इसे 'अत्यंत गर्व का विषय' बताया। प्रधानमंत्री ने 140 करोड़ भारतीयों की ओर से पुरस्कार स्वीकार करते हुए इस सम्मान को भारत के युवाओं की आकांक्षाओं, इसकी सांस्कृतिक परंपराओं और विविधता तथा घाना और

- घाना के राष्ट्रपति जॉन महामा ने मोदी को "ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ घाना" से सम्मानित किया। प्रधानमंत्री ने कहा, इससे वे गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

भारत के बीच ऐतिहासिक संबंधों को समर्पित किया। मोदी ने इस विशेष सम्मान के लिए घाना के लोगों और सरकार को धन्यवाद दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पुरस्कार दोनों देशों के बीच मित्रता को और गहरा करता है तथा द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने की उन पर नई जिम्मेदारी डालता है। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि घाना की उनकी ऐतिहासिक राजकीय यात्रा दोनों देशों के संबंधों को नई गति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार में मतदाता के धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति शुरु हो गई?

भाजपा ने आरजेडी नेता तेजस्वी यादव पर "नमाज़वादी" होने का व्यंग्य दागा तथा विपक्ष ने भाजपा पर एनआरसी (नैशनल रजिस्टर फॉर सिटिज़न्स) को पीछे के दरवाजे से लाकर लागू करने का आरोप लगाया

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3, जुलाई। चुनाव की ओर बढ़ रहे बिहार में मतदाताओं का धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण शुरू हो गया है। जहाँ भाजपा ने राजद (राष्ट्रीय जनता दल) नेता तेजस्वी यादव पर "नमाज़वादी" तंज कसते हुए इसकी शुरुआत की, वहीं विपक्षी नेताओं ने एनडीए पर एनआरसी को पिछले दरवाजे से लागू करने की कोशिश का आरोप लगाया है।

तेजस्वी यादव द्वारा यह कहे जाने पर कि वक्फ एक्ट को कचरे में फेंक दिया जाएगा और बिहार में लागू नहीं किया जाएगा, भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने महागठबंधन के नेताओं पर शरिया कानून लागू करने की मंशा रखने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीति "सभी जातियों और समुदायों के लिए काम" करने की रही है।

- तेजस्वी यादव का दावा है कि वक्फ एक्ट को कूड़े की टोकरी में फैंक दिया जायेगा तथा बिहार में कभी लागू नहीं होगा, पर, संबित पात्रा ने कहा कि महागठबंधन बिहार में "शरिया कानून" लागू करना चाहता है।
- प.बंगाल की मु.मंत्री ने कहा कि बिहार में स्पैशल इन्टैन्सिव रिवीज़न (एसआईआर) को लागू करने का असली टारगैट तो प.बंगाल है। बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं के नाम मिटा दिए जाएंगे तथा उनकी जगह, बिहार, यू.पी., राजस्थान, हरियाणा आदि के मतदाताओं से भर दी जायेगी।
- यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मु.मंत्री नीतीश कुमार ने 2019 में बिहार में एनआरसी लागू करने के बारे में कहा था, "कहाँ का एनआरसी। बिल्कुल लागू नहीं होगा।" देखना है, अब उनका रुख क्या रहता है।

इस बीच, चुनाव आयोग द्वारा बिहार की मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनर्निरीक्षण (स्पेशल इन्टेन्सिव रिवीज़न-एसआईआर) कराने के निर्णय को लेकर एक बड़ा विवाद उभरता दिख रहा है। इस प्रक्रिया के तहत, 2003 के बाद मतदाता सूची में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाक हॉकी टीम को भारत में खेलने की अनुमति मिली

पाक टीम एशिया कप और एफआईएच जूनियर वर्ल्ड कप में हिस्सा लेगी, जो भारत में आयोजित हो रहे हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 जुलाई। पाकिस्तान की हॉकी टीम को अगले महीने भारत में होने वाले एशिया कप में भाग लेने से नहीं रोका जाएगा, यह जानकारी खेल मंत्रालय के सूत्रों ने दी। यही नहीं मदुरै के होने वाले एफ.आई.एच. जूनियर वर्ल्ड कप अण्डर 21 में पाकिस्तानी टीम को खेलने की अनुमति मिली है। सूत्र ने कहा, "हम किसी भी टीम के भारत में हो रही बहुराष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के खिलाफ नहीं हैं। लेकिन दो देशों के बीच सीरीज होना अलग मामला है।"

सूत्रों ने बताया कि पाकिस्तानी टीमों को भारत आने की अनुमति विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय द्वारा दी गई है, और खिलाड़ियों के वीज़ा की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सरकार के एक उच्च-स्तरीय सूत्र ने बताया कि इस निर्णय की जानकारी मेज़बान संघ, हॉकी इंडिया, को दे दी गई है और उसने यह जानकारी अपने

- पाक टीम की वीज़ा प्रक्रिया शुरु की जा चुकी है। सूत्रों ने कहा, भारत सरकार ने अगर पाक टीम को अनुमति नहीं दी होती तो ऑलम्पिक संघ से प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता था।
- ज्ञातव्य है कि अगले माह 27 अगस्त से 7 सितम्बर तक बिहार के राजगीर में एशिया कप हॉकी का आयोजन होगा और 28 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक मदुरै में जूनियर वर्ल्ड कप हॉकी टूर्नामैंट का आयोजन होगा।
- भारत सरकार ने कहा कि यह अनुमति अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं के लिए दी गई है। द्विपक्षीय सीरीज़ का आयोजन एक अलग विषय है।

पाकिस्तानी समकक्ष को भी दे दी है। एक सूत्र ने कहा, "यह निर्णय भारत सरकार के उस प्रयास का हिस्सा है जिसमें राजनीति और खेल को अलग रखने की बात कही गई है, साथ ही ओलंपिक चार्टर के सिद्धांतों का पालन किया गया है, जो भाग लेने वाले देशों के बीच राजनीतिक मतभेदों के बावजूद समावेश और सौहार्द की बात करता है।"

विशेषज्ञों का कहना है कि यदि भारत ने पाकिस्तान टीमों को भागीदारी से रोका होता, तो भारतीय ओलंपिक संघ को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक लाख करोड़ रु. से अधिक के रक्षा सौदे मंजूर

नयी दिल्ली, 03 जुलाई। रक्षा मंत्रालय ने तीनों सेनाओं को अत्याधुनिक स्वदेशी हथियारों तथा उपकरणों और रक्षा सम्बन्धी साजो-सामान से लैस करने के लिए एक लाख पांच हजार करोड़ रूपये के दस रक्षा सौदों को मंजूरी दी है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में गुरूवार को यहां हुई रक्षा

- रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई रक्षा खरीद परिषद की बैठक में यह भी फैसला हुआ कि यह खरीद स्वदेशी रक्षा उद्योग से की जाएगी।

खरीद परिषद की बैठक में, इससे संबंधित प्रस्तावों को आवश्यकता के आधार पर खरीद की मंजूरी दी गयी।

रक्षा मंत्रालय ने बताया कि यह खरीद (भारतीय-स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित) श्रेणी के तहत स्वदेशी रक्षा उद्योग से की जायेगी। इनमें सेना के लिए बख्तरबंद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'एस.आई.आर. लागू हुआ तो बिहार के 20% मतदाता अपना "वोटिंग" का अधिकार खो देंगे'

इंडिया ब्लॉक ने चुनाव आयोग से कहा कि बिहार के "माइग्रैंट वर्कर" (घुमंतु मजदूर) 1 महीने में अपने आप को नये तरीके से मतदाता के रूप में "रजिस्टर" नहीं कर पायेंगे

- श्रीनंद झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 3 जुलाई। इंडिया गठबंधन के नेताओं ने चुनाव आयोग पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि आयोग द्वारा राज्य की मतदाता सूची की स्पेशल इन्टैन्सिव रिव्यू (एस. आई. आर.) कराने के फैसले से बिहार के 8 करोड मतदाताओं में से 20 प्रतिशत लोग निर्वाचनाधिकार से वंचित हो जाएंगे।

बुधवार को चुनाव आयोग के अधिकारियों के साथ विपक्षी गठबंधन की बैठक के दौरान तीखी नोकझोंक की खबरें सामने आई हैं। कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी, जिन्होंने एस. आई. आर.) के खिलाफ कानूनी दलीलें पेश कीं, ने कहा कि यह एक अभूतपूर्व और अलोकतांत्रिक कदम है कि आयोग ने केवल राजनीतिक दलों के अध्यक्षों या उनके द्वारा नामित नेताओं से ही मिलने का निर्णय लिया। सिंघवी ने कहा

- चुनाव आयोग ने एस.आई.आर. लागू करने के लिए तर्क दिया कि महाराष्ट्र के चुनाव के संदर्भ में विपक्ष के नेताओं ने स्वयम् कई प्रश्न उठाये थे, मतदाता सूची के बारे में।
- कांग्रेस की ओर से अभिषेक मनु सिंघवी ने पार्टी का पक्ष रखा और कहा, पार्टी के कई वरिष्ठ नेता, जैसे, जयराम रमेश, पवन खेड़ा तथा बिहार के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह, चुनाव आयोग के साथ मीटिंग में भाग नहीं ले पाये और तीन घंटे बाहर ही बैठे रहे। क्योंकि, अचानक निर्वाचन सदन ने निर्णय लिया कि केवल पार्टी द्वारा मनोनीत एक नेता ही चुनाव आयुक्त से मिल सकेगा।

कि जब विभिन्न दलों के 20 सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल निर्वाचन सदन पहुँचा, तो उन्हें बताया गया कि केवल पार्टी प्रमुखों को ही अंदर जाने की अनुमति है। इसके चलते, वरिष्ठ कांग्रेस नेता जयराम रमेश, पवन खेडा और बिहार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह बैठक में शामिल नहीं हो सके और उन्हें लगभग तीन घंटे तक बाहर इंतजार करना पडा।

राजद सांसद मनोज कुमार झा और सीपीआई (माले) के नेता दीपंकर भट्टाचार्य भी सिंघवी के साथ बैठक में मौजूद थे। भट्टाचार्य ने एस. आई. आर. की तुलना "वोटबंदी" से की, यह कहते हुए कि बिहार के प्रवासी मजदूर चुनाव आयोग द्वारा तय की गई एक महीने की समयसीमा में दोबारा नामांकन नहीं करवा पाएंगे। विपक्षी नेताओं ने चुनाव आयोग पर बीजेपी के लिए चुनाव चुराने की कोशिश का आरोप लगाया और कहा कि महागठबंधन के वोटरों को मतदाता सूची से हटाया जा रहा है।

चुनाव आयोग के अधिकारियों ने एस. आई. आर. की आवश्यकता को उचित ठहराते हुए कहा कि विपक्षी नेताओं ने ही पिछले साल महाराष्ट्र चुनाव के बाद मतदाता सूची पर कई सवाल उठाए थे।

सिंघवी ने कहा कि चुनाव आयोग ने उनकी बातें सुनीं, लेकिन उन्हें स्वीकार करने में रुचि नहीं दिखाई, वहीं, झा और भट्टाचार्य सहित कई विपक्षी नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि एस. आई. आर. की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया, तो वे जन आंदोलन शुरू करेंगे।

रिश्वत प्रकरण में बागीदौरा विधायक के खिलाफ चालान पेश

जयपुर, 3 जुलाई। एसीबी ने विधानसभा में लगाए गए प्रश्नों को वापस लेने के लिए रिश्वत मांगने के मामले में बागीदौरा विधायक जयकृष्ण पटेल सहित, चार आरोपियों के खिलाफ एसीबी मामलों की विशेष कोर्ट में चालान पेश कर दिया। एसीबी ने चालान में एमएलए पर लोक सेवक होते हुए भी

- एसीबी ने विधायक जयकृष्ण पटेल के साथ उनके चचरे भाई विजय कुमार पटेल, लक्ष्मण सिंह मीणा तथा जगराम मीणा को भी आरोपी बनाया है।

पद का दुरुपयोग करने और उसका अनुचित लाभ लेने पर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम सहित बीएनएस की धाराओं में आरोप लगाए हैं। इसके अलावा, आरोप पत्र में एमएलए के चचेरे भाई विजय कुमार पटेल, लक्ष्मण सिंह मीणा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे ने प्र.मंत्री मोदी पर तीन प्रश्न दागे, अपने ट्विटर हैण्डल से

खड़गे के सवालों का आशय है कि चीन बार-बार भारत के खिलाफ कार्यवाही कर रहा है, पर, भारत फिर भी चीन की तरफ ही देख रहा है

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 3 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक नए और प्रभावशाली तरीके से घेरते हुए, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आज तीन सुर्खियों और तीन सवालों के ज़रिए भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने फ़ॉक्सकॉन टेक्नोलॉजी ग्रुप द्वारा सैकड़ों चीनी इंजीनियरों और तकनीशियनों को भारत के आईफोन संयंत्रों से वापस बुलाए जाने की खबर को अपने हमले का मुद्दा बनाया।

खड़गे ने फ़ॉक्सकॉन की इस कार्रवाई को रेखांकित किया, जिसे भारत में एप्पल के उत्पादन विस्तार के प्रयासों को झटका माना जा रहा है। उन्होंने कहा कि 300 से अधिक चीनी कर्मचारी भारत के संयंत्रों से वापस जा चुके हैं।

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष खड़गे ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा "मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, चीन ने भारत के विनिर्माण क्षेत्र से अपने अधिकारियों को वापस बुला लिया है।"

इसके बाद कांग्रेस अध्यक्ष ने सवाल उठाया "क्या यह सच नहीं है कि मोदी सरकार, जो मेक

- खड़गे ने पहला उदाहरण दिया, फॉक्सकान कंपनी ने भारत में लगे प्लांट से 300 चीनी वर्कर व इंज़िनियरों को वापस चीन बुला लिया, जिससे एपल कंपनी के भारत को अपना नया मोबाइल फोन बनाने का "हब" बनाने के प्रोग्राम को भारी धक्का लगा।
- इसी प्रकार चीन ने ऑटोमोबाइल, ईवी, डिफैंस व हाई सिक्युरिटी प्रिंटिंग मशीनों में काम आने वाले रेअर अर्थ मैगनेट व मिनरल्स का भारत को निर्यात एकदम बंद कर दिया है। चीन इस मुद्दे पर भारत से बात करने के लिए भी राजी नहीं है तथा भारत की ऑटोमोबाइल इण्डस्ट्री के प्रतिनिधिमंडल को मिलने का समय भी नहीं दिया है।
- इसके अलावा चीन ने भारत को स्पैशिएलिटी फर्टिलाइज़र का निर्यात भी बंद कर दिया है, जबकि चीन यह फर्टिलाइज़र अन्य देशों को खुलकर निर्यात कर रहा है। यह विशेष फर्टिलाइज़र फल, सब्ज़ी तथा अन्य विशेष कृषि उत्पादों में उपयोग में आता है तथा इसके उपयोग से किसान को अच्छा लाभ होता है।

इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत में पूरी तरह से असफल रही है, उसने डोकलाम और गलवान को भुला दिया और चीनी कंपनियों के स्वागत के लिए रेड कार्पेट बिछा दिया? साथ ही, पी एल आई स्कीम का लाभ उठाने के लिए चीनी नागरिकों को वीज़ा जारी करने की प्रक्रिया को आसान बना दिया?"

उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (प्रोडक्शन लिंक्ड इन्सेन्टिव-पी एल आई) योजनाएं सरकार की ऐसी पहलें हैं, जिनका उद्देश्य भारत में निर्माण को बढ़ावा देना, निर्यात को बढ़ाना और विदेशी निवेश आकर्षित करना है।

चीन द्वारा भारत को रेयर अर्थ मिनरल्स की आपूर्ति रोकने की खबरों पर खड़गे ने लिखा: "चीन ने भारत को रेयर अर्थ मैग्नेट्स और मिनरल्स का निर्यात सख्ती से रोक दिया है, जो अन्य क्षेत्रों के अलावा, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिक वाहन रक्षा, और हाई-सिक्योरिटी करंसी प्रिंटिंग जैसे क्षेत्रों के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। क्या यह सच नहीं है कि मोदी सरकार इस मामले में कोई कदम नहीं उठा रही है, और भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग के प्रतिनिधिमंडल को चीनी अधिकारियों से मुलाकात की अनुमति तक नहीं मिली है?"

खड़गे ने विशेष उर्वरकों (स्पेशएलिटी फर्टीलाइज़र्स) की आपूर्ति रोकने को लेकर भी सरकार पर हमला बोला: "पिछले दो महीनों में चीन ने भारत को विशेष उर्वरकों का निर्यात बंद कर दिया है, जबकि अन्य देशों को इनकी सप्लाई जारी है। भारत 80 विशेष उर्वरक चीन से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आसाराम की जमानत अवधि एक माह और बढ़ी

अहमदाबाद, 03 जुलाई। गुजरात हाईकोर्ट ने दुष्कर्म के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे स्वयंभू धर्मगुरु आसाराम की अस्थायी जमानत एक और महीने के लिए बढ़ा दी है, लेकिन साफ कहा है कि यह आखिरी विस्तार होगा। 86 वर्षीय आसाराम को 2013 के एक दुष्कर्म केस में उम्रकैद की सजा

- गुजरात हाईकोर्ट ने यह फैसला सुनाते हुए यह कहा कि यह आखिरी विस्तार है, इसके बाद जमानत अवधि नहीं बढ़ेगी।

मिली है और वे चिकित्सकीय आधार पर जमानत पर हैं।

गुरुवार को न्यायमूर्ति ईलेश वोरा और पीएम रावल की पीठ ने उनकी जमानत में एक महीने की और मोहलत दी। इससे पहले, कोर्ट ने 28 मार्च को उन्हें अस्थायी जमानत दी थी, जो 30 जून को समाप्त हो रही थी। कोर्ट ने पहले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

मूर्ति के समान मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुन्दर होना चाहिए। –सुकरात

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥ -ईशावास्योपनिषद

संविधान की उद्देशिका में 'समाजवाद' व 'धर्म निरपेक्ष' शब्दों को 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 से जोड़ा गया है। यह संशोधन दिनांक 03.01.1977 से लागू हुआ है। यह वह समय था जब देश में आपातकाल लागू था। देश के नागरिकों के मूल अधिकार लम्बित किये गये थे और एक सीमा तक न्यायालयों के न्यायिक अधिकारों को भी सीमित कर दिये गये थे। इन दो शब्दों के अतिरिक्त एक अन्य शब्द एकता (Unity) को भी जोड़ा गया था; किन्तु विवाद उक्त दो शब्दों के बाबत ही रहा है।

उक्त दो शब्दों को लेकर राजनीति में बंवडर उठ खड़ा हुआ था। कई वर्षों के बाद अब पुनः बवन्डर ने जोर पकड़ा है।

इस बवन्डर की अग्नि में घी डालने का काम संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले ने किया है, जिन्होंने पुरजोर शब्दों में उक्त दोनों शब्दों को संविधान से हटाये जाने की पैरवी की है। केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने दत्तात्रेय होसबले का समर्थन किया है। दोनों का मानना है कि 42वां संविधान संशोधन आपातकाल की देन है, इन्हें हटाया जाना चाहिये। हाँ, शिवराज सिंह ने यह भी कहा है कि इनको हटाये जाने के बाबत विचार होना चाहिये। देश के उपराष्ट्रपति जगदीश धनखड़ ने कहा कि उक्त तीनों शब्द अर्थात् 'समाजवाद', 'धर्मनिरपेक्षता' और राष्ट्र की 'एकता' शब्दों के स्थान पर राष्ट्र की 'एकता तथा अखण्डता' शब्द रख दिये गये। फलस्वरूप देश में उथल-पुथल हो रहा है। यह कदम संविधान निर्माताओं की मंशा के साथ विश्वासघात है।

देश की राजनीतिक पार्टियों में जो आपसी कटुता आई है, उसे देखते हुये कडवाहट व कटुता में जो तीव्रता आई है वह डरावनी दिखती है।

संविधान निर्मात्री सभा की कार्यवाही पर यदि निगाह डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि कानून निर्माताओं के अनुसार समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता (पथं निरपेक्षता) और राष्ट्र एकता उद्देशिका में तथा मूलरूप से निर्मित संविधान के शेष भागों में पहले ही से अन्तर्निहित थे। बोम्बई के केस में माननीय उच्चतम न्यायालय ने न्यायमूर्ति रामास्वामी के माध्यम से कहा था, वह समीचीन है। उन्होंने कहा था -

"उद्देशिका संविधान का अभिन्न अंग है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, संघात्मक ढांचा, राष्ट्र की एकता और अखण्डता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा न्यायिक पुर्नवालोचन संविधान के बुनियादी तत्वों में हैं।"

उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में माना है कि "हमारे संविधान का महत्व उद्देशिका में वर्णित बुनियादी तत्वों पर निर्मित है, यदि उनमें किसी को भी हटा दिया जावे तो संविधान का ढांचा ही ढह जावेगा और संविधान वही नहीं रहेगा तथा अपनी पहिचान ही खो देगा।" इसका अर्थ यह है कि संविधान का अनुच्छेद 368 के तहत संशोधन नहीं हो सकता। बेरूबारी व इन्दिरा गांधी बनाम राज नारायण के केस में भी न्यायालय का यही विचार देखा जा सकता है। बेरूबारी के केस में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है उद्देशिका संविधान निर्माताओं के मन की कुंजी है। गोलकनाथ के केस में यशस्वी न्यायाधीश हिदायतुल्ला ने कहा उद्देशिका "संविधान की मूल आत्मा है, शाश्वत है, अपरिवर्तनीय है।" उद्देशिका के बाबत कुछ न्यायाधीश ने माना कि उद्देशिका संविधन का अंग नहीं है, किन्तु केशवानन्द भारतीय के केस में अधिकांश न्यायाधीशों ने यह माना कि उद्देशिका संविधान का अंग है।

संविधान निर्माता दूरदर्शी थे। उन्हें यह जानकारी थी कि यहाँ कई धर्मों के लोग रहते हैं। उनमें समाजवाद व धर्म निरपेक्षता के अर्थों की पूर्ण समझ थी। अतः उन्होंने उद्देशिका में घोषणा की कि हम भारत के लोगों को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय दिलाना चाहते हैं। उद्देशिका में सामाजिक न्याय को प्रथम स्थान दिया। नीति निदेशक तत्वों के अध्याय में यह कहा कि राज्य का कर्त्तव्य है कि समाज को समाजवाद की ओर बढ़ते हुये समता व समानता के आधार पर देश को मजबूत बनाया जावे। इसी प्रकार धर्म निरपेक्षता के संबंध में देश की जनता से अपेक्षा की कि देश के प्रत्येक नागरिक को विचारों की अभिव्यक्ति व धर्म, विश्वास, पूजा विधि को अपनाने की स्वतंत्रता होगी। वे मानते थे कि धर्म ने जहाँ भी राजनीति को स्पर्श किया वहीं धर्म के प्रति कटुता दिखाई देती है। स्पष्ट किया कि राज्य धर्म के मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करेगा। राज्य का कोई धर्म नहीं होगा।

इन दोनों शब्दों को यदि हम अब हटा भी दें तो भी हमारा संविधान समाजवादी और धर्म निरपेक्ष राज्य ही माना जावेगा। पहले वाला संशोधन असंवैधानिक था तो क्या हम पुनः उन दो शब्दों को निकाल कर असंवैधानिक संशोधन करें? पूर्व संशोधन अवैध था अर्थात् शून्य था। हमारा संविधान पूर्ण है। पूर्ण से कुछ भी निकला जावे या घटाया जावे फिर भी पूर्ण ही रहता है। यह ईशोपनिषद का शान्ति मंत्र है।

संविधान निर्माता नहीं चाहते थे कि संविधान किसी विचारधारा या वाद विशेष से जुडा हो यही कारण था कि उन्होंने समाजवाद शब्द का उल्लेख उद्देशिका में नहीं किया। कांग्रेस सरकार ने समाजवाद शब्द जोड़ा वह भी आपातकाल के समय; किन्तु स्पष्ट नहीं किया कि उनका समाजवाद से क्या अभिप्राय है। भारत में हमने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी का तथा लोहिया जी का समाजवाद देखा है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (आरएसएस) ने समाजवाद की नेहरूवादी व्याख्या की आलोचना की है। एम.एस. गोलवलकर जो संघ के दूसरे सरसंघचालक थे ने समाजवाद को पश्चिमी समाजवाद और धर्म निरपेक्षता को विदेशी विचारधारा माना है। वर्तमान समाजवादी पार्टी ऐसे समाजवाद को तुष्टीकरण वादी मानती है।

दत्तात्रेय होसबले व केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह की उक्त दो शब्दों के उद्देशिका में जोड़े जाने के बाबत विवाद पर टिप्पणी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इस पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की प्रतिक्रिया भी आ चुकी है। अपनी प्रतिक्रिया में राहुल गांधी ने कहा कि दत्तात्रेय को इस बात की चिढ़ है कि वे (राहुल गांधी) संविधान, समानता व धर्म निरपेक्षता और न्याय की बात करते हैं। राहुल गांधी ने अपनी प्रतिक्रिया में यह भी कहा कि संघ और भाजपा का असली मकसद संविधान जैसे शक्तिशाली हथियार को दलितों, पिछड़ो व गरीबों से छींनना है ताकि उन्हें फिर से गुलाम बनाया जा सके। वस्तुतः आज की राजनीति में सहिष्णुता कहीं खो गई है।

वर्तमान में संसार भर में धार्मिक सहिष्णुता के विरूद्ध आचरण हो रहा है। जबकि धर्म तो सहनशीलता व सहिष्णुता सिखाता है। हमारे संविधान में धर्म निरपेक्षता राज्य का मुख्य सूत्र है। राज्य से यह अपेक्षा है कि धर्म के मामले में वह हस्तक्षेप नहीं करेगा। देश में सभी धर्मों के लोगों को अन्तःकरण की स्वतंत्रता है। हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म व ईसाई धर्मों में उन्माद की घटनायें देखने को मिलती हैं। कुछ हिन्दू कट्टर पंथी भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं। तो कहीं मुस्लिम कट्टर पंथी आवाज दे रहे हैं खुदा के दूत पैगम्बर का अपमान सहन नहीं करेंगे। हमें सावधान रहना है, धर्म निरपेक्षता के नाम पर उन्माद की संभावित आंधी को रोकना होगा। हमें अपनी गंगा जमुनी संस्कृति को जीवित रखना है। हमारी धार्मिक सहिष्णुता इतनी कमजोर नहीं है कि कुछ लोगों के गलत आचरण वे वह कमजोर पड़ जावे। हमें हमारी इस संस्कृति को शान के साथ सिर ऊँचा कर संसार के सामने श्रद्धा से खड़ी रखना है।

उपरोक्त परिस्थितियों के संदर्भ में हमारे सामने कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं, जिन पर हमें गम्भीरता से विचार करना है। दो मुख्य प्रश्न हैं (1) क्या संविधान की उद्देशिका में संशोधन किया जा सकता है? (2) क्या उक्त दो शब्द 'सामाजिक' 'धर्म निरपेक्षता' को संविधान की उद्देशिका में जोड भी दिये गये हैं, तो क्या इस कारण उद्देशिका की पावन भावना पर विपरीत असर हुआ है अतः उसे निकालना अति आवश्यक है?

'समाजवाद' व धर्म निरपेक्षता' शब्दों को सन 1976 में संविधान की उद्देशिका में जोड़ा गया था। सम्भवतः ये दोनों शब्द संविधान के प्रावधानों जो पहले ही से थे, को, अधिक महत्व देने के प्रयोजन से जोड़े गये थे, यद्यपि इसकी आवश्यकता नहीं थी। दोनों शब्दों को जोड़ने से पहले भी यानी इनके अभाव में भारत एक समाजवादी धर्म निरपेक्ष राज्य था और भविष्य में भी रहेगा। इन शब्दों को आपातकाल के समय जोड़ा गया था यह सत्य घटना है। इन शब्दों को उद्देशिका में दर्शाना विषय की गम्भीरता को इंगित करता है। नीति निदेशक तत्वों के अध्याय- प्ट में यह बतलाया है कि राज्य का कर्त्तव्य है कि समाज को समाजवाद की ओर ले जाया जावे और समानता व समता के आधार पर देश को मजबूत बनाया जावे। इसी प्रकार धर्म निरपेक्षता के संबंध में देश की जनता से अपेक्षा की है कि देश के प्रत्येक नागरिक को विचारों की अभिव्यक्ति व धर्म, विश्वास, पूजा विधि को अपनाने की स्वतंत्रता होगी।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय अपने निर्णयों के आधार पर यह स्पष्ट कर दिया गया है कि उद्देशिका में संशोधन नहीं किया जा सकता। संविधान की उद्देशिका संविधान का सार है और शाश्वत है। संशोधन से पूर्व भी भारत एक समाजवादी, धर्म निरपेक्ष गणतंत्र था और इसके बाद भी भारत समाजवादी धर्म निरपेक्ष राज्य है। कोई भी विपरीत असर इन शब्दों के जोड़ने के कारण भारत के विकास पर नहीं हुआ है। भाजपा ने कोई भी कानूनी कदम इन शब्दों को हटाने हेतु अभी तक नहीं उठाया, क्योंकि संशोधन के लिये उसके पास दोनों सदनों में दो तिहाही मत संभवतः नहीं है।

इन दोनों शब्दों को यदि हम अब हटा भी दें तो भी हमारा संविधान समाजवादी और धर्म निरपेक्ष राज्य ही माना जावेगा। पहले वाला संशोधन असंवैधानिक था तो क्या हम पुनः उन दो शब्दों को निकाल कर असंवैधानिक संशोधन करें? पूर्व संशोधन अवैध था अर्थात् शून्य था। हमारा संविधान पूर्ण है। पूर्ण से कुछ भी निकला जावे या घटाया जावे फिर भी पूर्ण ही रहता है। यह ईशोपनिषद का शान्ति मंत्र है।

संशोधन करना गलत कदम था। गलती को स्वीकार करने में ही समस्या का समाधान है।

सबको सन्मति दे भगवान!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर विशेष

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 - एक वैश्विक जागरूकता आंदोलन

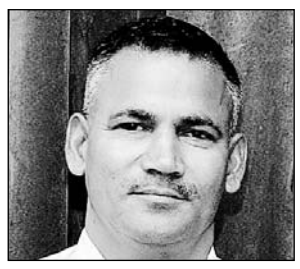

प्रकाश चंद्र शर्मा

जैसे-जैसे दुनिया सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है, सहकारिता एक ऐसी अवधारणा बनकर उभरी है जो इन चुनौतियों से सामूहिक रूप से निपटने का समाधान प्रस्तुत करती है। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 की थीम "सहकारिताः एक बेहतर दुनिया के लिए समावेशी और टिकाऊ समाधान लाना" न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि वैश्विक विकास के लिए सहयोग की शक्ति को रेखांकित भी करती है।

भारत में सहकारिता आंदोलन की नींव 1945 में आर.जी. सराया की अध्यक्षता में गठित सहकारी आयोजना समिति ने रखी। इस समिति ने लोकतांत्रिक आर्थिक विकास के लिए सहकारी समितियों को सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम माना। इसके बाद सहकारिता ने भारत के ग्रामीण, कृषि, उपभोक्ता और औद्योगिक क्षेत्रों में गहराई से अपनी जड़ें जमाईं।

सहकारिता एक विचार नहीं, एक व्यवहारिक व्यवस्था है, जो निम्न सात सिद्धांतों पर आधारित है:

1. स्वैच्छिक और खुली सदस्यता
2. लोकतांत्रिक सदस्य नियंत्रण
3. सदस्य आर्थिक भागीदारी
4. स्वायत्तता और स्वतंत्रता
5. शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना
6. सहकारी समितियों के बीच सहयोग 7. समुदाय के प्रति चिंता

यह प्रणाली स्व-सहायता, स्व-जिम्मेदारी, लोकतंत्र, न्याय और एकजुटता के मूल्यों को बढ़ावा देती है। सहकारी समितियाँ केवल स्थानीय समस्याओं का समाधान नहीं करतीं, बल्कि वे वैश्विक परिवर्तन का भी माध्यम बनती हैं। उदाहरण के लिए:

कृषि क्षेत्र में: किसान सहकारी समितियां किसानों को उपज बेचने में मदद करती हैं और उन्हें बाज़ार में उचित मूल्य दिलाती हैं।

उपभोक्ता क्षेत्र में: उपभोक्ता सहकारी समितियां सस्ती दरों पर गुणवत्तापूर्ण वस्तुएं उपलब्ध कराती हैं।

वित्तीय सेवाएं: सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाकर सहकारी बैंकों ने आर्थिक समावेशन को बल दिया है।

स्वच्छ ऊर्जा और आवास: अनेक देशों में सहकारी मॉडलों ने सस्ती, टिकाऊ और सामुदायिक ऊर्जा समाधान दिए हैं।

2025 का आयोजन क्यों विशेष है? इस बार का आयोजन दो वैश्विक पहलों से जुड़ा है:

1. संयुक्त राष्ट्र का उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच, जो सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की समीक्षा कर रहा है।

2. सामाजिक विकास के लिए दूसरा विश्व शिखर सम्मेलन, जिसमें सहकारी समितियों की भूमिका पर विमर्श होगा। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (ICA) द्वारा दुनिया भर के नागरिकों से अपील की गई है कि वे सहकारिता दिवस में भाग लें और जागरूकता बढ़ाएं कि सहकारी मॉडल कैसे एक बेहतर दुनिया की ओर ले जा सकता है।

3 मिलियन से अधिक सहकारी समितियाँ विश्वभर में सक्रिय हैं। दुनिया की लगभग 12प्रतिशत आबादी इनमें किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है। शीर्ष 300 सहकारी संस्थाओं का कुल कारोबार लगभग 2,409 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। सहकारी क्षेत्र 280 मिलियन लोगों को रोजगार या कार्य के अवसर देता है-जो वैश्विक कार्यबल का लगभग 10 प्रतिशत है। प्रतिशत

इस वर्ष का एक प्रमुख उद्देश्य युवाओं को सहकारी आंदोलन में जोड़ना और उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व को प्रोत्साहित करना है। यह अवसर युवाओं को प्रेरित करता है कि वे न केवल सहकारी समितियों में भाग लें, बल्कि उन्हें नेतृत्व भी प्रदान करें।

सहकारिता: पूंजी नहीं, व्यक्ति केंद्रित मॉडल सहकारी समितियाँ पूंजी पर नहीं, बल्कि लोगों पर केंद्रित होती हैं। यह प्रणाली धन के केंद्रीकरण को रोकती है और संसाधनों के समान वितरण को सुनिश्चित करती है। यह स्थानीय आपूर्ति, निर्णय प्रक्रिया में समुदाय की भागीदारी, और टिकाऊ विकास की दिशा में ठोस कदम है।

निष्कर्षतः – "सहकारिता केवल एक आर्थिक संरचना नहीं है, यह एक सामाजिक दर्शन है।" यह दर्शन हमें सिखाता है कि आपसी सहयोग से हम वैश्विक समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं और एक समावेशी, न्यायपूर्ण तथा टिकाऊ समाज का निर्माण कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 न केवल सहकारिता की उपलब्धियों को पहचानने का दिन है, बल्कि यह भविष्य के निर्माण की दिशा में एक सामूहिक संकल्प का भी प्रतीक है।

-प्रकाश चंद्र शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

जयपुर के मुकेश कुमार को दौसा जिले में लगे अंत्योदय शिविर में लाभ मिला

■ **प्रशासन ने सालों पुराना विवाद समझाइश से निपटाकर जमीन की पत्थरगढ़ी करवाई, अब भूमि आई मुकेश के कब्जे में, मनमुटाव खत्म हुआ**

किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति विशेषकर जमीन उसकी और आने वाली पीढ़ियों के लिए रोजी-रोटी, आशियाने और सामाजिक स्वीकृति, भविष्य के स्थायित्व से जुड़ी होती है और इसी कारण इस पर अधिकार और पूरे कागजात बनाये रखना बड़ी चुनौती होती है। जयपुर के मुकेश ने अपने जीवनभर की कमाई से हुई बचत से दौसा जिले में जमीन खरीदी, लेकिन वहां कब्जा लेने गया तो उसके काफी हिस्से पर अतिक्रमण मिला। इससे वह निराश हो गया लेकिन ऐसे ही निराश, कमजोर लोगों को उनका वाजिब हक दिलवाने के लिए भजनलाल सरकार पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय सम्बल पखवाड़ा संचालित कर रही है। इन शिविरों में हर वर्ग के व्यक्ति को फायदा मिल रहा है। ऐसे ही शिविर ने चिन्ता दूर की मुकेश कुमार की। दौसा जिले की बसवा पंचायत समिति की चौबड़ी वाला ग्राम पंचायत में लगा शिविर उनकी बरसों पुरानी परेशानी खत्म करने वाला साबित हुआ। शिविर के दौरान राजस्व प्रशासन ने उनकी जमीन से सालों पुराना उलझा हुआ अतिक्रमण हटाकर जमीन पर पत्थरगढ़ी करवाकर राहत दी।

जयपुर में निवारू इलाके के रहने वाले मुकेश कुमार वेद ने कोलेश्वर खुर्द में कई साल पहले जमीन खरीदी थी। इस जमीन पर पड़ोसी खातेदारों के बीच मतभेद चल रहे थे, जिन्होंने उनकी जमीन के कुछ हिस्से पर अतिक्रमण कर रखा था। मुकेश कुमार ने रेकार्ड के मुताबिक उनसे अतिक्रमण हटवाने के काफी प्रयास किए लेकिन कामयाबी नहीं मिली। अन्त में उन्होंने उपखण्ड अधिकारी के राजस्व न्यायालय में वाद दायर किया। इस दौरान वह जयपुर से बार-बार आने-जाने से भी काफी परेशान होते रहे।

मुकेश कुमार को जब ग्राम पंचायत में शिविर लगने की जानकारी मिली तो उन्होंने प्रशासन से सीमा ज्ञान कराकर पत्थरगढ़ी कराने का आग्रह किया। इस पर बसवा उपखंड अधिकारी रेखा मीणा ने संवेदनशीलता दिखाते हुए राजस्व टीम को प्रकरण का नियमानुसार निस्तारण करवाने के निर्देश दिए। बसवा तहसीलदार अन्नू शर्मा एवं उनकी टीम ने अतिक्रमियों से समझाइश की और सीमा ज्ञान करवाकर पत्थरगढ़ी की कार्यवाही पूरी करवाई। प्रशासन का शांतिपूर्ण पत्थरगढ़ी करवाना प्रशंसनीय कार्य :- अपनी जमीन की पत्थरगढ़ी होने से प्रसन्न मुकेश कुमार ने कहा कि प्रशासन ने गांव के कई लोगों के विरोध के बावजूद समझाइश कर शांतिपूर्ण ढंग से पत्थरगढ़ी का कार्य करवा दिया जो बहुत ही प्रशंसनीय है। उन्होंने यह अभियान चलाने के लिए राज्य सरकार का आभार व्यक्त करते हुए उपखंड

अधिकारी रेखा मीणा, तहसीलदार अन्नू शर्मा, गुढ़ा कटला नायब तहसीलदार बाबुलाल मीणा, पटवारी सुमेर सिंह गुर्जर एवं उनकी पूरी राजस्व टीम की सराहना की।

दो भाइयों के आपसी रजाबंदी से हुआ जमीन बंटवारा :- बैजुपाड़ा पंचायत समिति की निहालपुरा ग्राम पंचायत में लगे शिविर के दौरान राजस्व टीम ने दो भाइयों के आपसी रजामंदी से जमीन का बंटवारा कर राहत पहुंचाई। रामजीलाल एवं हरीराम बलाई को जब गांव में शिविर लगने की जानकारी मिली तो दोनों भाइयों ने ठीकरिया गांव में स्थित कृषि भूमि का आपसी रजाबंदी से विभाजन कराने के लिए शिविर प्रभारी के समक्ष प्रार्थना-पत्रा प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने तुरंत पटवारी को मौके पर भेजकर उनका विभाजन प्रस्ताव तैयार कराया और इसे शिविर में ही स्वीकृत कर दिया। काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा-53 के तहत वर्षों बाद जमीन का विभाजन होने से दोनों भाई काफी खुश नजर आए।

बहरावंडा तहसील में गढ़ ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर के दौरान चौथ्या बैरवा के पिता का नाम राजस्व रेकार्ड में दुरुस्त कर राहत दी। चौथ्या ने रेकार्ड में पिता का नाम गलत होने की वजह से हो रही कठिनाइयों का जिक्र करते हुए नाम दुरुस्तीकरण के लिए आवेदन किया। राजस्व टीम ने मौके पर ही संबंधित रेकार्ड की जांच कर इनके पिता का नाम जो पहले राजस्व रेकार्ड में भोल्या था, दुरुस्त कर मोत्या किया गया।

गांगलियावास में 32 लोगों को मिले आयुष्मान कार्ड :- रामगढ़ पचवारा ब्लॉक के गांगलियावास ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर के दौरान 32 लोगों को आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए। आयुष्मान कार्ड मिलने के बाद शंकर लाल सैनी ने कहा कि अब उसे बीमार होने पर सरकार ने खर्चे की चिंता से मुक्त कर दिया है। उन्हें इस कार्ड के बल पर अच्छे अस्पतालों में बेहतर मेडिकल सुविधा निःशुल्क मिल सकेगी।

सोहन लाल,
सहायक निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय दौसा।

जैसलमेर के किले की दीवार का कार्य जनता के लिये जी का जंजाल बना

■ **लोगों का कहना है कि नगर परिषद आयुक्त लजपालसिंह की हठधर्मिता की वजह से किले की दीवार से छेड़छाड़ करने का कार्य हो रहा है**

जैसलमेर। जैसलमेर के किले की दीवारें विशाल पीले बलुआ पत्थर से बनी होने से तथा घींया पत्थर की पहाड़ी पर टिकी हुई है। 11 माह पूर्व जैसलमेर के सोनार किले की दीवार का एक हिस्सा गिर गया था। किले की दीवार से बड़े पत्थर सड़क पर आ गिरे, जिससे वहां काम कर रहे दो मजदूरों ने भागकर अपनी जान बचाई। पत्थरों के गिरने से बैरिकेड और बीएसएनएल का पोल भी टूट गया था। यह घटना किले की दीवार के जर्जर हालत और बारिश के कारण हुई है। स्थानीय लोगों और अधिकारियों का कहना है कि नगरपरिषद द्वारा बिना अनुमति के किले की दीवार में छेड़छाड़ की जा रही थी, जिससे दीवार की नींव कमजोर हो गई और यह घटना हुई।

जैसलमेर का सोनार किला, जिसे गोल्डन फोर्ट भी कहा जाता है, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है और 868 साल पुराना है। स्थानीय लोगों ने बताया कि दीवार के अंदर पानी निकासी की व्यवस्था नहीं है और नियमित सफाई

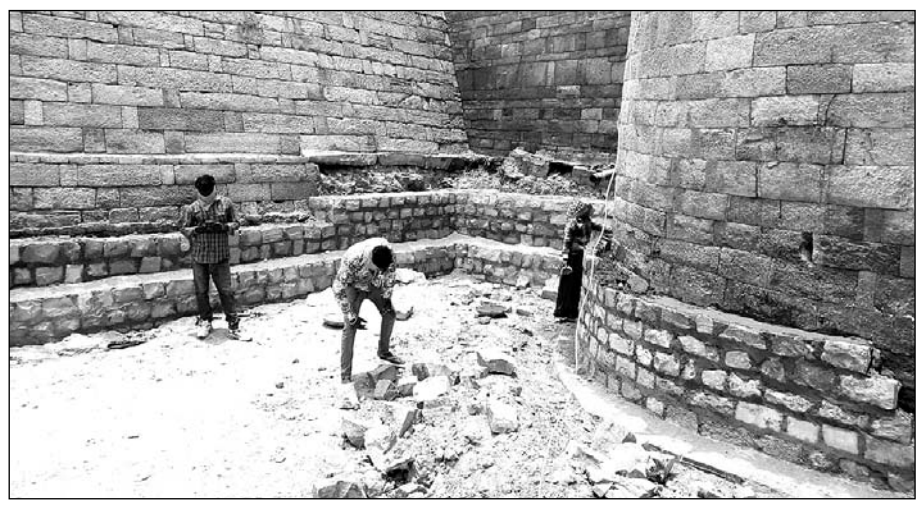

जैसलमेर दुर्ग की नीव के आगे घटिया कार्य हो रहा है।

भी नहीं होती, जिससे पानी जमा हो जाता है और दीवार कमजोर हो जाती है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने नगरपरिषद को दीवार में छेड़छाड़ बंद करने के लिए नोटिस दिया है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। इस घटना से स्थानीय लोगों में काफी गुस्सा है और वे प्रशासन से किले के संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने की मांग कर रहे हैं।

नगर के मौजिज गोविंदलाल ने बताया कि पिछले कई दिनों से नगरपरिषद आयुक्त लजपालसिंह सोढा की हठधर्मिता की वजह से किले की दीवार से छेड़छाड़ करने का कार्य हो रहा है। उन्होंने बताया कि वर्षों से दुर्ग मे निवास कर रहे दुर्ग वासी अपने घर की मरम्मत नहीं करवा सकते। क्योंकि उन्हें पुरातत्व विभाग वाले अनुमति नहीं देते। उस दौरान जिला प्रशासन एवं नगरपरिषद दुर्ग के प्रथम प्रोल पर चौकीदार लगाकर सीमेंट लेजाने पर रोक लगाते हैं परंतु इन दिनों वो नियम गौण हो गया हो नगरपरिषद आयुक्त लजपालसिंह को समय रहते किले के प्रथम प्रोल के समीप दीवार एंव नीव की बिना पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की अनुमति के करवाया जा रहा कार्य तुरंत प्रभाव से बंद करवाना चाहिए अन्यथा जन आंदोलन किया जायेगा और न्यायालय की शरण ली जायेगी।

राशिफल

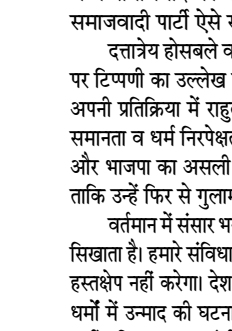

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 4 जुलाई, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र सायं 4:50 तक, शिवयोग सायं 7:35 तक, कौलव करण सायं 4:32 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज भडल्या नवमी है। आज गुप्त नवरात्रा समाप्त होंगे। आज श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 7:24 तक, लाभ-अमृत 7:24 से 10:48 तक, शुभ 12:31 से 2:13 तक, चर 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:20

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। घर-परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

सार-समाचार

प्रोत्साहन राशि योजना के आवेदन शुरू

कोटा, (निसं)। कृषि विभाग द्वारा कृषि संकाय में अध्ययनरत छात्राओं के लिए प्रोत्साहन राशि योजना के तहत राजकिसान साथी पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। आवेदन राज किसान साथी पोर्टल पर 31 जनवरी 2026 तक किए जाएंगे। जिले के समस्त कृषि विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ इस योजना के अंतर्गत प्रोत्साहन राशि के लिए आवेदन कर सकती हैं। 31 जनवरी के बाद कोई भी आवेदन स्वीकार नहीं किए जायेंगे। संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार अतीश कुमार शर्मा ने बताया कि ऑनलाइन आवेदन करते समय छात्राएं आवेदन में सही शैक्षणिक वर्ष अंकित करें। साथ ही, गत् वर्ष की अंक तालिका और राजस्थान का मूल निवासी प्रमाण पत्र अपलोड करना अनिवार्य होगा। कृषि विषय मे सेकेंडरी और हायर सेकेंडरी में अध्ययनरत् छात्राओं को 15 हजार रुपये, कृषि स्नातक शिक्षा जैसे उद्यानिकी, डेयरी, कृषि अभियांत्रिकी, खाद्य प्रसंस्करण आदि में अध्ययनरत् छात्राओं और स्नातकोत्तर कृषि में अध्ययनरत् छात्राओं को 25 हजार रुपये और पी.एच.डी. में अध्ययनरत् छात्राओं को 40 हजार रुपये प्रति वर्ष की दर से प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराये जाने का प्रावधान हैं। उन्होंने बताया कि गत् वर्ष मे अनुत्तीर्ण छात्राओं को पुनः उसी कक्षा में प्रवेश लेने पर प्रोत्साहन राशि देय नहीं होगी। साथ ही, सत्र के मध्य शिक्षण संस्थान छोड़कर जाने वाली छात्राओं को भी प्रोत्साहन राशि का भुगतान नहीं होगा।

मुनिद्वय निष्पक्ष सागर संघ का मंगल प्रवेश

भवानीमंडी, (निसं)। भवानीमंडी में आचार्य विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनिद्वय निष्पक्ष सागर व निस्पृहसागर महाराज इंदौर मध्यप्रदेश से विहार कर भवानीमंडी पहुंचे जहाँ उनका गुरुवार को नगर में मंगलप्रवेश हुआ। जिनकी जैन समाज ने भव्य अगवानी की जिन्हे रामनगर के नंदूबाई, शंकरलाल आदर्श विद्या मंदिर से ढोल, बैंड, बाजे, बग्घी, हाथों में कलश लिए चल रही बालिका मंडल, छतरी कलश के साथ चल रहे महिला मंडल, आष्टा से आए हुए दिव्योदय जयघोष द्वारा किया गया वादन, वेदपाठी बालकों द्वारा शोभायात्रा के साथ दिगंबर जैन मंदिर तक लाया गया। मुनि निस्पृहसागर महाराज ने अपने प्रवचन मे आचार्य विद्यासागर महाराज की आज्ञा को रामायण के दृष्टांत के माध्यम से बताया कि गुरु की आज्ञा का पालन करना ही गुरु की सच्ची सेवा है। एक पिता तभी निश्चिंत होकर सन्यास ग्रहण कर सकता है जब उनका कोई पुत्र उनकी आज्ञा का पालन करें। समझदार व्यक्ति कभी उलझनो में उलझना नहीं चाहेगा, यह लौकिक संसार उलझाने वाला है, इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए उतना अच्छा है। जैन मुनि गुरु आज्ञा को ही अपना दीक्षा व मोक्ष मान लेते हैं। वैभव कभी गुरु चरणों से अधिक श्रेयस्कर व प्रभावी नहीं हो सकता है। मां की छत्रछाया हमेशा सुखदाई होती है।

श्याम भजन संध्या आज

कोटा, (निसं)। स्व.श्री लालचंद शिमला देवी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 4 जुलाई शुक्रवार 2025 को रात्रि 8.00 बजे से श्री श्याम कृपा महोत्सव के अंतर्गत विशाल श्याम भजन संध्या का आयोजन गीता सत्संग भवन, सरोवर रोड़ कोटा पर किया जाएगा। आयोजक कमल किशोर अग्रवाल ने बताया कि माताजी स्व.श्रीमती शिमला देवी अग्रवाल की पुण्यतिथि पर बाबा श्याम का गुणगान करने बांदीकुई से आंचल अरोड़ा, देई (बूंदी) से राजेन्द्र अग्रवाल पधार रहे है, साथ ही स्थानीय भजन गायक चंद्रमोहन गर्ग, राजेन्द्र पारीक, भंवर बना, आकाश मालकानी, शुभम शर्मा, राहुल दुबे, दीप अग्रवाल, उन्नति शर्मा, निहारिका सोनी तथा रिद्धि भरावा भी बाबा श्याम का गुणगान करेंगे। श्री श्याम मित्र मंडल संस्था के सान्निध्य में यह कार्यक्रम आयोजित होगा। संस्था के अध्यक्ष सुरेन्द्र गोयल ने बताया कि बाबा श्याम का श्रृंगार दिल्ली और कोलकाता के फूलों से किया जाएगा। बाबा श्याम की अखंड ज्योति जलाई जाएगी। पहले यह कार्यक्रम तिरुपति बालाजी पर होना था, लेकिन बरसात के मौसम को देखते हुए गीता भवन सत्संग हॉल में यह भजन संध्या आयोजित की जाएगी।

शतरंज प्रतियोगिता 5 जुलाई से

कोटा, (निसं)। जिला शतरंज संघ कोटा द्वारा आयोजित जिला अण्डर-13-15 (ओपन व गर्ल्स) शतरंज प्रतियोगिता 5 व 6 जुलाई को वृंदावन होम स्टे सीपी-22 विवेकानंद नगर कोटा में आयोजित की जाएगी। अण्डर-13 वर्ग की प्रतियोगिता 5 जुलाई व अण्डर-15 की प्रतियोगिता 6 जुलाई को आयोजित की जाएगी। कोटा शतरंज संघ के अध्यक्ष प्रेम भाटिया ने बताया कि इस प्रतियोगिता का पहला राउण्ड दोपहर 2 बजे से खेला जाएगा। यह प्रतियोगिता अंतरराष्ट्रीय स्विस पद्धति के आधार पर खेली जाएगी। अण्डर-13-15 (ओपन व गर्ल्स) में वही खिलाड़ी खेलने के लिए पात्र होगा जिसका जन्म अण्डर-13 के लिए 1 जनवरी 2013 व इसके बाद हुआ है एवं अण्डर-15 के लिए 1 जनवरी 2010 व इसके बाद हुआ है इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रत्येक वर्ग प्रथम 2 बालक व 2 बालिकाओं का चयन अण्डर-13-15 राज्यस्तरीय शतरंज प्रतियोगिता के लिए किया जाऐगा।

मकान मालिकों को नोटिस दिए

कोटा, (निसं)। मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए कामयाब कोटा के तहत गुरूवार को स्वास्थ्य विभाग की 714 टीमों ने जिले में 12875 घरों का सर्वे कर लार्वारोधी व जागरूकता गतिविधियां की। सीएमएचओ डॉ.नरेन्द्र नागर ने बताया कि मच्छरजनित डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि की रोकथाम के लिए टीमों ने 25678 कंटेनरों की जांच की, इस दौरान लार्वा मिले 226 कंटेनरों को उपचारित किया, 2173 कंटेनरों को खाली कराया, 1299 कंटेनरों में टेमीफोस व 992 स्थानों पर एमएलओ डाला। इस दौरान 196 ब्लड स्लाईड भी ली गई। 239 कमरों में पायरेथ्रम का स्प्रे किया गया। लार्वा मिलने पर 12 मकान मालिकों को नोटिस दिये। आमजन को बचाव-रोकथाम संबधी जागरूकता के पम्फलेट वितरित किए, पोस्टर व स्टीकर चस्पा किए।

'रामकथा श्रवण से समाप्त हो जाती है जीवन की हर व्यथा'

- मुरलीधर महाराज ने वैराग्य, भक्ति और विवेक के संदेश दिए
- कोटा में चल रहे श्रीरामकथा महोत्सव में श्रद्धालु उमड़े

कोटा, (निसं)। दशहरा मैदान स्थित श्रीराम रंगमंच पर चल रहे श्रीराम कथा महोत्सव के दूसरे दिन संत मुरलीधर महाराज ने माता सती और भगवान शिव के संवाद व रामकथा के आध्यात्मिक प्रसंगों का रसप्रद और ज्ञानवर्धक वर्णन किया। कथा में संतश्री ने कहा कि मन का स्वभाव है लगना, वाणी का स्वभाव है बोलना।

अब यह तय आपको करना है कि मन संसार में लगे या भगवान में। इसी को उन्होंने वैराग्य और विवेक का मूल बताया। माता सती और शिव प्रसंग में उन्होंने बताया कि शिवजी स्वयं राम का जप करते हैं, और माता सीता एवं भगवान शंकर के बीच संवाद के माध्यम से उन्होंने राम कथा को मोह और भ्रम से मुक्ति का साधन बताया।

कथा के दौरान सती-शिव संवाद का उल्लेख करते हुए मुरलीधर महाराज ने बताया थी माता सती को प्रभु श्रीराम की दिव्यता पर संदेह होता है। भगवान शिव माता सती को समझाते हैं कि श्रीराम कोई साधारण मनुष्य नहीं, साक्षात ब्रह्म हैं, तो सती उनकी बात पर संशय करती हैं और श्रीराम की परीक्षा लेने जाती हैं। लेकिन रामजी उन्हें बिना देखे ही पहचान लेते हैं, और सती भीतर से व्याकुल हो जाती हैं और उन्हें पश्चताप करना पड़ता है। संतश्री ने कहा कि यह प्रसंग हमें सिखाता है कि जब श्रद्धा में संशय आ जाए, तो वह भक्ति नहीं रह जाती।

रामकथा केवल भगवान की महिमा नहीं बताती, यह मन के भीतर के भ्रम और अहंकार को पहचानने का साधन भी है। राम कथा वो सरोवर है जिसमें बार-बार डुबकी लगाकर ही मन पवित्र होता है। हनुमान जी महाराज स्वयं कहते हैं कि जीवन की सारी व्यथा रामकथा सुनने से मिट जाती हैं। यह कथा केवल ज्ञान नहीं, मन की शुद्धि और चेतना का जागरण है। व्यासपीठ से पूज्य संत मुरलीधर महाराज ने कहा कि संत की कोई जाति नहीं होती। जिसके साथ कुछ लोग चलें, वह पंथ होता है, लेकिन जिसके साथ सभी चलें, वही सच्चा संत होता है।

उन्होंने कहा कि संत परमार्थ का मार्ग दिखाता है, मोह और भ्रम को काटता है। महाराज ने श्रद्धालुओं से कहा कि भगवान के द्वार पर जाने के लिए पद, कद, अहंकार और बुद्धि का त्याग आवश्यक है। प्रभु राम सहज हैं, उनसे कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं होती जब भाव शुद्ध होता है, तो वह स्वतः दे देते हैं। संत श्री ने प्रवचन में जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम हमेशा चाहते हैं कि जो हम करें, वही हो; लेकिन जो हम चाहते हैं, वह तभी संभव है जब हम वही करें, जो भगवान चाहते हैं। इसलिए जरूरी है कि हम वही करे जो प्रभु की इच्छा हो तो वही होगा जो हम चाहते हैं।

उन्होंने जीवन में निराशा नहीं, श्रद्धा और समर्पण का भाव बनाए रखने पर बल दिया। कथा के दौरान जैसे ही "मन सीताराम रट रे, तेरे संकट जाएंगे कट रे3" और "जाबा द्यो सखियों म्हानें शिव जी लडेला ये3" जैसे भजन गूंजे, पूरा वातावरण भक्ति में सराबोर हो उठा। दूसरे दिन कथा गायन दोपहर 2.30 बजे से सायं 7.00 बजे तक चला। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए महाराज ने घोषणा की कि अब प्रतिदिन कथा का समय दोपहर 2.00 बजे से सायं 6.30 बजे तक निर्धारित रहेगा। श्रीराम कथा सेवा समिति की संरक्षक डॉ.अमिता बिरला, आयोजक अशोक जाजोदिया, आनंद जाजोदिया, सीता देवी, अनन्त प्रकाश जाजोदिया सहित समस्त जाजोदिया परिवार व समिति पदाधिकारियों ने व्यासपीठ की पूजा कर संतश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

'नो प्लास्टिक बैग' का संदेश दिया

कोटा, (निसं)। इंटरनेशनल प्लास्टिक बैग फ्री डे के उपलक्ष्य में विज्ञान नगर स्थित कुटुर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी संस्था द्वारा "नो प्लास्टिक बैग" थीम पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पेपर ओर जूट के बेग्स इस्तेमाल करने का मैसेज दिया गया।

संस्था के विद्यार्थी नुरीन अंसारी, माही वर्मा, गुनगुन डागर और नूर उल कमर ने प्लास्टिक बैग से फैशन ड्रेस बनाई और बड़ा पेपर बैग नो प्लास्टिक थीम पर तैयार किया जिसे संस्था के विद्यार्थियों द्वारा प्रसेंट किया गया संस्था की निदेशक पुजा राजवंशी ने बताया कि फैशन के माध्यम से सभी को प्लास्टिक बेग्स से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने का प्रयास किया गया है क्योंकि प्लास्टिक बैग हमारे पर्यावरण और जीवन के लिए खतरा बन गया है।

सम्मान समारोह आयोजित

छबड़ा (निसं)। बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में बुधवार को प्रधानाचार्य अशोक यादव की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम वाली प्रतिभावान छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। प्रधानाचार्य यादव ने बताया कि 219 छात्राओं में से 177 छात्राएं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई है, जिनमें से 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली 95 छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित। जीव विज्ञान विषय में 100 प्रतिशत प्राप्तांक लानें वाली सात प्रतिभावान छात्राओं को 1500 रुपये एवं अभिषेक योगी वकअ द्वारा कम्प्यूटर साईंस में 100 प्रतिशत अंक लाने वाली दो छात्राओं को 2100 रुपये का नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आचार्य धीरेंद्र शास्त्री के जन्म उत्सव पर 201 यूनिट रक्तदान

कोटा, (निसं)। बागेश्वर धाम के प्रमुख आचार्य धीरेंद्र शास्त्री के जन्म उत्सव के उपलक्ष में थेगड़ा रोड बोरखेड़ा स्थित कंचन रिजॉर्ट पर श्रद्धालुओं द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 201 यूनिट रक्तदान हुआ। बागेश्वर धाम सरकार शिष्य मंडल कोटा के अध्यक्ष अनुज शर्मा ने बताया कि सिविल में युवाओं ने उत्साह के साथ श्रद्धा भाव से बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जिसमें 201 यूनिट रक्तदान हुआ। सुबह से ही युवा रक्तदान करने उमड़ा, जिनका उत्साह देखते ही बन रहा था। इस अवसर पर अनुज शर्मा ने कहा कि भले ही यह बागेश्वर धाम सरकार की जन्म उत्सव पर रक्तदान शिविर का आयोजन हो।

अतिक्रमण हटाया

कोटा, (निसं)। नगर निगम कोटा उत्तर अतिक्रमण अनुभाग द्वारा गुरुवार को बोरखेड़ा पुलिया के नीचे के क्षेत्र से अस्थाई अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही को अंजाम दिया। काफी समय से अतिक्रमियों द्वारा अस्थाई अतिक्रमण किए जाने की शिकायते प्राप्त हो रही थी। जिन्हे काफी मर्तबा अतिक्रमण हटाने हेतु समझाइश की गई थी। परन्तु अतिक्रिमयों द्वारा दिन प्रति दिन अतिक्रमण बढ़ता जा रहा था। जिस पर आयुक्त नगर निगम कोटा उत्तर अशोक त्यागी से प्राप्त निर्देश अनुसार अतिक्रमण निरोधत्मक कार्यवाही को अतिक्रमण प्रभारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तरूण कांत सोमानी, सह प्रभारी कनिष्ठ अभियंता हनुमाना राम के नेतृत्व में संयुक्त कार्यवाही करते हुए अस्थाई अतिक्रमण निरोधत्मक कार्यवाही को अंजाम दिया गया।

त्यौहारों पर सौहार्द कायम रखने में सहयोग की अपील

कोटा, (निसं)। जिला कलक्टर पीयूष समारिया ने कहा कि आगामी त्यौहारों के दौरान जिले में सभी वर्ग एवं समुदाय आपसी भाईचारा कायम कर सफल आयोजन में सहयोग प्रदान करें। उन्होंने सौहार्दपूर्ण माहौल कायम रखने में सभी धर्मगुरुओं, सामाजिक-धार्मिक संगठनों, समाजसेवियों एवं अन्य गणमान्य नागरिकों से सहयोग की अपील की। जिला कलक्टर गुरूवार को कलेक्ट्रेट स्थित न्यू सभागार में कोटा जिले के विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी धर्म-सम्प्रदाय एवं वर्गों के सहयोग से विभिन्न त्यौहारों का सफल आयोजन हो, यह हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि सभी समुदाय एवं वर्गों को साथ लेकर कोटा जिले को और बेहतर बनाने की दिशा में आगे कदम बढ़ाए जाएंगे।

ताजियों के रूट की व्यवस्थाएं चेक करें-समारिया ने त्यौहारों को देखते हुए नियुक्त कार्यपालक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों को संयुक्त रूप से मोहर्रम के ताजिए निकलने वाले रूट की विजिट कर समस्त व्यवस्थाओं की जांच करने के निर्देश दिए। उन्होंने सोशल मीडिया पर भी विशेष निगरानी रखते हुए किसी भड़काऊ पोस्ट पर संज्ञान लेने के निर्देश दिए। उन्होंने नगर निगम को ताजियों के रूट पर कचरे एवं नालियों की सफाई तथा मेनहॉल ढकने के निर्देश दिए। साथ ही, आवारा पशुओं को भी हटाने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने मानसून के दौरान हुई भारी वर्षा को देखते हुए अपील की कि सभी सतर्कता एवं सावधानी बरतें। उफनते हुए नालों एवं पानी के तेज बहाव में नहीं जाएं। उन्होंने आपदा प्रबंधन एवं नगर निगम अधिकारियों को राहत एवं बचाव कार्यों के लिए पूरी तैयारियां रखने के निर्देश दिए। केईडीएल अधिकारियों को झूलते तारों को सही करने एवं ताजियों के रूट पर विजिट कर ट्रांसफॉर्मर एवं अन्य पॉइन्ट्स चेक करने के निर्देश दिए।

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि अचल सम्पत्ति मकान नम्बर A-70/R, वाके श्रीरामकृष्णपुरम सेक्टर-A, योजना कोटा (राजस्थान) में स्थित है, उक्त सम्पत्ति को नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा श्री तरुण कान्त सोमान के पक्ष में जरिये रजिस्टर्ड पट्टा विलेख (लीज डीड) दिनांक 28.03.2025 जिसका पंजीयन दिनांक 29.03.2005 को प्राप्त हुई थी, तत्पश्चात् श्री तरूण कान्त सोमानी ने बेचान जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 24.02.2014 को श्रीमती मनोहर बाई के पक्ष में कर दिया, तत्पश्चात् श्रीमती मनोहर बाई ने जरिये वसीयतनामा दिनांक 16.06.2021 को श्री राकेश कुमार जैन के पक्ष में कर दिया, तत्पश्चात् मनोहर बाई का स्वर्गवास दिनांक 11.07.2021 को हो गया, एवं मनोहर बाई के स्वर्गवास के पश्चात उनके विधिक वारिसान् श्री राकेश कुमार जैन वसीयतनामा दिनांक 16.06.2021 जिसका पंजीयन दिनांक 22.09.2021 के अनुसार उक्त सम्पत्ति के संयुक्त रूप से मालिक व काबिज हो गये। तत्पश्चात् नगर विकास न्यास कोटा द्वारा नाम हस्तान्तरण दिनांक 15.03.2022 को श्री राकेश जैन के पक्ष में किया हुआ है, तत्पश्चात् श्री राकेश कुमार जैन ने बेचान जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 29.09.2022 को श्रीमती पारसी पत्नि श्री देवा गुर्जर के पक्ष में कर दिया, जिस बाबत् मेरी अभिभाष्या श्रीमती पारसी पत्नि श्री देवा गुर्जर वित्तीय संस्था LIC Housing Finance Ltd. से ऋण ले रही है, सर्वसाधारण को उक्त सम्पत्ति के विधिक वारिसान, मालीकाना हक स्वामित्व, कब्जे व अधिकार पर कोई आपत्ति हो तो पन्द्रह दिवस में लिखित में मय दस्तावेज सूचित करें, अन्यथा आपत्ति शून्य, अप्रभावी व अमान्य समझी जावेगी।

दिनांक : 03.07.2025 for SRM PARTNERS, KOTA
Off. No. 127, Santwani Sadan,
Ballabh Bari, Kota Mob. 7737426847

आम सूचना

मेरे पक्षकार मास रूरल हाउसिंग एण्ड मोरगेज फाईनेन्स लिमिटेड की ओर से सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि गुरदेव सिंह दलबीर सिंह गिल द्वारा अपने स्वामित्व के फ्लेट नम्बर 201 सेकण्ड फ्लोर, वाके प्लाट नम्बर 119, सिंधी कॉलोनी, गुमानपुरा कोटा (राज.) पर मेरे पक्षकार के यहां से ऋण लिया जा रहा है। उक्त सम्पत्ति सुगनामल जी को भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ रिहेविलेटशन से प्राप्त हुई थी जिसका क्षेत्रफल 2000 वर्गफुट था, सुगनामल की मृत्यु के उपरान्त उनके पुत्र जेठानन्द व वासुदेव ने उक्त सम्पत्ति का गोविन्द हेमराजानी को विक्रय कर दी थी जिसका विक्रय पत्र का पंजीयन दिनांक 07.08.2013 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 1207 पृष्ठ संख्या 102 क्रमांक 2013012399 पर हो रहा है। गोविन्द हेमराजानी ने उक्त सम्पत्ति पर 8 फ्लेट्स का निर्माण किया तथा द्वितीय फ्लोर पर एक फ्लेट के विक्रय करने के लिये मुख्तार नामा हीरालाल को दिनांक 05.05.2015 को दिया उक्त मुख्तार नामे के आधार पर हीरालाल ने उक्त फ्लेट बोबी को जरिये विक्रय पत्र बेचान किया जिसका विक्रय पत्र का पंजीयन दिनांक 07.06.2022 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 1605 पृष्ठ संख्या 137 क्रमांक 202203123108842 पर हो रहा है। तत्पश्चात बोबी द्वारा उक्त फ्लेट को बिना छत के अधिकार के गुरदेव सिंह दलबीर सिंह गिल को बेचान किया जिसका विक्रय पत्र का पंजीयन दिनांक 16.06.2024 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 1827 पृष्ठ संख्या 30 क्रमांक 202403123110021 पर हो रहा है। उक्त ऋण बाबत किसी भी व्यक्ति, बैंक या संस्था या अन्य किसी को भी किसी भी प्रकार की आपत्ति या आक्षेप हो तो निम्न अधोहस्ताक्षरकर्ता को अंदर मियाद 07 दिवस में मय दस्तावेजी साक्ष्य सहित सम्पर्क करें अन्यथा बाद गुजरने मियाद किसी भी प्रकार की आपत्ति विधि अनुसार शून्य मानी जावेगी।

दिनांक: 03.07.2025 भवदीय
राजेन्द्र सिंह एडवोकेट
386, माला रोड़, कोटा जं.

सार-समाचार

कांग्रेस पार्षदों व प्रत्याशियों की बैठक आज

रामगंजमंडी, (निसं)। शहर में नगर पालिका के पास शुक्रवार को कांग्रेस पार्षदों एवं पार्षद प्रत्याशियों की एक बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक नगर कांग्रेस अध्यक्ष पवन बाबेल, पूर्व पालिका अध्यक्ष विजय गौतम एवं पूर्व पालिका उपाध्यक्ष रमेश मीणा के नेतृत्व में दोपहर 1 बजे आयोजित होगी। बैठक में नगर पालिका क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में व्याप्त समस्याओं पर चर्चा की जाएगी। खासकर जलभराव, सफाई व्यवस्था, सड़कों की स्थिति और नालों की सफाई जैसे मुद्दों पर विचार किया जाएगा। बैठक के बाद पालिका अधिशासी अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर इन समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग की जाएगी।

तलवंडी डिस्पेंसरी में योगा मेट्स भेंट की

कोटा, (निसं)। जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. नरेन्द्र नागर ने बताया कि आयुष्मान आरोग्य मंदिर शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी) तलवंडी पर योगाभ्यास हेतु क्षेत्र की समाज सेविका अनीता अग्रवाल ने योगा मेट्स (चटाईयां) भेंट की है। डॉ दिपेश तिवारी ने बताया कि स्वस्थ जीवन शैली में योग का महत्वपूर्ण योगदान है। आयुष्मान भारत योजनान्तर्गत तलवंडी डिस्पेंसरी में महीने में 10 दिन योग सत्र आयोजित किए जा रहे है। इस अवसर पर ब्लॉक हेल्थ सुपरवाइजर ईश्वर श्रृंगी, राहुल गुप्ता, प्रतिभा शर्मा, रघुनंदन सेन, नागेश मीणा, पूजा राव, राजेश्वरी राठौड़ सहित स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांक:-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2025/4477 दिनांक: 3.7.25

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री दया कृष्ण गुप्ता पुत्र स्व. श्री मोती लाल गुप्ता निवासी भूखंड संख्या 690/2 दादाबाड़ी एल.आई.जी.एच. कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या 690/2 दादाबाड़ी एल.आई.जी.एच. कोटा क्षेत्रफल 1800 वर्गफुट का स्वामित्व स्वयं के नाम हस्तांतरण करने का निवेदन किया है। भूखंड संख्या 690/2 दादाबाड़ी एल.आई.जी.एच. कोटा क्षेत्रफल 1800 वर्गफुट का 99 वर्षीय पट्टेदारी पर विक्रय (नीलाम) कार्यालय नगर विकास न्यास कोटा द्वारा पत्र क्रमांक विक्रय/79/327 दिनांक 03.11.1979 से श्री मोती लाल गुप्ता पुत्र श्री मूल चन्द गुप्ता को किया गया। श्री मोती लाल गुप्ता ने जर्ये रजिस्टर्ड वसीयतनामा दिनांक 09.12.2015 से उक्त भूखंड की वसीयत श्री दया कृष्ण गुप्ता पुत्र श्री मोती लाल गुप्ता के नाम कर दी। श्री मोती लाल गुप्ता का देहावसान दिनांक 23.05.2025 को हो जाने के उपरांत आवेदक श्री दया कृष्ण गुप्ता पुत्र स्व. श्री मोती लाल गुप्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी नगरपरिषद क्षैत्र, झालावाड़ (आयुक्त न.परि. झालावाड़)

क्रमांक: भूमि रुपांतरण/2025/2191 **लोक सूचना** दिनांक: 27.6.25

आवेदक श्री लखन लाल पुत्र श्री किशन जाति भील निवासी 2 छापर के कुऐ के पास दुर्गपुरा तह. झालरापाटन जिला झालावाड़ ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित कृषि भूमि का गैर-कृषिक आवासीय प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात-

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नं.	क्षेत्रफल
जिला झालावाड़ तहसील झालरापाटन	राजस्व ग्राम रायपुर	35	0.0506 हेक्टेयर
		463/36	0.0506 हेक्टेयर
		कुल किता 2	0.1012 हेक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिये भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा कर दिया जावेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक.........को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी नगरपरिषद क्षैत्र झालावाड़
(आयुक्त नगरपरिषद झालावाड़)

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक:-एफ-15/कृ.भू.रू./2025/680 **विज्ञप्ति** दिनांक:-3.7.2025

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम नयागांव में स्थित कृषि भूमि योजना महेश नगर भूखंड संख्या 27 खसरा नं. 102 आवेदक/आवेदिका श्रीमती हेमलता शर्मा पत्नी श्री महेश कुमार शर्मा निवासी चामुंडा कालोनी वार्ड नं. 3 केशोरायपाटन जिला बून्दी राज. द्वारा ऑनलाईन नाम हस्तान्तरण हेतु प्राधिकरण कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखंड का पट्टा क्रमांक 881 दिनांक 19.07.2013 को श्रीमती प्रभा जायसवाल पत्नी श्री ए.के. जायसवाल के पक्ष में जारी किया गया था। पट्टाधारी द्वारा उक्त भूखंड का बैचान जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 02.05.2025 को जर्ये मुख्तारआम श्री जयंत जैसवाल श्री अरविन्द कुमार जायसवाल द्वारा आवेदिका के पक्ष में किया गया है।

अतः श्रीमती हेमलता शर्मा पत्नी श्री महेश कुमार शर्मा के पक्ष में नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक:-एफ11 विक्रय/2025/189 दिनांक:-3.7.25

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

कोटा विकास प्राधिकरण कोटा द्वारा भूखंड संख्या 52 चाणक्यपुरी आवासीय योजना में आवंटन पत्र क्रमांक 241 दिनांक 06.10.2003 को श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा पुत्र श्री प्रभू लाल शर्मा के नाम आवंटन किया गया था। श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा पुत्र श्री प्रभू लाल शर्मा द्वारा उक्त भूखंड का जर्ये मुख्तारआम श्री हरि ओम गुप्ता पुत्र श्री राम प्रताप गुप्ता द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 30.05.2025 को श्रीमती चेतन गुप्ता पत्नी श्री राम प्रताप गुप्ता को विक्रय कर दिया गया है। अतः श्रीमती चेतन गुप्ता पत्नी श्री राम प्रताप गुप्ता द्वारा उक्त भूखंड का स्वामित्व अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त भूखंड संख्या 52 चाणक्यपुरी आवासीय योजना का नाम हस्तान्तरण श्रीमती चेतन गुप्ता पत्नी श्री राम प्रताप गुप्ता के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

सात दिवसीय भागवत कथा का शुभारंभ

कोटा, (निसं)। श्री रामधाम सेवा आश्रम ट्रस्ट द्वारा गुरू पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से श्रद्धाभाव के साथ मनाया जाएगा। गुरूवार को पत्रकार वार्ता के दौरान बड़ा भक्तमाल अयोध्याजी के पीठाधीश्वर एवं श्री रामधाम सेवा आश्रम के संस्थापक अवधेश कुमाराचार्य महाराज ने बताया कि गुरू पूर्णिमा महोत्सव के अन्तर्गत आश्रम पर सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का गुरूवार से भव्य शुभारंभ हुआ। कथा में कथा व्यास डॉ.राजेश मिश्रा द्वारा प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से सायं 6 बजे तक भागवत कथा का गुणगान किया जाएगा। इस दौरान गणमान्य प्रबुद्धजनों द्वारा कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की श्रृंखला में शुक्रवार को भक्तमाल वेद विद्यालय के बटुकों का यज्ञोपवित संस्कार होगा। जिसमें सुबह 6 बजे भद्र, सुबह 8 बजे जनेऊ संस्कार और हवन के तत्पश्चात सुबह 8 बजे से दोपहर 12 बजे से यज्ञोपवीत संस्कार होगा। यज्ञोपवती संस्कार में बटुकों को उनके परिजनों माता-पिता, मामा, नाना-नानी आदि आर्शीवाद प्रदान करेंगे। कार्यक्रम के तहत चार जुलाई को भागवत कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाएगा। सात जुलाई सोमवार को गोवर्धन पूजन, 8 जुलाई मंगलवार को रूकमणी विवाह, 9 जुलाई को सुदामा चरित्र एवं कथा विश्राम होगा। एवं 10 जुलाई को गुरू पूजन एवं विशाल आम भण्डारे के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। रामधाम सेवा आश्रम ट्रस्ट के मुख्य पुजारी लक्ष्मणदास महाराज ने बताया कि इस मौके पर प्रतिदिन महाराज के नित्य दर्शन व आर्शीवचन प्राप्त होंगे। पत्रकार वार्ता के दौरान पूर्व महापौर सुमन श्रृंगी, समाजसेवी रमेश गुप्ता समेत अन्य प्रबुद्धजन मौजूद रहे।

कथा से समाज को दिशा व संस्कार मिलते हैं:- बड़ा भक्तमाल अयोध्याजी के पीठाधीश्वर एवं श्री रामधाम सेवा आश्रम के संस्थापक अवधेश कुमाराचार्य महाराज ने कहा कि आत्मकल्याण के लिए कथा आवश्यक है। समाज में जो विकृति चल रही है उसका समाधान कथाओं के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने कथावाचक किसी भी जाति समाज का हो सकता है, लेकिन उसे वेद, पुराणों व शास्त्रों के अनुरूप ज्ञान और जीवन अनुशासित होना चाहिऐं। जाति व्यवस्था तो सामाजिक व्यवस्था के लिए है, बाकी व्यक्ति कर्म से ही पूजा जाता है। उन्होंने कहा कि ज्ञान और कौशल से ही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है, जिस प्रकार आईएएस, आईपीएस और डॉक्टर बनने के लिए परीक्षा पास करनी पड़ती है, उसी के अनुरूप कथावाचक बनने के लिए शास्त्रों का ज्ञान आवश्यक है।

जालोर में मूसलाधार बारिश, नदी-नालों में पानी आने से कई गांवों का संपर्क टूटा

बारिश के चलते खेतों में पानी भरा, रोपसी नदी में कार बहने से चालक को लोगों ने बचाया

जालोर, (कासं)। जालोर जिले में मानसून की सक्रियता के चलते गुरुवार को मूसलाधार बारिश से नदी-नालो में पानी की आवक देखी गई। तेज बारिश के चलते खेतों में भी पानी भरा नजर आया। रोपसी नदी में ईको कार चालक बहने से लोगों ने सूझबूझ से बड़ी मशक्कत से उसे बचाया। जालोर में तेज बारिश के चलते कई जगह पानी भर जाने से आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं तेज बारिश के चलते भेटाला सहित कई गांवों के नदी-नालों में पानी आने से अन्य गांवों से सम्पर्क टूट गया। तेज बारिश के चलते कई स्कूलों में पानी भर जाने से विद्यार्थियों को भी काफी परेशानी हुई।

जालोर के निकट रोपसी नदी में बह रहे कार चालक को लोगों ने बाहर निकाला

- जालोर के वणधर, बांडी सिणधरा, सरदारगढ सहित जिले के कई बांधों व नदी में पानी का बहाव देखा गया
- तेज बारिश के चलते कई स्कूलों में पानी भर जाने से विद्यार्थियों को परेशानी हुई

जालोर में गत दो दिन से मानसून बारिश होने से जिले के नदी नालों में पानी बहता नजर आया। जालोर के निकट भीनमाल स्थित रोपसी नदी में पानी आने से एक ईको कार चालक ने उसमें ईको कार नदी से नदी पार करने लगा। इस दौरान पानी का तेज बहाव होने से कार नदी में बहने लगी। मौके पर खड़े पुलिसकर्मी ने ग्रामीणों की सहायता से कार चालक को कड़ी मशक्कत से बाहर निकाला गया। वहीं जालोर के वणधर, बांडी सिणधरा, सरदारगढ़ सहित जिले के कई बांधों व नदी में पानी का बहाव देखा गया। गुरुवार को तेज बारिश के चलते जालोर शहर के तिलकद्वार, लाल पोल व बड़ी पोल से पानी तेज गति से बहता नजर आया। वहीं शहर के निचले इलाके इन्द्रानगर, एफसीआई गोदाम, शिवाजी नगर सहित कई कॉलोनियों में पानी भर गया। कलेक्ट्रेट रोड पर पानी की निकासी नहीं होने से बारिश का पानी कलैक्ट्रेट व कोर्ट कैम्पस में आने से कलेक्ट्रेट व कोर्ट कैम्पस तालाब में तब्दील नजर आया। तिलकद्वार में पानी के तेज बहाव के चलते कई वाहन भी बहते नजर आये। जालोर में मूसलाधार बारिश के चलते रोडवेज बस स्टेण्ड में भी पानी भर जाने से यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं पंचायत समिति से बस स्टेण्ड पर भी निकासी नहीं होने से रोड पर पानी जमा होने से लोगों को काफी परेशानी उठानी पड़ी।

ई-केवाईसी बिना आयोग की भर्ती परीक्षाओं में आवेदन नहीं होंगे

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षाओं में आवेदन करने के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन में आधार/जन आधार नंबर अपडेट करना आवश्यक कर दिया गया है। ई-केवाईसी के बिना आगामी भर्ती परीक्षाओं के लिए आवेदन नहीं किए जा सकेंगे।

आयोग सचिव ने बताया कि कार्मिक विभाग द्वारा जारी नोटिफिकेशन बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन की अनुमति के क्रम में, स्टेट रिक्रूटमेंट पोर्टल के माध्यम से किसी भी भर्ती में आवेदन करने के लिए केवाईसी प्रक्रिया पूरी करना अनिवार्य है। इसीलिए आयोग द्वारा 7 जुलाई 2025 से आधार/जन आधार के माध्यम से ओटीआर ई-केवाईसी करने का अवसर अभ्यर्थियों को दिया जा रहा है। केवाईसी पूर्ण नहीं करने वाले

- वन टाइम रजिस्ट्रेशन में आधार/जन आधार नंबर अपडेट करना आवश्यक किया

अभ्यर्थी ऑनलाइन भर्ती आवेदन सब्मिट नहीं कर पाएंगे। इसलिए अभ्यर्थी वर्तमान में चल रही या भविष्य की भर्ती प्रक्रियाओं दौरान किसी भी असुविधा से बचने के लिए अपने ओटीआर केवाईसी को समय पर पूर्ण करना सुनिश्चित करें। सभी उम्मीदवारों को भर्ती-संबंधी गतिविधियों के लिए पात्र होने हेतु अपना केवाईसी आवश्यक रूप से पूरा करना होगा।

आयोग सचिव ने बताया कि वर्तमान में वन टाइम रजिस्ट्रेशन (ओटीआर) में 69 लाख 58 हजार 433 अभ्यर्थी रजिस्टर्ड हैं। इनमें से आधार नंबर द्वारा सत्यापित 37 लाख 53 हजार 302 तथा जन आधार के माध्यम से सत्यापित 21 लाख 70 हजार 830 अभ्यर्थी ही हैं। शेष 10 लाख 34 हजार 301 अभ्यर्थियों ने एसएसओ आईडी के माध्यम से वन टाइम रजिस्ट्रेशन करवाया है। आयोग द्वारा विभिन्न ओटीआर प्रोफाइल की जांच में यह सामने आया है कि कई अभ्यर्थियों द्वारा एक से अधिक प्रोफाइल विभिन्न एसएसओ आईडी के माध्यम से बनाए हुए हैं। ऐसे में दोहरीकरण को रोकने तथा अभ्यर्थी की पहचान सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि अभ्यर्थी एसएसओ आईडी द्वारा बनाए गए अपने ओटीआर प्रोफाइल को आधार अथवा जन आधार द्वारा ई-केवाईसी के माध्यम से सत्यापित करे।

ट्रक में आग लगने से दो जने जिंदा जले

दूदू, (निसं)। जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर गुरुवार की तड़के दूदू से एक किलोमीटर दूर जयपुर की ओर होटल के सामने दो ट्रकों में टक्कर हो जाने के बाद लगी आग के साथ ट्रक जलकर राख हो गया तथा कैबिन में फंसने से जल जाने से दो जनों की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार प्रातः करीब 3:30 बजे दो ट्रकों में भिड़ंत के बाद धमाके की आवाज आई। साथ ही ट्रक में आग लगना शुरू हो गई। आग लगने की सूचना पुलिस थाना दूदू में मिलने के साथ ही उप पुलिस अधीक्षक दीपक खंडेलवाल एवं थाना निरीक्षक मुकेश कुमार खराडिया मय पुलिस जाब्ते मौके पर पहुंचे तथा वाहनों को रुकवाया जाकर यातायात की व्यवस्था को संभाला गया। इस दौरान वाहनों की राष्ट्रीय राजमार्ग पर लंबी कतारें दोनों तरफ लग गई। पुलिस ने मौके पर दमकल वाहनों को बुलाया जाकर करीब एक घंटे बाद आग पर काबू पाया। साथ ही केबिन में फंसे चालकों को पुलिसकर्मियों अन्य वाहन चालकों ग्रामीणों के सहयोग से काफी मशक्कत के बाद बाहर निकला गया। मृतकों की शिनाख्त जगदीश जाट (62) साल निवासी बिलोदा चित्तौड़गढ़,पंकज कुमार निवासी प्रतापगढ़ के रूप में हुई। बाद में परिजनों को सूचित किया जाकर शवों को दूदू मुर्दाघर में रखवा दिया गया। ट्रक अजमेर से जयपुर की ओर जा रहे थे। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने बताया कि दमकल के अभाव में दो जनों की मौत हो गई।

Office Of Superintending Engineer
PHED Circle Jhalawar (Rajasthan)
NOTICE INVITING Bid No. 12/2025-26 Item No. 1 and 2

Bids for Work of Augmentation of RWSS SARDA, Gram Panchayat SARDA Panchayat Samiti Aklera & KOLUKHERI KALAN, Gram Panchayat KOLUKHERI KALAN Panchayat Samiti Manoharthana of Sub division Aklera to provide FHTC including one year Defect Liability period under JJM in the jurisdiction of PHED Division Jhalawar District Jhalawar on risk and cost basis. Are invited from interested bidder's upto 10.07.2025 at 18.00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the www.dipr.rajasthan.gov.in, http://rajwater.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and http://eproc.rajasthan.gov.in. Departmental websites.
NIB No. PHE2526A1977
UBN No. PHE2526WSOB04070, PHE2526WSOB04073

Superintending Engineer
PHED Circle Jhalawar
DIPR/C/8795/2025

Office of The Superintending Engineer,
Water Resources Circle, Kota
क्रमांक-SE/WRC/e-NIB-03/2025-26/3193-3233 दिनांक-26/06/2025
e-NIB No.- 03/2025-26

On behalf of the Governor of Rajasthan, e-Tenders are invited from eligible contractors for the work for Item No 01 Safety measures works Protection Wall of Brijnath mandir Village Barod Which is Affected due to Submergence of Navnera Barrage Project across River Kalisindh Distt. Kota (Est. cost Rs. 159.88 Lacs) for the period for 12 Months including Rainy season, Item No 02 Construction of CC Road from Brijnath Temple near the access provided Toll Plaza Barod Village under Submergence Area under Navnera Barrage Project across river Kalisindh Distt. Kota. (Est. cost Rs. 86.16 Lacs) for the period for 9 Months including Rainy season from interested bidders from 27.06.2025 (9:30 Hr) to 07.07.2025 till 18:00 Hr. Other particulars, terms & conditions may be seen on the procurement portal Htpps://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in & www.waterrajasthan.gov.in.
UBN No.-WRD2526WSOB00564, WRD2526WSOB00565, NIB Code- WRD2526A0199

(R.K.Jaimmy)
Superintending Engineer
Water Resources Circle, Kota
DIPR/C/9021/2025

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER
PWD CIRCLE BEAWAR
NIB NO.:- PWD2526A1569-PWD2526A1573
Notice Inviting Bid No. 09/2025-26

Bids for 05 No. Works are invited from interested bidders upto 12.00 PM 08 July 2025. Othe particular of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.ir http://sppp.raj.nic.in) of the State, and DIPR departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 292.72Lacs.

S No.	NIB NO	UBIN NO	Amount (Lac)
1	PWD2526A1569	PWD2526WSOB05500	78.05
2	PWD2526A1570	PWD2526WSOB05501	39.02
3	PWD2526A1571	PWD2526WSOB05502	58.55
4	PWD2526A1572	PWD2526WSOB05503	58.55
5	PWD2526A1573	PWD2526WSOB05504	58.55

Superintending Engineer
PWD, Circle Beawar.
DIPR/C/8864/2025

पाली के रायपुर और देसूरी में आठ इंच बारिश

बरसात होने से सड़कों पर पानी भरने लोगों को परेशानी हुई।

पाली, (नि.सं.)। पाली जिले में पिछले दो दिनों से जमकर बारिश चल रही है। रायपुर और देसूरी में आठ इंच बारिश हुई, जिससे क्षेत्र की नदियां बहने लगी।

जानकारी के अनुसार सोजत राणावास क्षेत्र में भी गुरुवार को जमकर बारिश हुई, जिससे बांधों में पानी की आवक शुरू हुई। पाली शहर में रिमझिम बारिश के बाद सुबह करीब 10 बजे एक घंटे तक जोरदार बारिश होने से सड़कें लबालब हो गई। पाली शहर की आदर्श नगर, लोढ़ा स्कूल रोड, नेशनल पार्क ग्रीन पार्क, रामदेव रोड मंडिया रोड सड़कों पर करीब आधा फीट से ज्यादा पानी भर गया। ऐसे में वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

हलेड में घरों में घुसे बरसाती पानी से लोगों में आक्रोश

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के निकटवर्ती हलेड गांव में घरों में घुसे बरसाती पानी से आक्रोशित लोगों ने सरपंच पति और भाजपा नेता के साथ मारपीट कर दी। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद हड़कंप मच गया।

भीलवाड़ा शहर के निकटवर्ती हलेड गांव में सरपंच पति बालूलाल आचार्य के साथ ग्रामीणों ने मारपीट कर दी। मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा में बुधवार को करीब 9 इंच बारिश दर्ज की गई थी। एक दिन में रिकॉर्ड तोड़ बारिश ने कई गांवों और शहर की कई कॉलोनियों को जलमग्न कर दिया था। इस बारिश में प्रशासनिक दावों की भी पोल खोल कर रख दी। ना शहर ना गांव हर जगह गंदगी के अंबार लगे हुए हैं और नालियों के अटे पड़े होने के कारण बरसाती पानी घरों में घुस रहा है। हलेड गांव में भी कुछ ऐसा ही हुआ जब स्थानीय सरपंच की लापरवाहियों के चलते गांव में सफाई व्यवस्था माकूल नहीं हो पाई और बरसात का पानी ग्रामीणों के घर में घुस आया। शिकायतों के बाद जब सरपंच पति बालू लाल आचार्य ग्रामीणों के बीच पहुंचे तो नोकझोक देखते ही देखते मारपीट में बदल गई और आक्रोशित भीड़ ने सरपंच पति आचार्य के साथ जमकर मारपीट कर दी।

आकाशीय बिजली गिरने से महिला झुलसी : भीलवाड़ाजिले के शाहपुरा थाना क्षेत्र के खामोर ग्राम पंचायत का राजस्व गांव बहका खेड़ा में बुधवार सुबह घर से गाय, भैंस लेकर खेत पर गई महिला पर आकाशीय बिजली गिर गई। इससे महिला बुरी तरह से झुलस गई, वहीं बिजली गिरने से एक भैंस की भी मौत हो गई। महिला के पति रामकिशन कुमावत ने बताया कि बुधवार दोपहर की बारिश के बाद शाम को जब सारे गोवंश घर पर लौट आए और एक भैंस व उसकी पत्नी घर नही लौटी तो वह खेत पर गया और रास्ते में देखा तो उसकी पत्नी विमला देवी (40) वर्ष बदहाल स्थिति में सड़क पर झुलसी हुई पड़ी हुई थी।

राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद्
(ग्रामीण विकास विभाग)
F8(15)RD/RGAVP/Job Basis/2025/5000 Dated :- 02/07/2025
NOTICE INVITING BID

Bids for the Hiring agency to provide Job Basis Support Staff to RGAVP (SPMU) for RGAVP, (For Two Year) are invited from interested bidders up to 16.07.2025 ,03.00 P.M (time) in offline method. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) of the state; and http://www.rajeevika.rajasthan.gov.in. The approximate value of the procurement is Rs 70,00,000/-
UBN :- RGA2526A0063
NIB :- RGA2526SLOBC00085

Project Director (Admin),
RGAVP
Raj.Samwad/C/25/5493

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, P.W.D. DN. KOTRA
No. :-250 Date: 19.06.2025
Notice Invision Bid No. 05/2025-26
NIB No.: PWD2526A1529

Bids for Various works are invited from interested bidders upto 23.06.2025 9.00 AM to 07.07.2025 06.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal ("http://eproc.rajasthan.gov.in" and "http://sppp.rajasthan.gov.in") of the state, and department website. The approximate value of procurement of 3 Works is Rs. 282.37 Lacs.
UBN No :-
1. PWD2526WSOB05316, 2. PWD2526WSOB05318, 3. PWD2526WSOB05319

(KAPIL KUMAR AWASTHY)
EXECUTIVE ENGINEER
P.W.D. Dn. KOTRA
DIPR/C/9014/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड-करौली
क्रमांक-Rajkaj-1325-1345 दिनांक-24.06.2025
ई-निविदा सूचना संख्या-06/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनो / केन्द्रीय लोक निर्माण/ डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि के पंजीकृत संवेदको जो कि राज्य सरकार के ए ए वी सीडी श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदाओ से संबंधित विवरण वेवसाईट www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
NIB CODE-PWD2526A1596

Sr.No.	UBN No.	Sr.No.	UBN No.
1	PWD2526WSOB05596	3	PWD2526WSOB05602
2	PWD2526WSOB05598	4	PWD2526WSOB05609

(चन्द्र प्रकाश)
अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड करौली
DIPR/C/9004/2025

Zila Parishad Bikaner
Office of the Additional Chief Engineer & Project Manager
Watershed Development & Soil Conservation
S. No. :- F.(WCDC)/PMKSY 2.0/BID/2025-26/833-38 Date :- 25/06/2025
NOTICE INVITING BID

On the behalf of Governor of Rajasthan, bids for the execution of Construction of 03 EPA works and 86 NRM Works under PMKSY 2.0 Projects of estimated value as mentioned below are invited from interested bidders up to 07.07.2025, 06.00 PM and 14.07.2025, 06.00 PM respectively. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in) of the state, and www.watershed.rajasthan.gov.in departmental website. NIB No. WSC2526A0379

Bid No.	Block	Estimated Cost (Rs. in lakhs)	UBN No.
24	Bikaner	36.27	WSC2526WSOB00630
25	Bikaner	297.92	WSC2526WSOB00631

Raj.Samwad/C/25/5495 ACE & PM WCDC, Zila Parishad, Bikaner

THE RAJASTHAN SMALL INDUSTRIES CORPORATION LTD.
(A Government of Rajasthan Undertaking), Udyog Bhawan, Tilak Marg, C-Scheme, Jaipur-302005 Phone: 0141-2227079, CIN: U91110RJ1961SGC001118
E-Tender Notice
E-tender BID Invitation Notice
Supply of Steel Furniture item

RSIC is inviting online competitive BIDS from MSME/ SSI Units who are registered from Industries Department, Government of Rajasthan for supply of Stainless Steel Bench items to the Government of Rajasthan Departments, PSUs, etc. rate contract for the period of two year. The Tender/Bid shall only be submitted through online tendering system of eproc.rajasthan.gov.in. Last date of submission of online bids 15.7.2025 till 1.00 PM

For further details visit our website: industries.rajasthan.gov.in/rsicl or sppp.rajasthan.gov.in or contact: Marketing section on 9214009956
UBN No. : RSI2526GLRC00010

Managing Director
Raj.Samwad/C/25/5487

भोजासर थाने का कांस्टेबल खेत में तड़पता मिला, मौत

मिट्टी से सना था शरीर, हॉस्पिटल ले जाते कांस्टेबल ने दम तोड़ा

जोधपुर, (कासं)। फलोदी जिले के भोजासर थाने में तैनात एक कांस्टेबल की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। कांस्टेबल थाने से 30 किलोमीटर दूर पलीना गांव में सूने इलाके में पड़ा मिला, जिस समय लोगों ने उसे देखा, तब कांस्टेबल की सांसें चल रही थी, लेकिन फलोदी हॉस्पिटल ले जाते समय उसने दम तोड़ दिया। कांस्टेबल का शरीर मिट्टी से सना था। अभी तक मौत के कारणों का पता नहीं चल पाया है।

पुलिस ने बताया ने गुरुवार सुबह करीब आठ बजे लोहावट थाना क्षेत्र के पलीना गांव से दो किलोमीटर दूर एक सुनसान इलाके में जांबा निवासी और भोजासर थाने में तैनात कांस्टेबल शैतानराम (35) पुत्र जोराराम पड़ा मिला। कांस्टेबल की उस समय सांसें चल रही थी। कांस्टेबल ने केवल पैंट पहनी हुई थी। पैंट और शरीर मिट्टी से सना था। पास ही में कांस्टेबल का मोबाइल पड़ा मिला। कांस्टेबल का शर्ट-टीशर्ट और चप्पल-जूते आसपास कहीं नहीं मिले।

- कांस्टेबल का शर्ट-टीशर्ट और चप्पल-जूते आसपास कहीं नहीं मिले

लोगों ने इसकी सूचना पुलिस और 108 एंबुलेंस को दी। पुलिस के पहुंचने से पहले ही एंबुलेंस से कांस्टेबल को फलोदी जिला अस्पताल के लिए रवाना किया गया, लेकिन रास्ते में कांस्टेबल की मौत हो गई। फलोदी थानाधिकारी महेंद्र दत्त शर्मा भी सूचना पर जिला अस्पताल पहुंचे और मामले की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि कांस्टेबल के पास एक क्रेटा कार है जो भोजासर थाने में खडी है। कांस्टेबल भोजासर से पलीना कैसे पहुंचा और उसकी ये हालत कैसे हुई। इसकी जांच कर रहे हैं। कांस्टेबल शैतानाराम रात करीब बारह बजे तक थाने में स्टाफ के साथ था। देर रात वो किस साधन से और किसके साथ थाने से निकला, उसका कोई पता नहीं चल रहा है। उसकी गाड़ी भी थाने में ही पड़ी मिली। सूचना मिलने पर पुलिस के आला अधिकारी और परिजन भी फलोदी अस्पताल पहुंचे। शैतान राम का परिवार श्रीराम नगर की ढाणी जांबा का रहने वाला है।

कांस्टेबल के पिता जोराराम सेवानिवृत्त अध्यापक हैं। शैतानराम सहित तीन भाई और एक बहन है। उसका बड़ा भाई गिरधारी लाल भी पुलिस कांस्टेबल है और वर्तमान में दूदू में पोस्टेड है। दूसरा वह स्वयं था। तीसरा भाई मनफूल प्राइवेट जॉब करता है। शैतान राम वर्ष 2013 में पुलिस में भर्ती हुआ था। शैतानराम शादीशुदा था। उसके पांच और सात साल के दो बेटे है।

अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, ग्रामीण खण्ड सलूम्बर, जिला सलूम्बर
Phone: 8279108453, Email:- eephedsalumberjjm@gmail.com
क्रमांकः 1260-1286 दिनांकः 23.06.25
निविदा सूचना संख्या 32/25-26 से 34/25-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से खण्ड सलूम्बर, जिला सलूम्बर के अधीन विभिन्न जल योजनाओं पर स्वीकृत निर्माण कार्य मय मेटेरियल के निविदा सूचना संख्या 32/25-26 से 34/25-26 का राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों को ई-प्रोक्यूमेन्ट के माध्यम से निविदायें आमंत्रित की जाती है।
उक्त सभी निविदाओं से संबंधित विस्तृत विवरण वैबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.dipr.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। उपरोक्त निविदाओं का प्रकाशन sppp.rajasthan.gov.in निम्नानुसार कर दिया गया है:-

क्र.सं.	निविदा संख्या	आई.डी.नम्बर	अपलोड की दिनांक
01	32/25-26	UBNPHE2526WSRC03968	23.06.2025
02	33/25-26	UBNPHE2526WSRC03969	23.06.2025
03	34/25-26	UBNPHE2526WSRC03970	23.06.2025

अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग,
ग्रामीण खण्ड सलूम्बर, जिला सलूम्बर
DIPR/C/8763/2025

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग वृत अजमेर
International Year of Cooperatives 2025
लोहाखान टेम्पो स्टेण्ड के पास, अजमेर
दूरभाष नम्बर 0145-2970165, E-Mail Address: Seajmer@ yahoo.com
क्रमांकः अधी/वृत/अंके-जि.ग्रा./2025-26/4273-75 दिनांक-20/6/2025
निविदा सूचना (NIB No. 05/2025-26)

राजस्थान के राज्यपाल की और से निम्नहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निविदा संख्या 05/2025-26 पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से ऑनलाईन सिस्टम ई-प्रोक्यूरमेंट वेबसाईट पर आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा की अनुमानित लागत राशि रूपये 132.12 लाख है।
विस्तृत निविदा सूचना जन सम्पर्क निदेशालय की वेबसाईट पर तथा निविदा प्रपत्र वेबसाईट एसओपीओपीओ, राजस्थान तथा ई-प्रोक्यरमेंट वेबसाईट से दिनांक 20.06.2025 से दिनांक 07.07.2025 को सायं 06:00 बजे तक डाउनलोड एवं इसी समय तक बिड प्रस्तुत की जा सकती है। निविदा की तकनीकी बिड दिनांक 08.07.2025 को प्रातः 11:00 बजे खोली जायेगी।
उक्त निविदा सूचना का प्रकाशन वेबसाईट एस.पी.पी.पी पर आई.डी कमांक PHE2526A1876 तथा निविदा प्रपत्रों का प्रकाशन यू.बी.एन नम्बर PHE2526WSOB03905 से किया गया है।

(रामचन्द्र राड़)
अधीक्षण अभियन्ता जन स्वास्थ्य
अभियांत्रिकी विभाग वृत-अजमेर
DIPR/C/8695/2025

खैरथल-किशनगढ़ बास मार्ग पर बस सेवा नहीं

किशनगढ़ बास और खैरथल से रोजाना सैकड़ों लोग रोजगार के लिए आते-जाते हैं

किशनगढ़ बास, (निसं)। खैरथल-तिजारा जिला मुख्यालय से करीब किशनगढ़ बास उपखंड की दूरी 10 किलोमीटर है और इस बीच लोगों को यात्रा करने के लिए एक भी शटल बस सेवा नहीं जो रोडवेज बस किशनगढ़ बास और खैरथल के बीच चल रही थी उन्हें भी पिछले कुछ समय से बंद कर रखा है। जबकि किशनगढ़ बास और खैरथल से रोजाना सैकड़ों लोग रोजगार के लिए आते जाते हैं।

किशनगढ़ बास के नजदीक रेलवे स्टेशन है, देश की प्रमुख अनाज मंडियों में खैरथल का नाम आता है। अब तो 2 साल से खैरथल जिला मुख्यालय है जहां पर जिला कलेक्टर, एस पी सहित बड़े जिला स्तरीय अधिकारी बैठते हैं। इन सब के लिए लोगों को आना जाना पड़ता है। खैरथल औद्योगिक क्षेत्र भी है बड़ी-बड़ी कंपनियां काम कर रही है हजारों श्रमिक नौकरी करने के लिए गांवों से जाते हैं।

लोगों के लिए समस्या बड़ी है और नेताओं और अधिकारियों को इसलिए नजर नहीं आ रही है कि यात्रियों की आवश्यकताओं को खैरथल किशनगढ़ बास मार्ग पर चल रहे टेंपो पूरा कर रहे हैं। यह सही है कि यात्रियों का आवागमन हो रहा है लेकिन यात्री कितना जोखिम भरा टेंपो में सफर कर रहे हैं यह ना तो अधिकारियों को दिखाई पड़ रहा है और ना ही नेताओं को समझ में आ रहा है। टेंपो क्षमता से अधिक सवारियां भरकर चलने से कई बार हादसे हो चुके हैं। ऊपर नीचे जब तक सवारिया नहीं बैठतीं तब तक टेंपो स्टेंड से सरकते नहीं है। टेंपो चालक इस लिए भी मनमानी किए हुए हैं कि यात्रियों के पास टेंपो के अलावा और कोई सहारा भी नहीं है। चाहे फिर वह लटककर जाएं या फिर अंदर बेठकर क्योंकि कोई और साधन उनके पास नहीं है जिससे वह सुरक्षित यात्रा कर सके।

तिजारा डिपो प्रबंधक पवन कटारा से बात करने पर उन्होंने बताया कि खैरथल-किशनगढ़ बास रूट पर कोई शटल बस सेवा नहीं है। एक बस सुबह से दोपहर 12 बजे तक दो-तीन राउंड लगाकर बाद में दिल्ली जाती है। करीब दो-तीन महीने से यह बस भी स्टाफ की कमी के कारण बंद है। स्टाफ की कमी जैसे ही दूर होगी वैसे बस को शुरू कर दिया जाएगा।

कार्यालय उप वन संरक्षक, अजमेर
वन भवन, जयपुर रोड़, अजमेर दूरभाष संख्या- 0145-2429796 (ऑफिस) E-Mail-dcf.ajmer.forest@rajasthan.gov.in
क्रमांकः-एफ () गंगा भैरव घाटी / सवसं / 2025-26/6866 दिनांकः- 25/06/25
UBN No. FOR2526W50B00734
NIB Code No. FOR 2526A0577
ई-निविदा सूचना सं. 03/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्न वर्णित कार्यों हेतु सक्षम श्रेणी के पंजीकृत आईटी एक्ट अनुसार डिजिटल हस्ताक्षरधारी एवं जो निविदा प्रपत्रों में वांछित योग्यता रखते हो, ऐसे संवेदकों से ई टेण्डरिंग प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। यह निविदा सूचना www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा निविदा प्रपत्र www.eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड एवं अपलोड किये जा सकते है:-

क्र. सं.	कार्यस्थल का नाम	कार्य का विवरण (जी-शिड्यूल एवं एच-शिड्यूल अनुसार)	अनुमानित लागत (लाखों में)	बोली प्रतिभूति राशि रू. (अनुमानित 2 प्रतिशत)	बोली (निविदा) प्रपत्र शुल्क	प्रोसेसिंग फीस	कार्य पूर्णता अवधि
1	कार्य गंगा-भैरव घाटी कन्जर्वेशन रिजर्व	Grassland Development for Herbiyores Pre Base.	20.60	41200/-	1000/-	1000/-	60 दिवस
2	कार्य गंगा-भैरव घाटी कन्जर्वेशन रिजर्व	Petroling kachcha Track (Taragarh to Chamunda ji 1.5km) Petroling kachcha Track (Happy Valley to Taraghar 3.3km) Petroling kachcha Track (Taraghar Najul to Bhairav baba 2.5 km) Petroling kachchaTrack (Bhairav Baba to Chamunda Mata 4 km)	33.90	67800/-	1000/-	1000/-	60 दिवस
3	कार्य गंगा-भैरव घाटी कन्जर्वेशन रिजर्व	Construction of Forest guard chowki at BhairavGhati. Construction of Entry Gate at Ajaysar Budhwara. Booking window and administrative Block. Tourist Facility (Development of Rest Rooms) Parking Facility.. Construction of Entry Gate. Construction of Shelter. Construction of Food Storage Room.	65.50	131000/-	1000/-	1000/-	85 दिवस
		Total	120.00				

ई बोली (निविदा) डाउनलोड की जाने की तिथि एंव समय :- 24.06.2025 सांय 6.00 बजे से
ई बोली (निविदा) अपलोड करने की अन्तिम तिथि एंव समय :- 07.07.2025 सांय 6.00 बजे तक
ई बोली (निविदा तकनीकी एवं वित्तीय बिड़) खोली जाने की तिथि एंव समय :- 08.07.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक

बी.एस.आर. आईटमों की दरें Online BOQ में बीएसआर से कम अथवा अधिक के रूप में भरी जायेगी एवं नॉन बी.एस.आर. आईटमों की दरें प्रति आईटम की दर से भरनी होगी। अन्यथा सम्बन्धित फर्म की दरें निविदा में सम्मिलित नहीं की जायेगी।
उक्त ई-निविदा सूचना का प्रकाशन एक क्षेत्रीय दैनिक समाचार-पत्र एवं एक राज्य स्तरीय मुख्य दैनिक समाचार पत्र, जिसकी प्रकाशित प्रतियों की संख्या 50000 प्रतियों से अधिक हो, में आपके कार्यालय द्वारा अनुमोदित दरों पर शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कराने का कष्ट करावें।

(वीरेन्द्र सिंह जोरा)
उप वन संरक्षक, अजमेर
DIPR/C/8972/2025

संक्षिप्त

दुपहिया वाहन चुराने वाले चोरों को धर-दबोचा

जयपुर। मालपुरा गेट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले दो वाहन चोरों को धर-दबोचा है और उनके पास से चुराए गए पांच दुपहिया वाहन(बाइक)भी जब्त किए गए है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपियों के खिलाफ पहले भी अलग-अलग कई थानों में 41 मामले दर्ज है। इसमें से एक आरोपित देई जिला बूंदी का एचएस है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि मालपुरा गेट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले 27 वर्षीय राजु शर्मा निवासी देई जिला बूंदी हाल सांगानेर सदर जयपुर और 30 वर्षीय अजय धाकड निवासी बयाना जिला भरतपुर हाल मुहाना जयपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से चुराए गए पांच दुपहिया वाहन(बाइक) बरामद किए गए है। वहीं आरोपित राजू शर्मा देई थाना जिला बूंदी का हिस्ट्रीशीटर (एचएस)भी है। दोनों ही आरोपियों के खिलाफ जयपुर समिति बूंदी में 41 आपराधिक मामले दर्ज है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

भजन संध्या आज

कोटा। स्व.श्री लालचंद शिमला देवी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 4 जुलाई शुक्रवार 2025 को रात्रि 8.00 बजे से श्री श्याम कृपा महोत्सव के अंतर्गत विशाल श्याम भजन संध्या का आयोजन गीता सत्संग भवन, सरोवर रोड़ कोटा पर किया जाएगा। आयोजक कमल किशोर अग्रवाल ने बताया कि माताजी स्व.श्रीमती शिमला देवी अग्रवाल की पुण्यतिथि पर बाबा श्याम का गुणगान करने बांदीकुई से आंचल अरोड़ा, देई (बूंदी) से राजेन्द्र अग्रवाल पधार रहे है, साथ ही स्थानीय भजन गायक चंद्रमोहन गर्ग, राजेन्द्र पारीक, भंवर बना, आकाश मालकानी, शुभम शर्मा, राहुल दुबे, दीप अग्रवाल, उन्नति शर्मा, निहारिका सोनी तथा रिद्धि भरावा भी बाबा श्याम का गुणगान करेंगे। श्री श्याम मित्र मंडल संस्था के सान्निध्य में यह कार्यक्रम आयोजित होगा। संस्था के अध्यक्ष सुरेन्द्र गोयल ने बताया कि बाबा श्याम का श्रृंगार दिल्ली और कोलकाता के फूलों से किया जाएगा। बाबा श्याम की अखंड ज्योति जलाई जाएगी। पहले यह कार्यक्रम तिरुपति बालाजी पर होना था, लेकिन बरसात के मौसम को देखते हुए गीता भवन सत्संग हॉल में यह भजन संध्या आयोजित की जाएगी।

शतरंज प्रतियोगिता 5 जुलाई से

कोटा। जिला शतरंज संघ कोटा द्वारा आयोजित जिला अण्डर-13-15 (ओपन व गर्ल्स) शतरंज प्रतियोगिता 5 व 6 जुलाई को वृंदावन होम स्टे सीपी-22 विवेकानंद नगर कोटा में आयोजित की जाएगी। अण्डर-13 वर्ग की प्रतियोगिता 5 जुलाई व अण्डर-15 की प्रतियोगिता 6 जुलाई को आयोजित की जाएगी। कोटा शतरंज संघ के अध्यक्ष प्रेम भाटिया ने बताया कि इस प्रतियोगिता का पहला राउण्ड दोपहर 2 बजे से खेला जाएगा। यह प्रतियोगिता अंतरराष्ट्रीय स्विस पद्धति के आधार पर खेली जाएगी। अण्डर-13-15 (ओपन व गर्ल्स) में वही खिलाड़ी खेलने के लिए पात्र होगा जिसका जन्म अण्डर-13 के लिए 1 जनवरी 2013 व इसके बाद हुआ है एवं अण्डर-15 के लिए 1 जनवरी 2010 व इसके बाद हुआ है इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रत्येक वर्ग प्रथम 2 बालक व 2 बालिकाओं का चयन अण्डर-13-15 राज्यस्तरीय शतरंज प्रतियोगिता के लिए

हाईकोर्ट को मिलेंगे दो नए न्यायाधीश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट को जल्द ही दो और नए न्यायाधीश मिलने वाले हैं। इनमें से एक नियुक्ति वकील कोटे से और एक नियुक्ति न्यायिक कोटे से की जाएगी। इनकी नियुक्ति के बाद हाईकोर्ट में जजों की संख्या बढ़कर 39 हो जाएगी। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम की हाल ही में हुई बैठक में वकील कोटे से अनुरूप सिंघी और न्यायिक कोटे से संगीता शर्मा के नाम की सिफारिश केंद्र सरकार को की गई है। केंद्र सरकार की मंजूरी मिलने के बाद उनके राष्ट्रपति भवन से नियुक्ति वारंट जारी किए जाएंगे। इसके बाद हाईकोर्ट की जोधपुर स्थित मुख्य पीठ में इनका शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जाएगा। गौरतलब है कि गत मई माह में भी सुप्रीम कोर्ट ने वकील कोटे से नियुक्ति के लिए तीन नाम की सिफारिश केंद्र सरकार को भेजी थी।

कानून व्यवस्था रखने के लिए ली बैठक

जयपुर। कोटखावदा पुलिस ने आगामी त्योहारों और पर्वों को देखते ही सामाजिक समरसता कायम रखने के लिए शांति समिति व सीएलजी सदस्यों की बैठक ली।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण आईपीएस दिगत आनंद ने बताया कि गुरु पूर्णिमा,कांवड यात्रा,ताजिया जैसे त्योहारों को मध्यनजर रखते हुए कानून व्यवस्था व सामाजिक सौहार्द कायम रखने के लिए सभी थाना अधिकारियों को अपने-अपने थाना क्षेत्रों में शांति समिति, सीएलजी, पुलिस मित्र, सूरक्षा सखी, ग्राम रक्षक सदस्यों की बैठक आयोजित कर क्षेत्र की कानून व्यवस्था कायम रखने के निर्देश दिए गए है। इस बैठक में ललित शर्मा, अतिरिक्त उपायुक्त जयपुर दक्षिण के निर्देशन व सुरेंद्र सिह सहायक पुलिस आयुक्त चाकसू जयपुर दक्षिण के मार्गदर्शन में थानाधिकारी कोटखावदा भरत महर शामिल हुए।

बैठक में दिगत आनंद ने कहा कि आगामी त्योहारों के मध्यनजर सामाजिक समरसता व सामाजिक सौहार्द कायम रखा जाए। उन्होने सभी से अपील की कि असामाजिक लोग किसी भी तरह से कानून व्यवस्था व सामाजिक सौहार्द भंग ना कर पाए। यदि किसी भी प्रकार की पुलिस को सूचना मिलती है तो तुरंत प्रभाव से कार्यवाही की जाए।

आई.पी.एस. राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस महानिदेशक का कार्यभार संभाला

जयपुर। राजस्थान पुलिस को एक अनुभवी और निष्ठावान नेतृत्व मिला जब वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पद का कार्यभार औपचारिक रूप से ग्रहण किया।

जयपुर स्थित पुलिस मुख्यालय में गुरुवार को आयोजित समारोह में शर्मा ने निवर्तमान डीजीपी से पदभार ग्रहण किया। इस दौरान उच्च पुलिस अधिकारियों-कर्मचारियों की उपस्थिति रही।

आज शाम पुलिस मुख्यालय पहुंचे शर्मा का डीजी इंटेलिजेंस संजय अग्रवाल सहित वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने स्वागत किया। इस दौरान उन्हें पुलिसकर्मियों के दल ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। शर्मा ने परेड का निरीक्षण किया और मौजूद समस्त पुलिस अधिकारियों का परिचय लिया। इसके बाद उन्होंने विधिवत कार्यभार ग्रहण किया और मीडियाकर्मियों से संवाद किया।

महानिदेशक पुलिस शर्मा मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा और राज्य सरकार द्वारा उन पर जताए गए

वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पद का कार्यभार औपचारिक रूप से ग्रहण किया।

- महानिदेशक पुलिस शर्मा ने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा व राज्य सरकार द्वारा उन पर जताए गए विश्वास के प्रति आभार व्यक्त किया

विश्वास के प्रति आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हर नागरिक को पुलिस सेवाएँ उनके थाने पर ही सुलभ हो। पुलिसकर्मियों का व्यवहार अच्छा हो। पुलिस से आम जनता की अपेक्षाएं पूर्ण हो इसके लिए राजस्थान पुलिस टीम को पूरी तत्परता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करना हो। उन्होंने कहा कि पुलिस से संबंधित कार्यों में हम आधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग करेंगे ताकि अपराधों की रोकथाम और जाँच प्रभावी ढंग से हो सके। जनता की सुरक्षा और गरिमा हमारी प्राथमिकता है और इसमें हम जनभागीदारी को सर्वोच्च महत्त्व देंगे।

डीजीपी शर्मा ने कहा कि हमारे पुलिसकर्मी जवान जो दिन-रात आपकी सेवा में तत्पर रहते हैं, उनके कल्याण और बेहतरी का भी हम पूरा ध्यान रखेंगे। राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप नए आपराधिक कानूनों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम दिख रहे हैं। इस दौरान शर्मा ने पुलिस अधिकारियों की एक संक्षिप्त बैठक ली और चर्चा की। इस अवसर पर महानिदेशक पुलिस संजय अग्रवाल, अनिल पालीवाल, मालिनी अग्रवाल, अशोक राठौर,आनंद श्रीवास्तव, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस विशाल बंसल, बिपिन कुमार पाण्डेय, सचिन मित्तल, दिनेश एमएन, जयपुर पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसफ, वीके सिंह, संजीव नार्जरी, बिनीता ठाकुर, प्रशाखा माथुर, हवा सिंह घुमरिया, बीएल मीना, लता मनोज कुमार सहित अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद थे।

34 वर्षों की सुदीर्घ सेवा का अनुभव लिए शर्मा 1990 बैच के राजस्थान कैडर के अधिकारी हैं। वे मथुरा (उत्तर प्रदेश) के मूल निवासी हैं। एम.ए. व एम.फिल डिग्रीधारी शर्मा का पुलिस सेवा में अनुशासन, कार्यकुशलता और नेतृत्व क्षमता के लिए विशेष सम्मान रहा है। राजस्थान में उन्होंने एसपी, आईजी, एसीबी निदेशक, लॉ एंड ऑर्डर प्रमुख और पुलिस अकादमी के निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर सेवा दी है।

बुजुर्ग ने की आत्महत्या

जयपुर। शिवदासपुरा इलाके में ट्रेन के आगे एक बुजुर्ग ने छलांग लगाकर आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। जानकरी में सामने आया कि बुजुर्ग व्यक्ति ने पहले रेलवे फाटक के पास अपनी बाइक खड़ी की और फिर इसके बाद ट्रेन के आते ही उसके सामने छलांग लगा दी। करीब 500 मीटर दूरी तक शव के टुकड़े बिखर गए। सूचना मिलने पर जीआरपी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए शव को सवाई मानसिंह अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। पुलिस ने बताया कि टोंक के मालपुरा हाल प्रताप नगर जगतपुरा निवासी रामअवतार जैन (72) ने ट्रेन के आगे छलांग लगाकर आत्महत्या की। जो पिछले दो साल से यहां परिवार सहित रह रहे थे। पुलिस जांच में सामने आया कि रामअवतार जैन अपनी लूना (दुपहिया वाहन) लेकर घर से निकले थे और शिवदासपुरा के मलवा रेलवे फाटक पहुंचे। जहां रेलवे फाटक के पास अपनी लूना को खड़ी की और कुछ देर में ही ट्रेन के आते ही उसके सामने छलांग लगा दी। ट्रेन की टक्कर लगने से शव के टुकड़े होकर ट्रैक पर बिखर गए। शिवदासपुरा थाना पुलिस आत्महत्या की सूचना पर मौके पर पहुंची। ट्रेन से टकराकर करीब 500 मीटर दूरी तक बिखरे शव के टुकड़ों को इकट्ठा किया गया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव को सवाई मानसिंह अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया। पुलिस प्रथम दृष्टया जांच में आत्महत्या के पीछे पारिवारिक कलह होना सामने आया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

ट्रक और ट्रेलर में भिड़ंत से आग लगने से दो लोग जिंदा जले

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले के दूदू में नेशनल हाईवे 48 पर गुरुवार सुबह ट्रक और ट्रेलर में हुई भिड़ं में दो लोग जिंदा जल गए। सूचना पर पहुंची पुलिस और दमकल ने आग पर काबू पाया और दोनों जले हुए शवों को दूदू के उप जिला अस्पताल में रखवाया।

थानाधिकारी मुकेश कुमार ने बताया कि नेशनल हाईवे संख्या 48 पर पड़ासोली के पास गुरुवार सुबह एक ट्रक ने अचानक आगे चल रहे ट्रेलर को पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि ट्रक में आग लग गई और आग ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया। इस हादसे के दौरान ट्रक में सवार दोनों व्यक्ति ट्रक के केबिन में फंस गए और उनकी मौके पर ही जलकर मौत हो गई।

हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दमकल की मदद से आग पर काबू पाया गया। पुलिस ने दोनों शवों को दूदू के उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया दिया है।वहीं मृतकों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। हादसे के कारणों की जांच भी शुरू कर दी गई है। टक्कर इतनी जोरदार थी कि ट्रक का अगला हिस्सा पूरी तरह जलकर खाक हो गया।

पटवारी बीस हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की बूंदी टीम ने गुरुवार को कार्रवाई करते हुए हल्का पटवार मण्डल सुवानिया तहसील नैनवा जिला बूंदी के पटवारी विजेन्द्र कुमार को परिवादी से जमीन का नामांतरण दर्ज करने की एवज में बीस हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी बूंदी टीम को परिवादी ने शिकायत दी कि पटवारी विजेन्द्र कुमार उसकी जमीन का नामान्तरण दर्ज करने की एवज में पचास हजार रिश्वत की मांग कर रहा है। जिस पर एसीबी बूंदी के उप पुलिस अधीक्षक ज्ञानचंद के नेतृत्व में ट्रेप की कार्रवाई करते हुए पटवारी विजेन्द्र कुमार को बीस हजार रुपये की रिश्वत गिरफ्तार किया।

पत्नी के छोड़कर जाने से नाराज पति ने लगाया फांसी का फंदा

जयपुर। सांगानेर सदर थाना इलाके में पत्नी के छोड़कर जाने से नाराज पति ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि घटना समय बच्चे घर पर ही खेल रहे थे, जिन्होंने अपने पिता को फंदे से लटका देख चिल्लाने लगे। जिस पर आस पास के लोग मौके पर पहुंचे और फिर पुलिस को सूचना दी। पुलिस के अनुसार मृतक के पास से दो पेज का सुसाइड नोट भी मिला। पुलिस ने महात्मा गांधी अस्पताल में पोस्टमॉर्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने मृतक की मां से मिली शिकायत पर आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जांच अधिकारी एएसआई जगदीश ने बताया कि थाना इलाके के रैगरों का मोहल्ला निवासी महेन्द्र भहरवाल (30) ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या की है। जो परिवार के साथ यहां रहकर मजदूरी का काम करता था।

गंगा अपार्टमेंट योजना की वरीयता निर्धारण लॉटरी सफलतापूर्वक सम्पन्न

जयपुर। राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा प्रताप नगर स्थित गंगा अपार्टमेंट (द्वितीय चरण) उच्च आय वर्ग के 80 फ्लैट्स हेतु वरीयता निर्धारण लॉटरी गुरुवार को मण्डल के वृत्त प्रथम, जयपुर कार्यालय में सम्पन्न हुई।

इस लॉटरी कार्यक्रम की अध्यक्षता अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री प्रतीक श्रीवास्तव द्वारा की गई। उल्लेखनीय है कि दिनांक 12 मई से 11 जून 2025 तक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए गए थे। कुल 307 पात्र आवेदकों में से पारदर्शी लॉटरी प्रक्रिया के माध्यम से 80 आवेदकों का वरीयता क्रम निर्धारण किया गया है । यह लॉटरी प्रक्रिया मण्डल की स्ववित्त पोषित योजना के तहत संपन्न की गई।

इसी क्रम में, आज मण्डल की गुलमोहर आवासीय योजना, मानसरोवर (स्ववित्त पोषित योजना) के अन्तर्गत उच्च आय वर्ग के 160 फ्लैट्स के लिए वरीयता निर्धारण लॉटरी आयोजित की जाएगी। इस योजना के लिए कुल 348 पात्र आवेदन प्राप्त हुए हैं।

- गुलमोहर योजना की लॉटरी आज होगी आयोजित
- कुल 307 पात्र आवेदकों में से पारदर्शी लॉटरी प्रक्रिया के माध्यम से 80 आवेदकों का वरीयता क्रम निर्धारण किया

राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी प्रक्रियाएं पूर्ण पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के साथ संपन्न हों, जिससे आमजन को किफायती, सुनियोजित एवं गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराया जा सके।

फरार पचास हजार रुपये का इनामी निलम्बित आरएसी कांस्टेबल गिरफ्तार

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने कार्रवाई करते हुए उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बन्धित दर्ज प्रकरण में फरार पचास हजार रुपये का इनामी निलम्बित आरएसी कांस्टेबल को गिरफ्तार किया गया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने बताया कि एसओजी ने कार्रवाई करते हुए उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बन्धित दर्ज प्रकरण में फरार पचास हजार रुपये का इनामी निलम्बित आरएसी कांस्टेबल शिवसिंह (43) निवासी सीकर हाल निलम्बित कांस्टेबल बी कम्पनी दसवीं बटालियन आरएसी बीकानेर को गिरफ्तार किया है।

जहां जांच में सामने आया कि आरोपित आरएसी कांस्टेबल शिव सिंह ने पुलिस उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 की लिखित परीक्षा से पूर्व प्रकरण में सह आरोपित संदीप कुमार लाटा से अभ्यर्थी सुरेन्द्र कुमार बगडीया

एवं रविन्द्र सिंह को लीक प्रश्न उतर उपलब्ध करवाने के लिए भारी धनराशि में सौदा किया। जिस पर तय सौदे अनुसार आरोपित संदीप कुमार लाटा द्वारा शिव सिंह से धनराशि प्राप्त कर रविन्द्र सिंह के मार्फत शिवसिंह को लीक प्रश्न उत्तर उपलब्ध कराये गये। जिसे शिव सिंह द्वारा अन्य आरोपित सुरेंद्र कुमार बगडीया को परीक्षा पूर्व उपलब्ध करवाया गया। वहीं रविन्द्रसिंह को संदीप कुमार लाटा द्वारा परीक्षा पूर्व अपने आवासीय क्वार्टर उदयपुर में प्रश्न उत्तर पढ़ाये गये। जिसे पढकर सुरेन्द्र कुमार बगडीया का अंतिम रूप से पुलिस उप निरीक्षक प्रशिक्षु के पद पर मेरिट क्रमांक 03 पर चयन हुआ।आरोपी शिवसिंह के विरूद्ध जुर्म प्रमाणित पाया जाने पर शिवसिंह की तलाश करवाई गई।

- उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बन्धित दर्ज प्रकरण में फरार पचास हजार रुपये का इनामी निलम्बित आरएसी कांस्टेबल को गिरफ्तार किया

पुलिस अधीक्षक एसओजी द्वारा उसकी सूचना देने एवं गिरफ्तारी के सम्बन्ध में 50 हजार रुपये के इनाम की घोषणा की गई। शिव सिंह की लम्बे समय से एसओजी द्वारा तलाश की जा रही थी । जिसे गिरफ्तार किया गया है। इस प्रकरण में अब तक 111 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

मिलने के बहाने टोंक से जयपुर बुलाकर युवती से दुष्कर्म

जयपुर। सिंधी कैंप थाना इलाके के एक होटल में मिलने के बहाने एक युवती से दुष्कर्म होने का मामला सामने आया है। पीडिता आरोप है कि आरोपित युवक ने दोस्ती के बाद मिलने के बहाने टोंक से जयपुर बुलाया था। विरोध करने पर शादी करने का झांसा देकर देहशोषण करता रहा। इस संबंध में पीड़िता ने थाने में आरोपित के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार टोंक की रहने वाली 32 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि कुछ समय पहले उसकी मुलाकात एक युवक से हुई थी। इस पर आरोपित ने कुछ समय पहले मिलने के बहाने जयपुर सिंधी कैंप बुलाया। जहां वह उसे एक होटल में लेकर गया और फिर होटल के कमरे में उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर शादी करने का का झांसा देकर दुष्कर्म किया। इसके बाद से आरोपित शादी करने का झांसा देकर कुछ दिनों पहले उसको वापस सिंधी कैंप इलाके में स्थित दूसरी होटल में ले जाकर दुष्कर्म किया। जब पीडिता ने शादी करने का दबाव बनाया तो आरोपित फरार हो गया और फोन उठाना भी बंद कर दिया। इसके बाद पीडिता थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया।

पति की गैरमौजूदगी आए परिचित ने किया विवाहिता से दुष्कर्म

जयपुर। करधनी थाना इलाके में परिचित युवक द्वारा विवाहिता से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि आरोपित पति की गैरमौजूदगी में घर आया और फिर बहकावे में लेकर दुष्कर्म किया। पीडिता का आरोप है कि देह शोषण का विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी। इस संबंध में पीडिता थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि कालवाड़ रोड की रहने एक विवाहिता ने मामला दर्ज करवाया था कि परिचित होने के कारण आरोपित से उसकी बातचीत थी। इसके साथ ही उसका घर पर आना-जाना भी था। आरोप है कि कुछ समय पहले आरोपित परिचित किसी काम के बहाने उसके घर आया। पति की गैरमौजूदगी में बातचीत कर बहकावे में लेकर उसके साथ दुष्कर्म किया।

पुराने नोट के बदले नए नोट दिलाने का झांसा देकर ठगी करने वाला ठग गिरफ्तार

जयपुर। सिंधी कैम्प थाना पुलिस ने पुराने नोट के बदले नए नोट दिलवाने का झांसा देकर ठगी करने वाले शातिर ठग को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपित पति की गैरमौजूदगी में घर आया और फिर बहकावे में लेकर दुष्कर्म किया। पीडिता का आरोप है कि देह शोषण का विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी। इस संबंध में पीडिता थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि कालवाड़ रोड की रहने एक विवाहिता ने मामला दर्ज करवाया था कि परिचित होने के कारण आरोपित से उसकी बातचीत थी। इसके साथ ही उसका घर पर आना-जाना भी था। आरोप है कि कुछ समय पहले आरोपित परिचित किसी काम के बहाने उसके घर आया। पति की गैरमौजूदगी में बातचीत कर बहकावे में लेकर उसके साथ दुष्कर्म किया।

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम आलोक सिंघल ने बताया कि सिंधी कैम्प थाना पुलिस ने पुराने नोट के बदले नए नोट दिलवाने का झांसा देकर ठगी करने वाले शातिर ठग अब्दुल रजाक उर्फ रज्जू निवासी मंडावरी जिला दौसा हाल गलता गेट जयपुर को गिरफ्तार किया है और साथ ही ठगी की रकम भी बरामद की है।

कनिष्ठ अभियंता धन्नाराम व ठेकेदार रामकुंवार गुर्जर एवंमहिपाल डुडी को छह हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया ।

पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपित अब्दुल रजाक उर्फ रज्जू बहुत शातिर किस्त का ठग है। जिसके खिलाफ कई मामले दर्ज है।

राष्ट्रीय लोकदल की राजस्थान प्रदेश कार्यकारिणी घोषित

जयपुर। राष्ट्रीय लोकदल (आरएलडी) ने गुरुवार को राजस्थान प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। जयपुर में आयोजित प्रेस वार्ता में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक जोगिंदर सिंह अवाना ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कार्यकारिणी का गठन आगामी 11 जुलाई को जयपुर के बिड़ला सभागार में होने वाले प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

कार्यकारिणी की सूची पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री त्रिलोक त्यागी द्वारा जारी की गई, जिसमें 5 उपाध्यक्ष, 14 महासचिव समेत 20 सचिव की नियुक्ति की है । प्रदेश अध्यक्ष अवाना ने बताया कि यह एक संक्षिप्त कार्यकारिणी है। जल्द ही इसका विस्तार कर जिलाध्यक्षों व विधानसभा अध्यक्षों की भी घोषणा की जाएगी। उन्होंने कहा कि राजस्थान का क्षेत्रफल बड़ा है और इसमें 41 जिले हैं, इसलिए पार्टी संगठन को हर स्तर पर मजबूत करने की दिशा में यह पहला कदम है। अवाना ने कहा कि यह कार्यकारिणी केवल शुरुआत है। जल्द ही पूरे राज्य में सांगठनिक जाल को फैलाते हुए जिलाध्यक्षों, विधानसभा अध्यक्षों, एवं विभिन्न मोर्चों के प्रमुखों की नियुक्ति की जाएगी। उन्होंने कहा यह कार्यकारिणी उस जन-आधारित राजनीति की शुरुआत है, जिसकी ज़रूरत आज राजस्थान को है।

अवाना ने बताया कि आगामी 11 जुलाई को जयपुर के बिड़ला सभागार में आयोजित प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में इस नई कार्यकारिणी को ज़मीनी कार्यकर्ताओं के सामने पेश किया जाएगा। इस ऐतिहासिक अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय मंत्री श्री जयंत चौधरी स्वयं मौजूद रहेंगे।

यह सम्मेलन न केवल की संगठनात्मक शक्ति का प्रदर्शन होगा, बल्कि राज्य की राजनीति में नई करवट का संकेत भी देगा।

शासन सचिव एवं आयुक्त ने विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की

जयपुर, । सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए नई अप्रोच के साथ काम करेगा। जनसम्पर्क की नई विधाओं और बदलते स्वरूप को ध्यान में रखते हुए परंपरागत प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अब न्यू मीडिया पर विशेष रूप से फोकस किया जाएगा। इसके लिए विभाग को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ अधिकारियों का विभिन्न ट्रेनिंग प्रोग्राम्स के जरिये कौशल संवर्धन किया जाएगा।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की शासन सचिव अर्चना सिंह एवं आयुक्त श्री संदेश नायक ने गुरुवार को मुख्यालय पर विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा के दौरान इस संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। शासन सचिव ने कहा कि राज्य सरकार की योजनाओं, कार्यक्रमों एवं नीतिगत निर्णयों को जन-जन तक पहुंचाने में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की अहम भूमिका है। विगत वर्षों में मीडिया माध्यमों का स्वरूप तेजी से बदला है और सूचनाओं के संप्रेषण में तकनीक का उपयोग महत्वपूर्ण हो गया है। इसे देखते हुए सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में भी प्रचार-प्रसार से जुड़ी नवीनतम तकनीकों को अपनाया जाएगा। अर्चना सिंह ने सभी शाखा प्रभारियों से उनके दायित्वों एवं काम-काज के बारे में विस्तार से चर्चा की और निर्देश दिए कि राज्य सरकार की योजनाओं की ब्रांडिंग इस तरह से की जाए कि अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक उनका लाभ पहुंचाने की मंशा साकार हो सके। राज्य सरकार का प्रचार-प्रसार रचनात्मक होने के साथ-साथ जानकारी परक हो और आमजन के लिए उपयोगी हो। प्रचार-प्रसार के दौरान लक्षित वर्ग का भी ध्यान रखा जाए ताकि सरकार के कार्यों का संदेश सही व्यक्ति तक सही समय पर पहुंचे।

शासन सचिव अर्चना सिंह एवं आयुक्त श्री संदेश नायक ने गुरुवार को मुख्यालय पर विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा की।

सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त संदेश नायक ने जनसम्पर्क के विभिन्न माध्यमों यथा प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, सोशल मीडिया, आउटडोर मीडिया आदि के संबंध में विस्तार से चर्चा की। विभागीय अधिकारियों का दायित्व है कि वे सकारात्मक व रचनात्मक सोच के साथ जनसम्पर्क के दायित्वों का निर्वहन करें और आमजन का जीवन बेहतर बनाने में योगदान दें। उन्होंने आर.जे.एच.एस., पत्रकारों के अधिस्वीकरण सहित अन्य विषयों पर भी समीक्षा की और पत्रकार कल्याण के कार्यों को प्राथमिकता के साथ पूरा करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यालय स्थित विभिन्न शाखाओं यथा विज्ञापन शाखा, क्षेत्र प्रचार शाखा, इलेक्ट्रोनिक मीडिया शाखा, समाचार शाखा, सोशल मीडिया शाखा, प्रकाशन शाखा, छायाचित्र शाखा, शोध एवं संदर्भ शाखा एवं राजस्थान संवाद सहित सम्पूर्ण विभागीय परिसर का दौरा किया।

जलवायु परिवर्तन को लिया स्वप्रेरित प्रसंज्ञान निस्तारित

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में हीट वेव के हालातों सहित जलवायु परिवर्तन को लिए लिए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान को निस्तारित कर दिया है। अदालत ने कहा कि मामले में सरकार की ओर से पेश जवाब को ध्यान में रखते हुए प्रकरण को आगे जारी रखना उचित नहीं है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस मनीष शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश मामले को निस्तारित करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान एक एनजीओ की ओर से पक्षकार बनने के लिए प्रार्थना पत्र पेश किया। इस पर अदालत ने प्रार्थना पत्र भी खारिज कर दिया। गौरतलब है कि हाईकोर्ट की एकलपीठ ने गत 17 अप्रैल को प्रदेश में हीट वेव के हालातों और जलवायु परिवर्तन को लिए स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया था। इसके साथ ही अदालत ने मामले में केंद्र और राज्य सरकार के जिम्मेदार अधिकारियों से जवाब तलब किया था। वहीं प्रकरण को जनहित याचिका के तौर पर सुनवाई के लिए खंडपीठ के समक्ष भेजा था।

पुष्कर नगर परिषद में रिश्वत मामले में फरार सहायक अभियंता गिरफ्तार

इससे पहले चार आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं

अजमेर/ पुष्कर, (कासं)। पुष्कर नगर परिषद में भ्रष्टाचार के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो अजमेर टीम ने कार्रवाई करते हुए जेईएन रिश्वतकांड में फरार चल रहे एईएन (सहायक अभियंता) मुकेश चौहान को गिरफ्तार किया है। एसीबी के एडिशनल एसपी राकेश वर्मा ने एईएन चौहान को कोर्ट में पेश किया, जहां उसे एक दिन के रिमांड सौंपा गया है। एईएन चौहान ने नगर परिषद के टेंडर बिल भुगतान और क्वालिटी कंट्रोल रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने की एवज में ठेकेदार से 60 हजार सहित 2.60 लाख रुपए की रिश्वत मांगी थी। मामले में पूर्व में जेईएन रामनिवास मीणा और जमादार महेश मीणा को गिरफ्तार कर चुकी है।

जानकारी के अनुसार जेईएन रामनिवास मीणा ने ठेकेदार विष्णु गुप्ता से नगर परिषद के कार्यों के बिल का भुगतान करने और क्वालिटी कंट्रोल रिपोर्ट पर साइन करने के बदले 2.60 लाख रुपए की रिश्वत मांगी थी। ठेकेदार का 12.33 लाख रुपए का बकाया था जिसमें से 8.50 लाख रुपए का भुगतान हो चुका था। शेष राशि के लिए 2 लाख रुपए जेईएन मीणा और 60 हजार रुपए एईएन चौहान के लिए बतौर कमीशन मांगे गए। ट्रेप कार्रवाई से पहले ही एईएन चौहान 50 हजार रुपए लेकर जयपुर फरार हो गया था, लेकिन एसीबी की टीम ने उसे तलाश कर गिरफ्तार कर लिया। हालांकि रिश्वत की पूरी रकम अब तक बरामद नहीं हो पाई है। एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राकेश वर्मा के नेतृत्व में यह कार्रवाई की गई।

आरोपी एईएन चौहान।

- सहायक अभियंता मुकेश चौहान को एसीबी ने कोर्ट में पेश किया, एक दिन की रिमांड पर सौंपा
- एईएन ने टेंडर बिल भुगतान और क्वालिटी कंट्रोल रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने की एवज में ठेकेदार से 60 हजार सहित 2.60 लाख की रिश्वत मांगी थी
- मामले में पूर्व में जेईएन रामनिवास मीणा और जमादार महेश मीणा को एसीबी की टीम गिरफ्तार कर चुकी है

दीवार टूटी होने से सफाई कर्मचारी की नाले में बहने से मौत

मांगों को लेकर परिजनों व लोगों ने धरना देकर नारेबाजी की।

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के कोतवाली थाना क्षेत्र स्थित कावाखेड़ा चौकी के निकट नाले की दीवार टूटी होने के चलते एक सफाई कर्मचारी नाले में बह गया। आक्रोशित समाज के लोगों ने दोषी अधिकारी, कर्मचारियों पर कार्रवाई के साथ ही उचित मुआवजे की मांग को लेकर एमजी हॉस्पिटल मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन शुरू कर दिया।

जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा नगर निगम में सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत 52 वर्षीय शिवचरण गौरान बारिश के दौरान रोजमर्रा की तरह सब्जी मंडी से सब्जियां लेकर अपने घर की ओर लौट रहे थे, रास्ते में कावाखेड़ा चौकी के निकट नाले की दीवार टूटी हुई थी जहां बरसाती पानी भरा होने के चलते वह पैर फिसलने के कारण नाले में जा गिरे। तत्काल मौके पर मौजूद लोगों ने बचाने का प्रयास किया, लेकिन पानी का बहाव तेज होने के कारण बचाया नहीं जा सका। इसके बाद पुलिस और प्रशासन को इसकी सूचना दी गई।

- आक्रोशित समाज के लोगों ने दोषी अधिकारी, कर्मचारियों पर कार्रवाई के साथ ही उचित मुआवजे की मांग की

मौके पर पहुंचे कोतवाल गजेंद्र सिंह नरूका और एसडीआरएफ की टीम ने शिवचरण की तलाश शुरू की। रात ज्यादा होने के कारण रेस्क्यू ऑपरेशन रोक दिया गया। इसके बाद गुरुवार को सुबह फिर से अभियान शुरू हुआ तो घटनास्थल से कुछ दूरी पर कचरे के ढेर में फंसी शिवचरण की लाश मिली। इसके बाद समाज के लोगों में आक्रोश फैल गया और आक्रोशित लोगों ने स्थानीय पार्षद शिव प्रकाश घावरी के नेतृत्व में एमजी हॉस्पिटल मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन शुरू कर दिया।

उनका कहना था कि कई बार नाले की दीवार टूटी होने की शिकायत नगर निगम और प्रशासन से की जा चुकी है, लेकिन इस और ध्यान नहीं दिया गया जिसके चलते शिवचरण को अपनी जान गंवानी पड़ी। आक्रोशित वाल्मीकि समाज के लोगों ने मृतक के आश्रितों को उचित मुआवजा और दोषी अधिकारी, कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन शुरू कर दिया। फिलहाल देर शाम तक प्रदर्शन जारी रहा और पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी समझाइश के प्रयास में जुटे रहे।

राजमहल गांव में बजरी माफिया ने ट्रैक्टर ट्रॉली से कुचलकर युवक की हत्या की

देवली, (निसं)। देवली उपखंड क्षेत्र के राजमहल गांव में बुधवार रात कथित तौर पर एक ट्रैक्टर-ट्रॉली से कुचलकर की गई हत्या के मामले में गुरुवार को धरने पर बैठे ग्रामीण और परिजन आक्रोशित हो उठे। हत्या की घटना से नाराज ग्रामीणों में शामिल पुरुष और महिला और युवकों ने मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों के हाथापाई करते हुए मारपीट शुरू कर दी और पुलिस कर्मियों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटना शुरू कर दिया। वहीं घटना धरना स्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों पर पथराव भी किया। ऐसे मे ग्रामीणो के आक्रोश के आगे पुलिस और प्रशासन अधिकारियों को वापस लौटना पड़ा। उक्त दौरान कई पुलिसकर्मियों ने भाग कर अपनी जान बचाई। इससे पहले स्थानीय विधायक राजेंद्र गुर्जर, उपखंड अधिकारी मनोज कुमार मीणा, पुलिस उपाधीक्षक रामसिंह, थाना प्रभारी दौलतराम गुर्जर ने इस मामले में ग्रामीणों से खूब समझाईश की, लेकिन युवक की हत्या से नाराज ग्रामीण मृतक के परिजन को बड़ी आर्थिक सहायता दिलाने, सरकारी नौकरी देने और दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे हैं।

पुरुष-महिलाओं ने मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों से हाथापाई की।

हालांकि, इस दौरान पुलिस के अधिकारियों ने मृतक युवक के परिजनों की ओर से दी जाने वाली हर रिपोर्ट पर सख्त कार्रवाई करने के लिए कार्रवाई करने के लिए तैयार थे बावजूद इसके ग्रामीण और पुलिस अधिकारियों के बीच समझौता समझौता नहीं हुआ और वार्ता सफल रही। हत्या की इस घटना से आक्रोशित महिलाओं ने गुरुवार को सुबह दस बजे बाद देवली बीसलपुर राजमहल मार्ग को पूरी तरह बंद कर दिया। इस दौरान उपखंड क्षेत्र के दूनी थाने के हेडकांस्टेबल समेत पुलिसकर्मियों के साथ हाथापाई शुरू कर दी और पुलिसकर्मियों को पीटने लगे। इसी तरह दूसरी तरफ एक सहायक उप निरीक्षक को भी ग्रामीणों ने बंदी बनाने की कोशिश की, लेकिन देवली प्रधान बनवारी लाल जाट ने मुखरता के साथ इसका विरोध किया और सहायक उप निरीक्षक को सुरक्षित निकाला। ग्रामीणों के गुस्से और आक्रोश को देखते हुए उपखंड अधिकारी पुलिस उपाधीक्षक समेत अधिकारी वापस लौट गए।

- घटना से नाराज ग्रामीणों में आक्रोश, पुलिस कर्मियों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा
- ग्रामीणों के आक्रोश के आगे पुलिस कर्मियों ने भाग कर जान बचाई

उपखंड अधिकारी मनोज कुमार मीणा का कहना है कि युवक की मौत के बाद ग्रामीणों को समझाने की कोशिश की जा रही है। परिजन अपनी मांग पर अड़े हैं। फिलहाल ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया जा रहा है। सूचना पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मालपुरा मोटाराम बेनीवाल मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों से बातचीत करने की कोशिश करते रहे।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मोटाराम बेनीवाल ने बताया कि परिजनों की रिपोर्ट पर पुलिस सख्त कार्रवाई करेगी। उन्होंने देवली वृत्त अधिकारी कार्यालय में भी अधीनस्थ अधिकारियों से मामले की जानकारी ली।

उल्लेखनीय है कि बुधवार रात राजमहल निवासी पप्पू गुर्जर की बजरी की ट्रैक्टर ट्रॉली से कुचलने के बाद मौत हो गई थी। पप्पू गुर्जर के परिजनों का आरोप है कि बजरी माफिया की ट्रैक्टर ट्रॉली चालक ने पप्पू गुर्जर की ट्रैक्टर से कुचलकर हत्या की है। यह घटना राजमहल ग्राम के वनपाल नाका कार्यालय के पास हुई है। विवाद की वजह अवैध बजरी खनन और परिवहन से जुड़ा हुआ है। इस मौके पर सैकड़ों ग्रामीणों ने पुलिस पर कई गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस प्रशासन के विरुद्ध नारेबाजी की और बजरी माफिया और पुलिस के बीच मिलीभगत का आरोप लगाते हुए कहा कि बजरी माफिया और पुलिस साथ में मिलकर बजरी का अवैध कारोबार कर रहे हैं। इस मामले में देर शाम तक परिजन और ग्रामीणों ने मृतक युवक के शव को धरना स्थल पर रखे हुए अपनी मांगों पर अड़े हुए प्रदर्शन कर रहे हैं।

कोर्ट की अवमानना मामले में कलेक्टर व यूआईटी सचिव तलब

भीलवाड़ा, (निसं)। यूआईटी की रियायती दरों पर भूखंड आवंटन योजना में एक और पेचीदगी सामने आई है। पहले कोर्ट की ओर से स्थगन आदेश जारी किए गए और अब इसी स्थगन आदेश की अवमानना करने पर कोर्ट ने यूआईटी प्रशासक (कलेक्टर) और यूआईटी सचिव को तलब किया है।

पिछले दिनों यूआईटी सचिव ललित गोयल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि कोर्ट की ओर से पूर्ण स्थगन नहीं है। यह अस्थाई स्थगन है। इसको लेकर जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष एडवोकेट राजेश शर्मा ने अवमानना याचिका दायर की थी। इस पर कोर्ट ने याचिका को स्वीकार करते हुए कलेक्टर जसमीत सिंह संधू और यूआईटी सचिव ललित गोयल को 22 जुलाई को व्यक्तिगत कोर्ट में पेश होने का आदेश जारी कर दिया है। यानी अब रियायती भूखंड योजना को लेकर कोर्ट नरमी बरतने के मूड में नहीं है।

- यूआईटी की रियायती दरों पर भूखंड आवंटन योजना विवादों में

मामला वकीलों के अधिकारों से जुड़ा है, जिसमें यूआईटी की इस योजना के तहत वकीलों ने 5 प्रतिशत आरक्षण देने की मांग की थी। सात दिन पूर्व कलेक्टर और सचिव को चेताया भी गया था कि वकीलों के आरक्षण के संबंध में स्थिति स्पष्ट की जाएं, लेकिन कोई पुख्ता फैसला नहीं होने पर मामला कोर्ट तक पहुंच गया। कोर्ट ने लॉटरी प्रक्रिया पर स्थगन आदेश जारी कर दिया। कोर्ट के स्थगन आदेश को अस्थाई स्थगन आदेश बताकर आईएएस गोयल ने एक और विवाद खड़ा कर दिया है। अब कोर्ट ने इसमें सख्ती दिखाते हुए कलेक्टर और सचिव दोनों को तलब किया है।

किराना व्यापारी पर 15-20 बदमाशों ने हमला किया, मौत

अनूपगढ़, (निसं)। श्रीगंगानगर जिले के घड़साना में 15-20 बदमाशों ने एक किराना व्यापारी पर जानलेवा हमला कर दिया। हमले में व्यापारी गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे घड़साना के सरकारी अस्पताल से बीकानेर रेफर कर दिया गया। इलाज के दौरान व्यापारी की मौत हो गई। इसके बाद परिजनों ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के लिए मना कर दिया और घड़साना पुलिस थाने के सामने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरना दे दिया। घटना गांव 2 एसटीआर में बुधवार रात की है।

डीएसपी प्रशांत कौशिक ने बताया कि सूचना मिली कि गांव 2 एसटीआर में किराना व्यापारी बग्गा सिंह (47) पर 15-20 बदमाशों ने हमला कर दिया। हमले के बाद सभी बदमाश मौके से फरार हो गए। वहीं हमलावरों की एक देसी पिस्टल और जिंदा कारतूस मौके पर ही रह गया। हमले में बग्गा सिंह गम्भीर रूप से घायल हो गया, जिसे घड़साना के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया, मगर बग्गा सिंह की हालत गंभीर होने के कारण उसे बीकानेर के लिए रेफर कर दिया गया, जहां इलाज के दौरान बग्गा सिंह की मौत हो गई। सूचना मिलने पर घड़साना पुलिस बीकानेर की पीबीएम हॉस्पिटल पहुंची। वहीं परिजनों ने बग्गा सिंह के शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के लिए मना कर दिया और घड़साना पुलिस थाने के सामने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरना दे दिया। वहीं एएसपी सुरेंद्र कुमार घटना की जानकारी मिलते ही मौके पहुंचे और घटना स्थल का मौका मुआयना किया। बग्गा सिंह के परिजनों ने बताया कि गांव 2 एसटीआर में बग्गा सिंह किराने की दुकान चलाते थे। कुछ शराब ठेकेदारों के साथ बग्गा सिंह का विवाद चल रहा था, इसी कारण से देर रात बदमाशों ने बग्गा सिंह पर हमला कर दिया। बदमाशों ने मौके पर फायरिंग करते हुए बग्गा सिंह से बुरी तरह से मारपीट की। इस कारण से बग्गा सिंह की मौत हो गई।

- परिजनों ने घड़साना थाने के सामने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरना दिया
- हमले के बाद बदमाश मौके से फरार, हमलावरों की एक देसी पिस्टल और जिंदा कारतूस मौके पर ही रह गया
- प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि मृतक बग्गा सिंह का शराब ठेकेदार के साथ अवैध शराब की बिक्री को लेकर विवाद था

वार्ड पंच और बग्गा सिंह के पड़ोसी लक्ष्मण (32) पुत्र जयपाल ने बताया कि बग्गा सिंह के 4 बेटियां और 2 बेटे है। बग्गा सिंह गांव में ही किराने की दुकान का काम करता था। बग्गा सिंह की चारों बेटियों की शादी हो चुकी है। बड़ा बेटा मजदूरी करता है और छोटा बेटा किराने की दुकान पर ही अपने पिता की मदद करता था। उन्होंने बताया कि उनके गांव में कालका वाइंस की अवैध ब्रांच चल रही है और शराब ठेकेदारों को शक था कि बग्गा सिंह अपनी दुकान पर अवैध शराब बेचता है। इस कारण से शराब ठेकेदारों और बग्गा सिंह में विवाद चल रहा था।

डीएसपी प्रशांत कौशिक ने बताया कि अभी तक फायरिंग की पुष्टि नहीं हो पाई है। पुलिस के द्वारा हमलावरों को गिरफ्तार करने के लिए उनके ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। वही शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के लिए पुलिस अधिकारियों के द्वारा परिजनों से समझाइश भी की जा रही है मगर परिजन आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े हुए हैं।

बग्गा सिंह की बेटी ने बताया कि हमलावरों ने पहले उसके भाई के साथ मारपीट की थी, जिसकी सूचना घड़साना पुलिस थाने में भी दी गई थी। पुलिस ने इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया और सूचना देने के बाद भी पुलिस मौके पर नहीं पहुंची। कुछ देर बाद हमलावर वापस आए, जिस समय हमलावर वापस आए तो वह अपनी बहन और पापा के साथ घर पर ही थी। हमलावर उसके पापा को खींचकर ले जाने लगे। जब उन्होंने रोकने का प्रयास किया तो हमलावरों ने उन्हें धक्के मारकर दूर कर दिया। हमलावरों ने उसके पिता को भी बुरी तरह पीटा। शोर मचाने पर जब अन्य लोग उसके पिता को छुड़ाने आए तो हमलावरों ने उन पर भी कांच की बोतलों से हमला कर दिया। मृतक की बेटी ने आरोप लगाया है कि पुलिस को सूचना देने के बाद भी पुलिस मौके पर नहीं पहुंची।

एडिशनल एसपी सुरेंद्र कुमार ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि मृतक बग्गा सिंह का शराब ठेकेदार के साथ अवैध शराब की बिक्री को लेकर विवाद था। बुधवार रात हुई लड़ाई में बग्गा सिंह के चोट लगने के कारण उसकी मौत हो गई है। पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारणों का खुलासा हो पाएगा। शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के लिए घड़साना एसएचओ महावीर प्रसाद बीकानेर गए हुए हैं। एएसपी ने बताया कि जब मौका मुआयना किया गया तो पता चला कि वहां एक पिस्तौल और चला हुआ कारतूस मिला है। जांच में स्पष्ट हो पाएगा कि यह पिस्तौल और कारतूस किसका है। परिजनों ने 3 आरोपियों को नामजद करते हुए मामला दर्ज करवाया गया है, उनकी पहचान कर ली गई है। उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आरोपियों के ठिकानों पर दबिश दी जा रही है।

आर्मी कमाण्डर ने "तनोट ब्रिगेड" एवं "रसेल वाइपर्स" का दौरा किया

जैसलमेर, (नि.सं.)। लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह, आर्मी कमांडर, सप्त शक्ति कमांड ने "तनोट ब्रिगेड" एवं "रसेल वाइपर्स" का दौरा किया। इस अवसर पर उन्हें संचालित विभिन्न ऑपरेशनल, प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक पहलों की विस्तृत जानकारी दी गई।

पीआरओ आर्मी राजस्थान ले. कर्नल निखिल धवन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार आर्मी कमांडर ने सभी रैंकों द्वारा प्रदर्शित उच्चतम स्तर की पेशेवर दक्षता, समर्पण एवं संचालन तत्परता की सराहना की। साथ ही उन्होंने क्षेत्र में ऑपरेशनल प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु फार्मेशन के निरंतर प्रयासों और उत्कृष्ट योगदान की भी प्रशंसा की। इस दौरान लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह ने ब्रिगेड द्वारा उठाए गए आगामी सोच वाले नवाचार प्रयासों पर विशेष ध्यान दिया, जिनमें ड्रोन इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, तकनीकी समावेशन के उपाय तथा इंटीग्रेटेड हेल्थ सेंटर की स्थापना शामिल है।

- लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह, आर्मी कमांडर, सप्त शक्ति कमांड को विभिन्न ऑपरेशनल, प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक पहलुओं की जानकारी दी

इन पहलों ने ऑपरेशनल क्षमताओं के साथ-साथ सैनिक कल्याण को भी सशक्त किया है। आर्मी कमांडर ने सभी रैंकों के साथ बातचीत करते हुए उन्हें बदलती युद्ध प्रणाली के अनुरूप सदैव तैयार रहने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने बल दिया कि सभी रैंक अपने प्रशिक्षण मानकों की नियमित समीक्षा करें तथा युद्ध अभ्यासों, टैक्टिक्स, टेक्नीक्स, प्रक्रियाओं और अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाकर अपनी दक्षता में निरंतर सुधार लाएं।

आर्मी कमांडर ने फार्मेशन की क्षमताओं पर पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए सभी पदों के अदम्य साहस, निष्ठा और टीम भावना की सराहना की, जो कमांड स्तर के सभी अभियानों और लक्ष्यों की सफल पूर्ति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। यह दौरा सप्त शक्ति कमांड की ऑपरेशनल तत्परता, नवाचार और सैनिक कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतीक रहा।

राणाप्रताप सागर और जवाहर सागर बांध से पानी की निकासी जारी

कोटा, (निसं)। चंबल नदी पर बने राणाप्रताप सागर बांध और जवाहर सागर बांध से लगातार पानी छोड़े जाने के चलते कोटा चंबल में भारी मात्रा में पानी पहुंच रहा है। इसको देखते हुए कोटा बैराज से भी लगातार पानी की निकासी की जा रही है। कोटा बैराज में लगातार पहुंच रहे पानी के चलते चंबल नदी के पानी में गंदलापन और चिकनाहट बढ़ गई है, जिसका प्रभाव शहर के लिए जलापूर्ति कर रहे जल शोधन संयंत्र पर भी पड़ रहा है। इसके कारण जल शोधन संयंत्र पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर पा रहे हैं, जिस कारण शहर में पेयजल आपूर्ति डगमगाने लगी है। चम्बल नदी में टर्बीडिटी (गंदलेपन) में वृद्धि होने के कारण 650 एनटीयू तक पहुँच गई है। शहरी जल योजना कोटा के मुख्य जल उत्पादन केंद्र अकलेगढ़ पर आने वाले कच्चे पानी में टर्बिडिटी (गंदलापन) अत्यधिक मात्रा में बढ़ गया है। इसके कारण पीला एवं चिकना पानी आ रहा है जिससे जल शोधन प्रक्रिया गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। उक्त स्थिति के कारण अकलेगढ़ जल शोधन केंद्र की शुद्ध पेयजल उत्पादन क्षमता लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो गई है, जिससे वर्तमान में सामान्य पेयजल आपूर्ति बनाए रखना कठिन हो गया है। इसी तरह जल शोधन संयत्र सकतपुरा पर जलशोधन क्षमता प्रभावित होने से 50 प्रतिशत जल उत्पादन ही हो पा रहा है।

जैसलमेर में बरसात से राहत

जैसलमेर, (निसं)। मौसम विभाग के आंकलन अनुसार गुरुवार को बरसात शुरू हुई, जिससे गल्ली मौहल्लों में घरों के परनाले चलने लगे। इसी दौरान किले की अखेप्रोल के गेट के पास दीवार में पानी रिसने लगा, जिससे राहगीरों को दीवार से खतरे की आशंका हुई। राहगीर पुरूषोत्तमदास ने बताया कि अखेप्रोल गेट के समीप बरसात के मौसम में मरम्मत कार्य करवाना बड़े हादसे को निमंत्रण देना है। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को इसकी सुध लेने की अति आवश्यकता है।

300 करोड़ का जमीन घोटाला, सालभर पुराने रजिस्टर में एंट्री कर 55 साल पुराने पट्टे बनाए

बीकानेर, (निसं)। शहर में जमीन के फर्जीवाड़े का बड़ा खेल सामने आया है। खास बात ये है कि ये पट्टे 55 साल पुराने हैं, लेकिन जिस रजिस्टर में इनकी एंट्री है वो साल भर पुराना है। ये सारे पट्टे यूआईटी से भी पहले के हैं, जब सिटी इंप्रूवमेंट कमेटी शहर की जिम्मेदारी संभालती थी, तब पट्टों की एंट्री रजिस्टर में होती थी। 1970 के सारे रजिस्टर जर्जर हो चुके हैं, लेकिन जिस रजिस्टर में 40 पट्टे दर्ज किए गए उसके पन्ने और स्याही नई है। यहां तक कि दस्तखत के ऊपर दस्तखत किए गए। पट्टों में जो मिसल यानी दस्तावजों की जो चेन बताई गई वह बीडीए के दस्तावेजों से मैच नहीं हो रही। फर्जीवाड़े वाली इन प्लॉट की कीमत 300 करोड़ रुपए से ज्यादा आंकी जा रही है। कमेटी की सिफारिस पर बीडीए ने एफआईआर दर्ज करवाई है।

बीडीए की पकड़ में ये मामला अप्रैल में आया था। उसके बाद बीडीए ने कलेक्टर के सामने सारे तथ्य रखे। कलेक्टर ने बीडीए सचिव कुलराज मीणा, निगम उपायुक्त यशपाल आहूजा, एडीएम सिटी रमेश देव, प्रोग्रामर यतिन सोइन, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी अश्विनी कुमार आचार्य और अभिलेखागार विभाग के निदेशक नितिन गोयल की एक कमेटी बनाई।

- 1970 के सारे रजिस्टर जर्जर हो चुके हैं, लेकिन जिस रजिस्टर में 40 पट्टे दर्ज किए गए उसके पन्ने व स्याही नई है

कमेटी से रजिस्टर, जमीन और पट्टों की सत्यता जांचने के लिए कहा। 30 जून को कमेटी ने रिपोर्ट तैयार कर बीडीए कमिश्नर और कलेक्टर को सौंपी। कमेटी ने साफ कहा कि 1970 से पहले के रजिस्टर में दर्ज पट्टों वाला रजिस्टर ना तो इतना नया हो सकता है। ना ही लिखावट नई हो सकती है। रजिस्टर पर क्रमांक नंबर भी नहीं। कई जगह सील नहीं है। इन 40 पट्टों की बीडीए के पास तो मिसल यानी चेन तो है, मगर रजिस्टर में दर्ज मिसल से मेल नहीं खाती। ऐसे में ये पट्टे फर्जी हैं। इस रजिस्टर से लेकर पट्टों की फोरेंसिक जांच होनी चाहिए। इसके लिए एफआईआर करानी अनिवार्य है। इतने बड़े खेल की शुरुआत एक मामूली से अतिक्रमण को हटाते वक्त हुई। दरअसल शहर में एक अतिक्रमण हटाने के लिए बीडीए का दल पहुंचा। वहां पर काबिज एक व्यक्ति ने सीईसी यानी सिटी इंप्रूवमेंट कमेटी जो यूआईटी बनने से पहले थी, के नाम का पट्टा दिखाया। बीडीए हैरान हो गया कि इतना पुराना पट्टा। दल ने अधिकारियों को सूचित किया। अधिकारियों ने उस पट्टे की छानबीन की तो फर्जी रजिस्टर में उसका नाम देखा। तब उस रजिस्टर में दर्ज सारे पट्टों को देखा। तब लगा ये तो पूरा रजिस्टर ही फर्जी बनाया गया। करीब 65 से 70 साल पुराना रजिस्टर और उसका पन्ना नया। स्याही भी ताजी। सीईसी के विकास अधिकारी के हस्ताक्षर के ऊपर हस्ताक्षर, लिखावट भी नई। तब मामला कलेक्टर को बताया और उसके बाद कमेटी ने एक-एक कर सारी परतें उखाड़ दी।

बालोतरा में बरसात हुई

बालोतरा,(निसं)। बालोतरा सहित क्षेत्र में मौसम अचानक बदल गया। तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हुई। झमाझम बारिश से शहर की सड़कों पर पानी भर गया। वहीं भीषण गर्मी और उमस से परेशान लोगों को राहत मिली। बारिश होने से किसानों के चेहरों पर रौनक दिखी। बालोतरा शहर के मुख्य बाजार सहित निचली बस्तियों में पानी ही पानी दिखने लगा। अंडरपास में पानी भरने से यातायात व्यवस्था बिगड़ गई। ओवरब्रिज पर वाहनों की लम्बी कतारें लग गई। यातायात पुलिस ने सुचारू व्यवस्था को लेकर मोर्चा संभाला। दो स्थानों पर बिजली गिरने की भी सूचना मिली। बरसात से बेहाल ड्रेनेज सिस्टम, टाउन प्लानिंग की पोल खोल दी। मानसून की पहली ही बारिश में आधे घंटे में सड़कों पर घुटनों तक पानी भर गया।

क्षतिग्रस्त कमरों को लेकर स्कूल गेट पर ताला जड़ा

छबड़ा (निसं)। उपखंड के कुछ सरकारी स्कूलों की हालत काफी दयनीय है। स्कूलों में बारिश के मौसम में छतों से पानी टपकता है। क्लास रूम में पानी आने से बच्चों के बैठने की जगह तक नहीं बचती। इतना ही नहीं स्कूल के चारों ओर पानी भर जाता है। इसके बाद भी शिक्षा विभाग के जिम्मेदार इस और ध्यान नहीं दे रहे हैं। यह मामला तीतरखेडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल का है। स्कूल के क्षतिग्रस्त कमरों की पीड़ा को लेकर गुरुवार को छात्राओं ने स्कूल गेट पर ताला जड़ दिया और जमकर प्रदर्शन किया। शिक्षकों व ग्रामीणों की समझाइश पर छात्राओं ने गेट का ताला खोला।

जानकारी के अनुसार 27 जून को तीतरखेड़ी गांव में आयोजित रात्रि चौपाल में भी ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर के समक्ष स्कूल के क्षतिग्रस्त कमरों की समस्या रखी थी। जिस पर जिला कलेक्टर ने क्षतिग्रस्त कमरों को शीघ्र ठीक करवाने का आश्वासन दिया था। परंतु एक सप्ताह बाद भी कोई सुधार नहीं होने पर छात्राओं ने स्कूल पर ताला जड़ शिक्षा विभाग व प्रशासन के विरुद्ध नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया।

सरपंच प्रतिनिधि सुरेन्द्र वर्मा ने बताया कि तीतरखेड़ी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के कमरे क्षतिग्रस्त है। जिनके लिए विधायक प्रतापसिंह सिंघवी ने बजट स्वीकृत करवा दिया है। रमसा के माध्यम से शीघ्र ही कमरों का मरम्मत व निर्माण कार्य प्रारंभ हो सकेगा।

मुझे लगता है कि मैं जो एकमात्र बदलाव करूंगा वह शायद एकदिवसीय क्रिकेट को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से दूर रखना है।
– हेनरिक क्लासेन

पूर्व दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज, वनडे को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से बाहर करने को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **जोआओ फोंसेका**

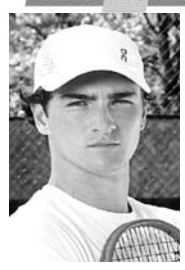

जोआओ फोंसेका ने बुधवार को विंबलडन के तीसरे दौर में पहुंचकर इतिहास रच दिया। 18 वर्षीय ब्राजीलियाई खिलाड़ी ने तीन घंटे से ज्यादा समय तक चले एक कठिन मुकाबले में अमेरिकी जेनसन ब्रूक्सबी को 6-4, 5-7, 6-2, 6-4 से हराया। अपने करियर के सिर्फ चौथे टूर लेवल इवेंट में फोंसेका ने अपनी उम्र से कहीं ज्यादा परिपक्वता दिखाई। कोर्ट 12 पर मुश्किल परिस्थितियों से जूझते हुए फोंसेका ने अमेरिकी खिलाडी के खिलाफ धैर्य बनाए रखना। ईस्टबोर्न में फाइनल में भाग लेने वाले ब्रूक्सबी ने कुछ मौकों पर सफलता हासिल की।

क्या आप जानते हैं ?... शुभमन गिल इंग्लैंड और सेना देशों में दोहरा शतक जड़ने वाले भारतीय कप्तान बने।

8वीं हाजी गनी बाबा स्मृति लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता

जयपुर, 3 जुलाई। सबा क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 8वीं हाजी गनी बाबा स्मर्ति लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता के.एल सैनी स्टेडियम पर आज खेले गये मैचों में प्रतीक मान 68 रन की अद्धर्शतकीय पारी तथा हर्षित शर्मा 29 रन पर 3 विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत आर डी क्रिकेट एकेडमी को 6 विकेट से हराकर नीरज मोदी क्रिकेट एकेडमी ने 2 अंक अर्जित किये। टॉस जीतकर आर.डी. क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये विजय चौधरी 29 रन, अनिल कुमार 27 रन की पारियों की मदद के बावजूद पूरी टीम 19.3 ओवर में 112 रन पर सिमट गयी। गेंदबाजी में नीरजा मोदी क्रिकेट एकेडमी की ओर से हर्षित शर्मा 29 रन पर 3 विकेट, जतिन सैनी 4 ओवर में 9 रन पर 2 विकेट, निखिल कोली 3.3 ओवर में 11 रन देकर 2 विकेट तथा मोन्टी जायसवाल व आदित्य झाला प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। जवाबी पारी में नीरजा मोदी क्रिकेट एकेडमी ने प्रतीक मान 68 रन (50 गेंद 7 चौके 4 छक्के), त्रिलोक सैनी 21 रन नाबाद, विवेक सैनी 15 रन की मदद से विजय लक्ष्य 113 रन 4 विकेट खोकर 17 ओवर में हासिल कर 6 विकेट से जीत दर्ज कर ली।

महाराणा प्रताप एवं गुरू वशिष्ठ पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

आवेदन 31 तक भिजवाये जा सकेंगे

जयपुर, 3 जुलाई। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद द्वारा वर्ष 2023-24 और 2024-25 के लिए राज्य के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों और प्रशिक्षको के लिए महाराणा प्रताप एवं गुरू वशिष्ठ पुरस्कार के आवेदन आमंत्रित किए गए है। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि सभी जिला खेल अधिकारियों को अपने-अपने जिलों के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों और प्रशिक्षको के आवेदन प्राप्त कर परिषद को भेजने के निर्देश दिए गए है। आवेदन भेजने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई है। उन्होने बताया कि इच्छुक खिलाडी व प्रशिक्षक जयपुर में जहां खेल परिषद मुख्यालय और जिला खेल अधिकारी कार्यालय से प्राप्त कर सकते है। साथ ही आवेदन का प्रारूप खेल परिषद की वेबसाईट www.rssc.in से प्राप्त कर सकते है।

जयपुर जिला एथलेटिक संघ के चुनाव 27 जुलाई को

एनएस यादव रिटायर्ड सेल टैक्स ऑफिसर चुनाव अधिकारी नियुक्त

जयपुर, 3 जुलाई। संयोजक, जयपुर जिला एथलेटिक संघ एडहॉक समिति, गोपाल सैनी ने बताया कि आज जयपुर जिला एथलेटिक संघ की साधारण सभा की मीटिंग हुई। उनमें 20 में से 19 क्लबों ने भाग लिया और सर्व समिति यह निर्णय लिया गया कि 27 जुलाई को जयपुर जिला एथलेटिक संघ के चुनाव करवाए जाएं जिससे कि खेल सुचारू रूप से हो सके और चुनाव के लिए एनएस यादव रिटायर्ड सेल टैक्स ऑफिसर को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया है।

झुंझुनूं की अजमेर पर 3-0 जीत के साथ सेमीफाइनल में

जयपुर, 3 जुलाई। राजस्थानी स्टेट जूनियर बालिका फुटबॉल प्रतियोगिता 2025 -26 को आज दो मुकाबले खेले गए। राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि आज

हुए मुकाबलों में पहला मैच-इंडियन स्कूल के मैदान में मुकाबला झुंझुनू वर्सेस अजमेर जिसमें झुंझुनू 3-0 से विजई रहा झुंझुनू टीम में दो गोल जोहा खान एक गोल लकी ने किया । दूसरा मैच-झुंझुनूं अकादमी के खेल परिसर में हनुमानगढ़ वर्सेस जोधपुर के मध्य खेला गया जिसमें हनुमानगढ़ टीम 4-0 से विजेता रहा हनुमानगढ़ की ओर से दो गोल पूजा ने ओर दो गोल एकता ने किए । आज के मैच में मुख्य अतिथि मोनिका राव चेयरपर्सन मरूधरा हुंडई झुंझुनूं ओर साथ में जिला फुटबाल संग के सचिव महेंद्र बिजारणियां सचिव गंगानगर मदन बेनीवाल सचिव नागौर फर्द अली, विकाश बुढ़ानिया, मनोज सैनी प्रकाश जांगिड़ ओर अमर सिंह राठौड़ मौजूद रहे। प्रतियोगिता के सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबला 4 जुलाई को इंडियन स्पोर्ट्स ग्राउंड में झुंझुनूं ओर बीकानेर के बीच खेला जाएगा। दूसरा मुकाबला झुंझुनूं अकादमी के खेल परिसर में हनुमानगढ़ ओर नागौर के मध्य खेला जायेगा फाइनल मुकाबला इंडियन स्कूल मैदान में खेला जाएगा खेले जाएंगे।

देवेंद्र क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 3 जुलाई। अंडर-16 अरावली कप में बालाजी क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 31 ओवर में 120 रन 10 विकेट के नुकसान पर बनाए। तुषार सिंह ने सर्वाधिक 57 रनों का योगदान दिया ! देवेंद्र सिंह शेखावत क्रिकेट अकादमी की ओर से अनुराग लखन ने 4 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी देवेंद्र सिंह शेखावत क्रिकेट अकादमी ने 21 ओवर में 121 रन 3 विकेट के नुकसान पर बना कर जीत हासिल कर ली ! जतिन ने सर्वाधिक 63 रनों का योगदान दिया। मैन ऑफ द मैच अनुराग लखन को चुना गया।

भारत पहली पारी में 587 रन पर आउट

शुभमन गिल ने रचा इतिहास, टेस्ट क्रिकेट में जड़ा अपना पहला दोहरा शतक

बर्मिंघम, 3 जुलाई। भारतीय टीम एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट की पहली पारी में इंग्लैंड के खिलाफ 587 रन पर ऑलआउट हो गई है। गुरुवार को मैच के दूसरे दिन टीम इंडिया ने 310/5 के स्कोर से खेलना शुरू किया। भारत की ओर से शुभमन गिल 269 रन बनाकर आउट हुए। वे टेस्ट में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले भारतीय कप्तान बने। उनके अलावा, यशस्वी जायसवाल 87 और रवींद्र जडेजा 89 रन बनाकर आउट हुए। वॉशिंगटन सुंदर ने 42 रनों का योगदान दिया। इंग्लैंड से शोएब बशीर ने 3 विकेट चटकाए। क्रिस वोक्स और जोश टंग को 2-2 विकेट मिले। ब्रायडन कार्स, जो रूट और कप्तान बेन स्टोक्स को एक-एक विकेट मिले।

दूसरे दिन का दूसरा सत्र भी पूरी तरह से गिल और भारत के नाम रहा। दूसरे सत्र में भारत ने टी से ठीक पहले वॉशिंगटन सुंदर के रूप में एकमात्र विकेट गंवाया लेकिन इस सत्र में भारत ने कुल 145 रन जोड़े। हालांकि इस दौरान भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने भी बतौर टेस्ट कप्तान कई कीर्तिमान अपने नाम किए। गिल इंग्लैंड और सेना देशों में दोहरा शतक जड़ने वाले भारतीय कप्तान बने और 255 के निजी स्कोर तक पहुंचते ही वह बतौर भारतीय टेस्ट कप्तान सर्वाधिक स्कोर बनाने वाले खिलाड़ी बन गए और उन्होंने विराट कोहली के 254 के स्कोर को पीछे छोड़ दिया। भारतीय कप्तान ने 380 गेंदों का सामना करते हुए अपनी रिकॉर्ड तोड़ पारी में 30 चौके और तीन छक्के लगाए हैं। सुबह के सत्र में रवींद्र जडेजा 89 रन बनाकर आउट हुए जबक दूसरे सत्र में सुंदर 42 रन बनाकर आउट हुए। चाय के समय आकाशदीप खाता खोले बिना गिल के साथ क्रीज पर हैं।

तिलकरत्ने दिलशान को पीछे छोड़ा

इंग्लैंड में शतक लगाकर गिल ने बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली। वह सेना देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) में दोहरा शतक लगाने वाले पहले एशियाई कप्तान बन गए। इसके अलावा वह सेना देशों में सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। उन्होंने इस मामले में श्रीलंका के पूर्व बल्लेबाज तिलकरत्ने दिलशान को पीछे छोड़ दिया। गिल से पहले दिलशान के नाम इन देशों में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड दर्ज था। उन्होंने 2011 में लॉर्ड्स में 193 रन बनाए थे।

पटौदी के बाद दोहरा शतक बनाने वाले दूसरे सबसे युवा भारतीय कप्तान बन गए हैं

भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल ने गुरुवार को ऐतिहासिक पारी खेलते हुए अपने टेस्ट करियर का पहला दोहरा शतक बनाकर इतिहास रच दिया है। शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ आज यहां दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन 311 गेंदों में में 21 चौकों और दो छक्कों की मदद से अपना पहला टेस्ट दोहरा शतक पूरा किया। वह इंग्लैंड की जमीन पर यह कारनामा करने वाले तीसरे टेस्ट कप्तान है। इससे पहले सुनील गावस्कर ने 1979 में द ओवल में 221 रन और राहुल द्रविड ने 2002 में द ओवल में ही 217 रन की उपलब्धि दर्ज की थी। गिल इस शतक को बनाने के साथ ही बतौर कप्तान दोहरा शतक लगाने वाले छठे भारतीय बन गए हैं। गिल 25 साल 298 दिन की उम्र में मंसूर अली खान पटौदी के बाद दोहरा शतक बनाने वाले दूसरे सबसे युवा भारतीय कप्तान बन गए हैं। पटौदी ने 1964 में 23 साल 39 दिन की उम्र में दिल्ली में दोहरा शतक बनाया था।

जडेजा ने कपिल देव को पीछे छोड़ दिया

भारत ने दूसरे दिन की शुरुआत पांच विकेट पर 310 रन से की थी, लेकिन गिल और रवींद्र जडेजा ने छठे विकेट के लिए 203 रन जोड़कर भारत को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। जडेजा शतक पूरा नहीं कर सके और 89 रन बनाकर आउट हुए, लेकिन गिल टिके रहे और उन्होंने दोहरा शतक पूरा कर लिया। जडेजा और गिल के बीच हुई यह 200 रनों की साझेदारी इंग्लैंड के खिलाफ किसी भारतीय जोड़ी के बीच छठे या उससे नीचे के विकेट के लिए तीसरी बड़ी साझेदारी है। इससे पहले ऋषभ पंत और रवींद्र जडेजा के बीच 2022 में इसी मैदान (एजबेस्टन) पर 222 रनों की साझेदारी हुई थी। रविंद्र जडेजा ने इंग्लैंड में सातवें या उससे निचले क्रम में बतौर भारतीय बल्लेबाज सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में कपिल देव को पीछे छोड़ दिया।

दिग्गजों के एलीट क्लब में हुए शामिल

एजबेस्टन में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन भारत के टेस्ट कप्तान बने शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ इतिहास रच दिया है। दरअसल, गिल महान डॉन ब्रेडमैन और गैरी सोबर्स जैसे दिग्गजों के क्लब में शामिल हो गए हैं। वह इंग्लैंड के खिलाफ किसी सीरीज में बतौर कप्तान शुरुआती दो टेस्ट में शतक बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इस तरह वह डॉन ब्रेडमैन, गैरी सोबर्स और ग्रीम स्मिथ केसाथ अपना भी नाम लिका चुके हैं।शुभमन गिल इंग्लैंड का दौरा करने वाले 9वें ऐसे कप्तान बन गए हैं जिन्होंने सीरीज के शुरुआती दो टेस्ट मैच में शतक जड़े हैं। मोहम्मद अजहरुद्दीन के बाद वह ये कारनामा करने वाले दूसरे भारतीय कप्तान हैं। डॉन ब्रेडमैन ने 1938, गैरी सोबर्स ने 1966 और मोहम्मद अजहरुद्दीन ने 1990 में ये कमाल किया था। 25 वर्षीय गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में हेडिंग्ले में 147 रन की पारी खेली थी। अब एजबेस्टन टेस्ट के पहले दिन भी उन्होंने शतक जड़ा है। वह 114 रन पर नाबाद हैं उनकी पारी की बदौलत भारत पहले दिन का खेल समाप्त होने पर 5 विकेट के नुकसान पर 310 रन बना चुका है।

अपनी पारी के दौरान शुभमन गिल ने कई सारे रिकॉर्ड अपने नाम किए। वह चौथे ऐसे भारतीय बन गए हैं जिन्होंने अपनी कप्तानी में शुरुआती दोनों टेस्ट मैच में शतक जड़े हैं। इससे पहले ये कारनामा विजय हजारे, सुनील गावस्कर और विराट कोहली कर चुके हैं। इतना ही नहीं, वह इंग्लैंड के खिलाफ लगातार तीन टेस्ट में सेंचुरी जड़ने वाले तीसरे भारतीय बल्लेबाज हैं। इससे पहले मोहम्मद अजरुद्दीन, दिलीप वेंगसरकर और राहुल द्रविड़ ये उपलब्धि हासिल कर चुके हैं।

विंडीज के लिए 100 टेस्ट खेलने वाले खिलाड़ियों के विशिष्ट क्लब में शामिल होंगे ब्रैथवेट

बारबाडोस, 3 जुलाई। क्रेग ब्रैथवेट आज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैदान पर उतरेंगे और वेस्टइंडीज के लिए 100 टेस्ट खेलने वाले 10वें क्रिकेटर बन जाएंगे। वह विव रिचर्ड्स, क्लाइव लॉयड, ब्रायन लारा और गॉर्डन ग्रीनिज जैसे खिलाड़ियों की विशिष्ट सूची में शामिल हो जाएंगे।

पिछले कुछ वर्षों में, ब्रैथवेट सबसे लंबे प्रारूप में वेस्टइंडीज क्रिकेट की आधारशिला बन गए हैं, उन्होंने 99 टेस्ट मैचों में 12 शतकों के साथ 5943 रन बनाए हैं, उनमें से 39 में टीम का नेतृत्व किया है, किसी भी अन्य वेस्टइंडीज खिलाड़ी की तुलना में अधिक गेंदों का सामना किया है और 2022 में आईसीसी पुरुष टेस्ट टीम ऑफ द ईयर में स्थान अर्जित किया है।

उनकी यात्रा 2011 में 18 वर्षीय नवोदित खिलाड़ी के रूप में शुरू हुई, लेकिन यह विश्वास बहुत पहले ही जड़ जमा चुका था, जब उन्होंने सिर्फ़ 14 वर्ष की आयु में ही पूरे आत्मविश्वास के साथ घोषणा की थी कि वह एक दिन वेस्टइंडीज के लिए 100 टेस्ट खेलेंगे।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ़ दूसरे टेस्ट की पूर्व संध्या पर क्रेग ब्रैथवेट ने कहा, मैंने यह लक्ष्य तब तय किया था, जब मैं शायद 14 वर्ष का था - 100 टेस्ट खेलना। अब मैं 18 साल बाद वेस्टइंडीज के लिए अपना सौवां टेस्ट खेल रहा हूं । मैं बहुत आभारी हूं, और मैं बस युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनना चाहता हूं। मई 2011 में बैसेटेरे में पाकिस्तान के खिलाफ ब्रैथवेट के लिए यह ड्रीम डेब्यू नहीं था। हालांकि, उन्होंने एक बाउंड्री के साथ शुरुआत की, लेकिन 15 और 0 के स्कोर ने

उनके टेस्ट करियर की एक शांत शुरुआत को चिह्नित किया। उन्होंने खुद स्वीकार किया कि इस विश्वास को जमने में समय लगा, लेकिन एक बार जब यह जम गया, तो पीछे मुड़कर नहीं देखा।

मीरपुर में बांग्लादेश के खिलाफ़ अपने तीसरे टेस्ट में एक शानदार अर्धशतक ने फॉर्म में वापसी की, जिसके बाद भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसी शीर्ष टीमों के खिलाफ अपने अगले चार मैचों में उन्होंने तीन और अर्धशतक लगाए। ब्रैथवेट को अपना पहला टेस्ट शतक बनाने में तीन साल लग गए - 2014 में पोर्ट ऑफ स्पेन में न्यूजीलैंड के खिलाफ एक संयमित पारी - लेकिन यह एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसने वेस्टइंडीज के शीर्ष क्रम में उनकी जगह को मजबूत किया। उन्होंने कहा, न्यूजीलैंड के खिलाफ मेरा पहला शतक एक ऐसा एहसास था जिसे मैं वास्तव में शब्दों में बयां नहीं कर सकता।

नीरज चोपड़ा क्लासिक को सफल बनाने में कर्नाटक सरकार के सहयोग को सराहा

बेंगलुरु, 3 जुलाई। दो बार के ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने नीरज चोपड़ा क्लासिक को लेकर निरंतर सहयोग के लिए कर्नाटक सरकार, कर्नाटक ओलंपिक संघ और युवा सशक्तिकरण एवं खेल विभाग की प्रशंसा की है - जो भारतीय एथलेटिक्स के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है और देश की पहली अंतरराष्ट्रीय मार्क्यू भाला फेंक प्रतियोगिता है।

शनिवार, 5 जुलाई, 2025 को बेंगलुरु के श्री कांतीरवा स्टेडियम में होने वाले इस कार्यक्रम का आयोजन नीरज खुद जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के साथ मिलकर कर रहे हैं और इसे विश्व एथलेटिक्स और भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) से मंजूरी मिली है। इस प्रतियोगिता को विश्व एथलेटिक्स, खेल की वैश्विक शासी संस्था द्वारा गोल्ड लेवल का दर्जा भी दिया गया है - जो इसके पैमाने और महत्व को मान्यता देता है।

इस आयोजन की तैयारी में, स्टेडियम में काफी बदलाव किया गया है। कई स्टैंडों में बैठने की व्यवस्था को नया रूप दिया गया है, नॉर्थ स्टैंड में कॉर्पोरेट और वीवीआईपी बॉक्स लगाए गए हैं, और प्रशंसकों को रनवे और इनफील्ड एक्शन का नजदीक से नजारा दिखाने के लिए पिच-साइड हॉस्पिटैलिटी जोन बनाया गया है। साउथ स्टैंड में एक मनोरंजन मंच बनाया गया है, जबकि एथलीटों के लिए इष्टतम प्रदर्शन की स्थिति सुनिश्चित करने के लिए मुख्य टर्फ को नए सिरे से बिछाया गया है। मार्क्यू इवेंट से पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में नीरज चोपड़ा ने कहा, मैं कर्नाटक सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने स्टेडियम को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लिवरपूल फॉरवर्ड जोटा की कार दुर्घटना में मौत

लंदन, 3 जुलाई। पुर्तगाल और लिवरपूल के स्टार फॉरवर्ड डिओगो जोटा और उनके भाई आंद्रे सिल्वा की कार दुर्घटना में मौत हो गई है। वह 28 वर्ष के थे। स्पेन के जमोरा प्रांत में हुई इस दुर्घटना में पुर्तगाल फॉरवर्ड के भाई आंद्रे सिल्वा की भी मौत हो गई। 26 वर्षीय जोटा पुर्तगाली सेकेंड-टियर क्लब पेनाफिल के साथ एक पेशेवर फुटबॉलर भी थे। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार जोटा और उनके भाई की आज स्थानीय समयानुसार लगभग 00:30 बजे कार दुर्घटना में मौत हो गई। उन्होंने कहा कि उनकी कार का एक अन्य वाहन को ओवरटेक करते समय टायर फट गया और सड़क से फिसलने के बाद उसमें आग लग गई। जोटा ने पिछले महीने ही अपने लंबे समय की साथी रूटे कार्डसो से शादी की। उनके तीन बच्चे हैं। उल्लेखनीय है कि जोटा ने पिछले सीजन में लिवरपूल को प्रीमियर लीग का खिताब जीतने में मदद की थी और पुर्तगाल के लिए भी खेला था जिसने जून में नेशंस लीग के फाइनल में स्पेन को हराया था।

टीम इंडिया का बांग्लादेश दौरा हो सकता है रिशेड्यूल

नई दिल्ली, 3 जुलाई। टीम इंडिया का अगस्त में होने वाला बांग्लादेश दौरा रीशेड्यूल होने की कगार पर पहुंच चुका है। इसके पीछे का कारण है कि बीसीसीआई को अभी भारत सरकार से बांग्लादेश दौरे पर जाने की अनुमति नहीं मिली है। इस बीच बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने भी इस दौरे के रीशेड्यूल होने का हिंट दे दिया है।इस सीरीज के तहत 3 वनडे और इतने ही टी20 मैच खेले जाने थे, जिसकी शुरुआत 17 अगस्त से ढाका में होनी थी। हालांकि, बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड की मीडिया समिति के अध्यक्ष इफ्तिखार रहमान ने एएफपी को बताया कि बीसीसीआई ने उन्हें सूचित किया है कि दौरे में देरी हो सकती है। बीसीसीआई ने इस दौरे को लेकर अभी तक कोई टिप्पणी नहीं की है। रहमान ने बिना कोई विस्तृत जानकारी दिए कहा कि, ये दौरा एफटीपी का हिस्सा है, इसलिए इसे कैंसल करना कोई विकल्प नहीं है, लेकिन इसे आपसी सहमति से किसी समय पर रीशेड्यूल किया जा सकता है।

गिल एक शानदार कप्तान और बेहतरीन बल्लेबाज : जायसवाल

बर्मिंघम, 3 जुलाई। भारत के सलामी बल्लेबाज़ यशस्वी जायसवाल ने अपने कप्तान शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा है कि वह एक शानदार कप्तान और एक बेहतरीन बल्लेबाज हैं और उनके साथ साझेदारी का वह बल्लेबाजी के साथ-साथ ड्रेसिंग रूम में भी लुत्फ उठाते हैं। एजबस्टन टेस्ट के पहले दिन 87 रन की पारी खेलने और गिल के साथ भारतीय पारी को संभालने वाली साझेदारी करने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में आए जायसवाल ने कहा, गिल की कप्तानी अभी तक बेहतरीन रही है। हम साथ में बल्लेबाजी का लुत्फ उठाते हैं और कोशिश करते हैं कि जो पिच पर सेट है, वह खेल को आगे तक ले जाएं। हमारे बीच यही बात भी होती है कि सीजन-दर-सीजन हम कैसे खेल सकते हैं। ड्रेसिंग रूम में भी हमारे बीच यही बातें होती हैं। वह एक बेहतरीन बल्लेबाज हैं और जिस तरह से उन्होंने अब तक इस सीरीज में बल्लेबाज़ी की, वह शानदार है। गौरतलब है कि एजबस्टन टेस्ट में भारतीय टीम ने अपने एकादश में तीन बदलाव किया, लेकिन फिर भी इस एकादश में जसप्रीत बुमराह और कुलदीप यादव जैसे आक्रामक गेंदबाज नहीं थे, जो विपक्षी टीम के 20 विकेट लेने की कुव्वत रखते हैं। जहां बुमराह को वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत एक सप्ताह के ब्रेक के बाद भी आराम दिया गया, वहीं कुलदीप की जगह वॉशिंगटन सुंदर की ऑलराउंड क्षमता को प्राथमिकता दी गई। इसको लेकर गिल की बहुत आलोचना भी हो रही है। हालांकि जायसवाल ने इससे इनकार किया कि गिल पर इन बातों को लेकर कोई दबाव भी था। उन्होंने कहा, बल्लेबाजी के साथ-साथ एक कप्तान के रूप में भी वह (गिल) अब तक बेहतरीन रहे हैं। उनके दिमाग में क्या चल रहा है, इसको लेकर वह स्पष्ट भी हैं। उन्हें पता है कि उन्हें क्या करना है और हमें (टीम को) उन पर पूरा भरोसा भी है। हम सब अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश कर रहे हैं। आज टीम चयन में भी उनके ऊपर कोई दबाव या कन्फ्यूजन नहीं था।

रोहन बोपन्ना और सैंडर गिल पहले दौर में ही हुए बाहर, युकी-गैलोव दूसरे दौर में पहुंचे

लंदन, 3 जुलाई। विंबलडन में बुधवार का दिन भारतीय फैंस के लिए बेहद निराशाजनक रहा है। इस दौरान भारतीय टेनिस स्टार रोहन बोपन्ना और उनके जोड़ीदार सैंडर गिल शुरुआती दौर में हारकर पुरुष युगल स्पर्धा से बाहर हो गए। बता दें कि, इस जोड़ी को तीसरी वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी केविन क्राविएट्ज और टीम पुएट्ज से एक घंटे और चार मिनट में 3-6, 4-6 से हारकर टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा।वहीं भारत के अन्य युगल स्टार युकी भांबरी और उनके अमेरिकी जोड़ीदार रॉबर्ट गैलोवे ने फ्रांस के मैनुअल गुइनार्ड और मोनाको के रोमेन अर्नेडो को सीधे सेटों में हराकर विंबलडन पुरुष युगल प्रतियोगिता के दूसरे दौर में प्रवेश किया। एक घंटे और 49 मिनट तक चले पहले दौर के मुकाबले में 16वीं वरीयता प्राप्त इंडो-अमेरिकन जोड़ी ने अर्नोडो और गुइनार्ड को 7-6 , 6-4 से हराया।

राडुकानू और फ्रिट्ज विंबलडन के तीसरे दौर में

ब्रिटेन की महिला टेनिस खिलाड़ी एम्मा राडुकानू और अमेरिका के दिग्गज टेलर फ्रिट्ज ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज कर विंबलडन टूर्नामेंट के तीसरे दौर में जगह बना ली है। एम्मा राडुकानू ने चेक गणराज्य

की पूर्व चैंपियन मार्केटा वोंद्रोसोवा को हराकर विंबलडन चैंपियनशिप के महिला एकल के तीसरे दौर में प्रवेश किया। 82 मिनट तक चले मुकाबले में राडुकानू ने वोंद्रोसोवा को 6-3, 6-3 से हराया।

एन श्रीराम बालाजी और एम ए रेयेस-वरेला की जोड़ी पुरुष युगल के दूसरे दौर में

भारतीय टेनिस खिलाड़ी बालाजी और उनके मैक्सिकन जोड़ीदार एम ए रेयेस-वरेला ने अमेरिका की लर्नर टीएन और एलेक्जेंडर कोवासेविक की जोड़ी को गुरुवार को हराकर विंबलडन पुरुष युगल मुकाबले के दूसरे दौर में जगह बना ली है। आज यहां बालाजी और रेयेस की जोड़ी ने अपने शुरुआती दौर के मुकाबले में अमेरिका के लर्नर टीएन और अलेक्जेंडर कोवासेविक की जोड़ी को सीधे सेटों में 6-4, 6-4 से आसानी से हरा दिया। इंडो-मैक्सिकन जोड़ी ने दोनों सेटों के तीसरे गेम में अपने अमेरिकी प्रतिद्वंद्वियों की सर्विस तोड़ी।

नौरी ने टियाफो को हराया, सिएरा से हाकर बौल्टर हुए टूर्नामेंट से बाहर

ब्रिटेन के स्टार कैमरून नौरी ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए रोमांचक मुकाबले में फ्रांसेस टियाफो को हराकर विंबलडन के तीसरे दौर में जगह बना ली है। ब्रिटेन के नंबर एक खिलाड़ी नौरी ने बुधवार को खेले गये मुकाबले में अमेरिका के टियाफो के खिलाफ 4-6, 6-4, 6-3, 7-5 से जीत दर्ज की और अब नौरी का अगला मुकाबला इटली के विश्व नंबर 73 मैटिया बेलुची से होगा।

राजस्थान की आस्था माथुर ने बीसीसीआई मैच रेफरी एग्जाम में पांचवां स्थान हासिल किया

आस्था माथुर बनी बीसीसीआई पैनल मैच रेफ्ररी

जयपुर, 3 जुलाई। राजस्थान की आस्था माथुर ने बीसीसीआई द्वारा जून माह में आयोजित मैच रेफरी एग्जाम में शानदार प्रदर्शन करते हुए पांचवा स्थान हासिल किया।राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा फरवरी माह में बीसीसीआई पैनल मैच रेफ्ररी एग्जाम में भाग लेने वाले संभावितों के चयन हेतु राष्ट्रिय क्रिकेट प्रतियोगिताओं में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले अनुभवीपूर्व खिलाडियों का राज्य स्तरीय मैच रेफ्ररी एग्जाम आयोजित किया गया था जिसमे प्रथम 3 स्थान हासिल करने वाले पूर्व खिलाडी आस्था माथुर , शलेंद्र गहलोत व पुनीत यादव ने राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए दिनांक 17 - 19 जून को अहमदाबाद में आयोजित बीसीसीआई मैच रेफ्ररी एग्जाम में भाग लिया व राजस्थान की आस्था माथुर ने बीसीसीआई मैच रेफ्ररी एग्जाम में 77 . 5 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हुए पांचवा स्थान हासिल किया। बीसीसीआई द्वारा आयोजित मैच रेफ्ररी एग्जाम में प्रथम 10 स्थान हासिल करने वाले रेफ्ररी को बीसीसीआई मैच रेफ्ररी पैनल में शामिल किया गया। आरसीए एडहॉक कमेंटी संयोजक डी डी कुमावत, सदस्य धनञ्जय सिंह खींवसर, पिंकेश पोरवाल, आशीष तिवारी व मोहित यादव ने आस्था माथुर को बीसीसीआई मैच रेफरी एग्जाम में पांचवा स्थान हासिल करने व बीसीसीआई पैनल मैच रेफ्ररी बनने पर हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

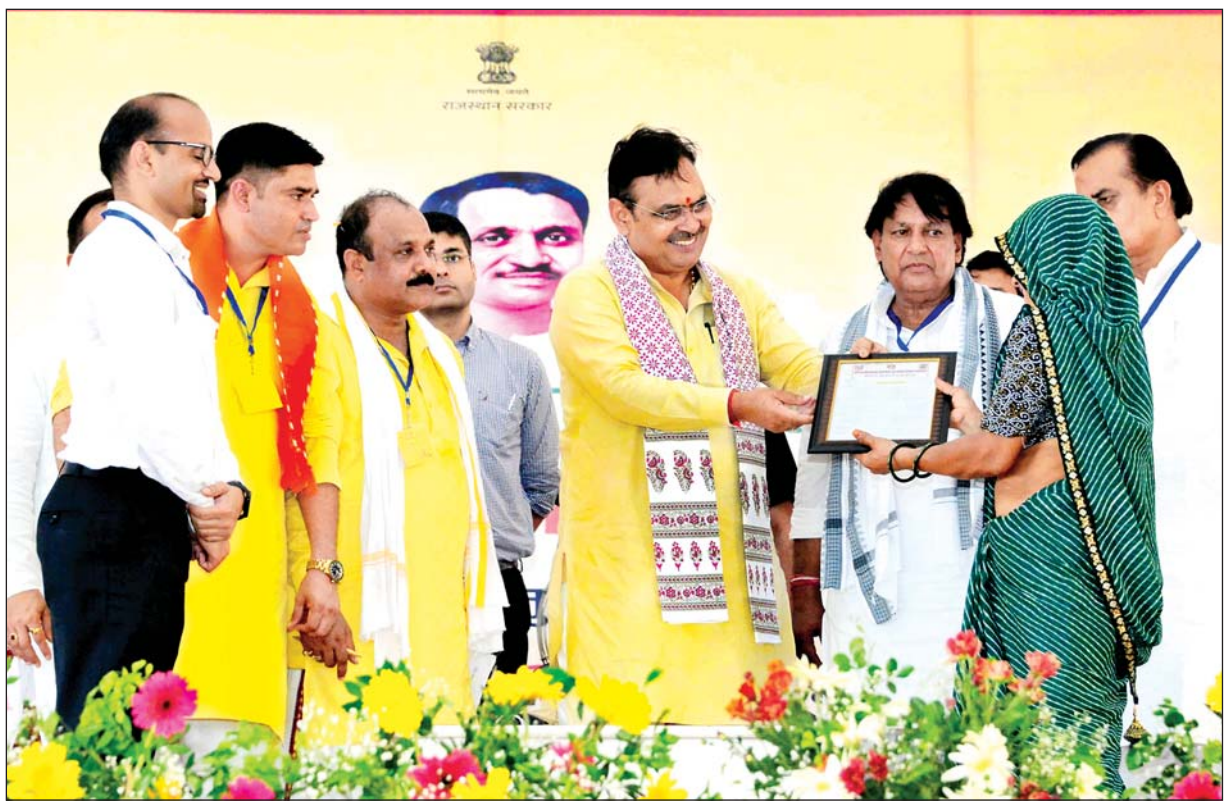

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सवाई माधोपुर के खण्डार में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के दौरान आयोजित जनसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को लाभ के चैक व दस्तावेज सौंपे।

मुख्यमंत्री ने बालेर-करणपुर सड़क निर्माण कराने की घोषणा की

उन्होंने खंडार में दीनदयाल अंत्योदय शिविर का अवलोकन कर जनसभा को संबोधित किया

■ **मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि सवाई माधोपुर में इन शिविरों के माध्यम से अब तक सीमा ज्ञान के 410, रास्तों के 228 तथा आपसी सहमति से बँटवारे के 161 प्रकरणों का निस्तारण हो चुका है।**

सवाई माधोपुर, 3 जुलाई (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि अन्तिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के उत्थान से ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। "पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा" उनके इसी सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

शर्मा गुरूवार को सवाई माधोपुर के खण्डार उपखण्ड में बालेर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के दौरान आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सवाई माधोपुर अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक धरोहर के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहां का रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान जहां बाघों के लिए दुनियाभर में जाना जाता है, वहीं, रणथंभौर का किला यूनैस्को विश्व धरोहर स्थल है। सवाई माधोपुर के अमरूदों की अपनी विशेष पहचान है।

शर्मा ने कहा कि इन शिविरों के माध्यम से गरीब और वंचित वर्ग को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाकर उनके जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य है कि प्रशासन और जनता के बीच कोई खाई नहीं हो तथा कोई भी व्यक्ति विकास की मुख्य धारा से छूट न जाए।

उन्होंने कहा कि सवाई माधोपुर में इन शिविरों के माध्यम से अब तक सीमाज्ञान के 410, रास्तों के 228, आपसी सहमति से बंटवारे के 161 प्रकरणों का निस्तारण कर स्वामित्व के 689 कार्ड वितरित किये गये तथा 33 हजार 414 पौधों के वितरण सहित, विभिन्न जनहित के कार्य किए गए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले डेढ़ साल में प्रदेश में जितने काम हुए, उतने पूर्ववर्ती सरकार अपने पूरे 5 साल में भी नहीं कर पाई। हमारी सरकार प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के विकास एवं उन्नयन के लिए काम कर रही है।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 10 करोड़ रुपये की लागत से बालेर-करणपुर सड़क का निर्माण कराने की भी घोषणा की तथा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों, प्रवीण बैरवा (एनएफएसए), सरोज (कन्यादान योजना), सम्पत्ति देवी (वृद्धावस्था पेंशन), रामवीर मीना (स्वामित्व पट्टा) तथा मीना देवी (पीएम आवास योजना) को प्रमाण-पत्र एवं चैक वितरित किए।

मुख्यमंत्री ने समारोह परिसर में वृक्षारोपण समारोह में खण्डार विधायक जितेन्द्र गोठवाल, संभागीय आयुक्त भरतपुर डॉ. टीना सोनी, महानिरीक्षक पुलिस रेंज भरतपुर राहुल प्रकाश, मुख्य वन संरक्षक अनूप के.आर., जिला कलक्टर काना राम, पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता सहित, अनेक गणमान्य लोग व आमजन उपस्थित थे।

अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडिस की याचिका खारिज

नई दिल्ली, 03 जुलाई। दिल्ली हाईकोर्ट ने बॉलीवुड एक्ट्रेस जैकलीन फर्नांडीज की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने 200 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में अपने खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने की मांग की थी।

जैकलीन ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की दूसरी सप्लीमेंट्री चार्जशीट और दिल्ली की एक निचली अदालत में लंबित कार्यवाही को रद्द करने का भी अनुरोध किया था। लेकिन जस्टिस अनीश दयाल ने उनकी याचिका खारिज

■ **जैकलीन ठग सुकेश चंद्रशेखर के साथ मनी लॉण्डरिंग में आरोपी है। उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर कर उनके खिलाफ दर्ज एफ.आई.आर. रद्द करने की मांग की थी।**

कर दी। सुनवाई के दौरान, ईडी के वकील ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि जैकलीन की याचिका में कोई दम नहीं है। विशेष अदालत ने भी अभियोजन शिकायत (आरोप पत्र) का संज्ञान लिया था और पहली नजर में आरोपों में दम नजर आया था। वकील ने ये भी कहा कि संज्ञान लेने के आदेश को चुनौती नहीं दी गई है। बता दें, जैकलीन फर्नांडीज ठग सुकेश चंद्रशेखर के खिलाफ दर्ज मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपी हैं। वे जांच के दौरान पूछताछ के लिए ईडी के सामने पेश भी हो चुकी हैं।

आरएसएस के प्रांत प्रचारकों की आज से दिल्ली में बैठक

तीन दिवसीय बैठक में संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा होगी, सरसंघचालक व सरकार्यवाह भी उपस्थित रहेंगे

■ **आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने बताया कि संघ के शताब्दी वर्ष के दौरान सरसंघचालक के साथ विशेष संवाद का कार्यक्रम दिल्ली, मुंबई, कोलकाता व बैंगलुरु में आयोजित किया जायेगा, जिसमें समाज के प्रमुख लोगों को बुलाया जायेगा।**

जयपुर, 3 जुलाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक का आयोजन केशव कुंज (दिल्ली) में 4 से 6 जुलाई तक होने वाला है। बैठक में मुख्यत: संगठनात्मक विषयों पर चर्चा होगी। यह बैठक निर्णय लेने वाली बैठक नहीं है। इसमें प्रांतों में संगठन के कार्य की प्रगति व अनुभवों पर चर्चा होती है। कार्य विभागों के कार्य को लेकर भी चर्चा होती है। बैठक में सरसंघचालक, सरकार्यवाह की उपस्थिति रहती है। उनका मार्गदर्शन सभी कार्यकर्ताओं को प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने केशव कुंज में पत्रकारों से बातचीत के दौरान बैठक में आने वाले विषयों के संबंध में जानकारी दी। इस अवसर पर उनके साथ सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर तथा प्रदीप जोशी भी उपस्थित थे।

आंबेकर ने बताया कि शताब्दी वर्ष इस बैठक का मुख्य विषय है। सभी प्रांतों ने तैयारी की है, अपनी-अपनी योजना बनाई है। उस पर बैठक में चर्चा होगी, बैठक के पश्चात इस संबंध में जानकारी प्रदान की जाएगी। शताब्दी वर्ष का शुभारंभ नागपुर में 2 अक्तूबर को विजयादशमी उत्सव के साथ होगा, जिसमें सरसंघचालक उपस्थित रहेंगे। इसके पश्चात अगले एक वर्ष तक शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम चलेंगे।

उन्होंने बताया कि शताब्दी वर्ष के दृष्टिगत, सरसंघचालक के प्रवास की योजना पर भी चर्चा होगी। शताब्दी वर्ष के दौरान, सरसंघचालक के साथ विशेष संवाद कार्यक्रम देश के चार प्रमुख शहरों-दिल्ली, मुंबई, कोलकता, बैंगलुरु में आयोजित होंगे, जिसमें समाज के प्रमुख लोगों को बुलाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि शताब्दी वर्ष के निमित्त संघ ने समाज के समक्ष पंच परिवर्तन का विचार रखा है, इसके अंतर्गत, संघ का लक्ष्य संपूर्ण समाज की सहभागिता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

कांग्रेसाध्यक्ष ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयात करता है, जो फलों, सब्जियों और लाभकारी फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी हैं।"

उन्होंने पूछा "क्या इससे हमारे करोड़ों किसानों को नुकसान नहीं होगा, जो यूरिया और डीएपी खाद की कमी से पहले से ही जूझ रहे हैं?

खड़गे ने प्रधानमंत्री मोदी को सीधे निशाने पर लेते हुए, उनके एक्स हैंडल को टैग करते हुए लिखा: "आपकी सरकार की 'चीनी गारंटी' की कोई एक्सपायरी डेट नहीं है। पांच साल पहले गलवान में 20 वीर सैनिकों के बलिदान के बाद, आपने चीन को 'क्लीन चिट' दे दी। आज चीन उसका पूरा फायदा उठा रहा है, और हम सिर्फ असहाय की तरह मूकदर्शक बनकर देख रहे हैं।"

बिहार में मतदाता के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शामिल हुए सभी मतदाताओं को स्वयं की तथा अपने माता-पिता की नागरिकता का प्रमाण देना होगा। यह कदम चुनाव से कुछ ही महीने पहले उठाए जाने के कारण, इसकी व्यवहारिकता पर सवाल उठ रहे हैं और बड़े पैमाने पर मतदाताओं के मतदान से वंचित रह जाने की आशंका भी जताई जा रही है। एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग का उपयोग नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (एनआरसी) लागू करने के लिए किया जा रहा है।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने इस प्रक्रिया को एनआरसी से भी अधिक खतरनाक बताया।

उन्होंने कहा कि भले ही यह कवायद बिहार में शुरू की गई हो, लेकिन इसका असली निशाना पश्चिम बंगाल है, जहां अगले वर्ष चुनाव होने हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि ग्रामीण बंगाल के मतदाताओं के नाम हटा दिए जाएंगे और उनकी जगह बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और अन्य राज्यों से आए नाम जोड़े जाएंगे।

बिहार में भी चुनाव आयोग के इस कदम का विरोध हो रहा है। कांग्रेस ने इसे "समाधान के नाम पर एक कपटपूर्ण और संदिग्ध विचार" बताया, जिसमें राज्य की मशीनरी (तंत्र) की ताकत का इस्तेमाल कर के, जानबूझकर मतदाताओं को बाहर किये जाने का खतरा है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुये "इंडिया" गठबंधन के नेताओं ने कहा कि उनका एक प्रतिनिधिमंडल शीघ्र ही चुनाव आयोग से मिलकर अपनी चिंताएं प्रकट करेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने स्वयं 2019 में राज्य में एनआरसी लागू करने की किसी भी योजना को सिरे से खारिज कर दिया था। उन्होंने उस समय कहा था, कहां का एनआरसी, बिल्कुल लागू नहीं होगा। आने वाले दिनों में यह मुद्दा और अधिक राजनीतिक रंग पकड़ सकता है।

प्र.मंत्री मोदी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रदान करेगी। मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा, द ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ घाना' से सम्मानित होने पर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

रिश्वत प्रकरण ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

व जगराम मीणा को भी आरोपी बनाया गया है, जबकि विधायक के फरार चल रहे पीए रोहित व दो अन्य के खिलाफ जाँच जारी है।

विशेष लोक अभियोजक शालिनी गौतम के जरिए पेश आरोप पत्र में एसीबी ने कहा कि अनुसंधान से स्पष्ट है कि आरोपी एमएलए ने करौली जिले स्थित खानों के सही नहीं चलने के संबंध में विधानसभा में लगाए गए प्रश्नों को डिलीट करने के लिए 2.50 करोड़ रुपए की रिश्वत मांगी थी और पहली किस्त 20 लाख रुपए दलालों के जरिए ली।

गौरतलब है कि परिवादी रविन्द्र कुमार व उसके भाई सुमंत ने 4 अप्रैल 2025 को एसीबी में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें कहा था कि एमएलए पटेल विधानसभा में प्रश्न लगाकर उन्हें डरा-धमका कर पैसों की डिमांड कर उन्हें परेशान कर रहा है। उसने उनकी खानों पर नियमानुसार खनन कार्य नहीं होने का आरोप लगाया है और उस संबंध में प्रश्न लगाया है, जबकि वे नियमानुसार खनन का काम कर रहे हैं। वे प्रश्न हटाने की एवज में रिश्वत मांग रहे हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव के लिए केजरीवाल की बड़ी घोषणा

केजरीवाल ने कहा, उनकी पार्टी बिहार विधानसभा चुनाव अकेले लड़ेगी

■ **केजरीवाल ने कहा लोकसभा चुनाव में हम इंडिया गठबंधन के साथ हैं पर राज्यों के चुनाव में हमारी राह अलग है।**

अहमदाबाद, 03 जुलाई। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बड़ा ऐलान करते हुए कहा है कि उनकी पार्टी बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में अकेले उतरेगी और सरकार बनाएगी। केजरीवाल ने यह भी साफ किया कि लोकसभा चुनाव में वे इंडिया गठबंधन के साथ हैं, लेकिन विधानसभा में अपनी अलग रणनीति पर काम करेंगे।

केजरीवाल ने कहा, हमने पंजाब में सरकार बनाई, दिल्ली में लगातार जनसमर्थन मिला और अब बिहार की जनता भी बदलाव चाहती है। हम बिहार में अकेले लड़ेंगे, जीतेंगे और सरकार बनाएंगे। इस बयान ने बिहार की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। यह साफ संकेत है कि आम आदमी पार्टी अब बिहार को अपने अगले राजनीतिक विस्तार के केन्द्र में रख रही है।

दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि लोकसभा चुनावों के लिए आम आदमी पार्टी इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी रहेगी। लेकिन राज्य विधानसभा चुनावों में पार्टी स्वतंत्र रणनीति अपनाएगी। यह बयान गठबंधन सहयोगियों के लिए भी एक राजनीतिक संदेश है कि आप अब केवल सहयोगी भूमिका में नहीं, बल्कि स्वतंत्र राजनीतिक ताकत बनकर उभरना चाहती है। केजरीवाल ने बिहार के चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा, लोकतंत्र में निष्पक्षता सबसे जरूरी है और बिहार में जो चुनाव आयोग कर रहा है, वह सही नहीं है। जनता सब देख रही है। आप के लिए बिहार की सियासत एक नई चुनौती और अवसर, दोनों है। राज्य की पारंपरिक राजनीति जातीय समीकरणों और महागठबंधनों पर टिकी रही है। ऐसे में केजरीवाल का यह दावा कि हम अकेले लड़ेंगे और जीतेंगे, एक आक्रामक चुनावी रणनीति की ओर इशारा करता है।

बागेश्वर धाम में टैंट गिरा, एक की मौत, 8 घायल

बागेश्वर, 03 जुलाई। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित बागेश्वर धाम से हादसे की बड़ी खबर सामने आ रही है। जानकारी के मुताबिक, बागेश्वर धाम परिसर में टेंट गिरने के कारण एक श्रद्धालु की मौत हो गई है। वहीं, 8 लोग इस हादसे में घायल बताए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, बागेश्वर धाम में ये हादसा गुरुवार को सुबह-सुबह करीब 7 बजे आरती के बाद हुआ। आपको बता दें कि बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री हैं जो कि देश के सबसे चर्चित संतों या कथवाचकोंमें से एक हैं।

छतरपुर के गढ़ा गांव में स्थित बागेश्वर धाम परिसर में जब टेंट गिरा, तब लोहे का एंगल सिर में लगने से एक श्रद्धालु की मौत हो गई। वहीं, इस हादसे में 8 लोग घायल हुए हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए छतरपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक, गुरुवार सुबह करीब 7 बजे आरती के बाद बारिश हो रही थी।बारिश से बचने के लिए श्रद्धालु टेंट के नीचे इकट्ठा हुए थे।

अखिलेश यादव ने बिहार में आर.जे.डी. को समर्थन दिया

सपा प्रमुख ने वोटर वैरिफेशन विवाद पर आर.जे.डी. नेता तेजस्वी का समर्थन किया

■ **अखिलेश ने कहा कि भाजपा चुनाव आयोग के साथ मिलकर बिहार के विधानसभा चुनाव में गड़बड़ी करना चाहती है।**

लखनऊ, 03 जुलाई। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि हमने बिहार में लालू यादव को समर्थन देने का फैसला किया है। उनकी सरकार बनानी हैं। वहां भाजपा चुनाव आयोग के साथ मिल कर गड़बड़ी करना चाहती है।

साथ ही उन्होंने वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन पर भी सवाल खड़े किए हैं। आरजेडी नेता तेजस्वी यादव बिहार में वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन पर लगातार सवाल खड़े कर रहे हैं। अब इस मामले पर अखिलेश यादव ने भी तेजस्वी का समर्थन किया है और भाजपा पर आरोप लगाए हैं।

वहीं, समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने यूपी सरकार पर तीखा हमला किया और आरोप लगाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्कूलों को विलय करने के हालिया कदमों के पीछे गहरी साजिश है। शिक्षा ही विकास की सबसे बड़ी कसौटी होती है।

भाजपा सरकार में शिक्षा और शिक्षकों की जो उपेक्षा हो रही है, उसके पीछे एक गहरी साजिश की ये आशंका बलवती हो रही है कि भाजपा आनेवाली पीढ़ी से शिक्षा का अधिकार छीनना चाहती है, जो शिक्षित होता है, वह सकारात्मक भी होता है और सहनशील भी, ऐसे लोग भाजपा की नकारात्मक राजनीति को कभी भी स्वीकार नहीं करते हैं।

वहीं, इससे पहले समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव की सुरक्षा में बड़ी चूक देखने को मिली। दरअसल, अखिलेश यादव आजमगढ़ में एक सभा को संबोधित करने पहुंचे थे। इसी दौरान, एक शख्स ने सुरक्षा घेरा पार कर उनके मंच पर चढ़ ने की कोशिश की। सपा अध्यक्ष की सुरक्षा में तैनात सुरक्षाकर्मियों ने समय रहते, शख्स को ऐसा करने से रोक लिया। पुलिस के अनुसार, आरोपी समाजवादी पार्टी कार्यकर्ता है।

यू.पी. के पूर्व सांसद धनंजय डबल मर्डर केस में बरी

जौनपुर, 03 जुलाई। जौनपुर के पूर्व सांसद और बाहुबली नेता धनंजय सिंह को कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। 15 वर्ष पूर्व हुए डबल मर्डर केस के आरोपी पूर्व सांसद धनंजय सिंह को एमपी-एमएलए कोर्ट ने निर्दोष पाते हुए बरी कर दिया है। एडीजे प्रथम एमपी सिंह की अदालत ने पूर्व सांसद सहित, सभी पांच लोगों को बरी कर दिया गया है। एमपी-एमएलए कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुनाया कि धनंजय सिंह दोषी नहीं हैं।

■ **सांसदों व विधायकों के मामलों की विशेष अदालत ने धनंजय सहित सभी 5 आरोपियों को निर्दोष करार देकर बरी कर दिया।**

बेलवा डबल मर्डर केस में बरी होने के बाद धनंजय सिंह ने कोर्ट का धन्यवाद अदा किया। उन्होंने कहा कि यह राजनीतिक मामला था।

एक लाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रिकवरी वाहनों, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली, तीनों सेनाओं के लिए एकीकृत कॉमन इन्वेंट्री मैनेजमेंट सिस्टम और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों की खरीद शामिल है। इससे देश की वायु रक्षा प्रणाली मजबूत होगी, आपूर्ति श्रृंखला का प्रबंधन बेहतर बनेगा और सशस्त्र बलों की संचालन तैयारी मजबूत होगी।

इसके अलावा, नौसेना के लिए समुद्री बारूदी सुरंग, बारूदी सुरंग रोधी नौका, मिसाइल रोधी तोप प्रणाली और समुद्री क्षेत्र के लिए रोबोट के खरीद प्रस्तावों को भी मंजूरी दी गयी है।

आसाराम की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

7 जुलाई तक अंतरिम जमानत दी थी।

सुनवाई के दौरान, आसाराम के वकील ने कोर्ट से तीन महीने का और समय मांगा था, लेकिन कोर्ट ने साफ कर दिया कि सिर्फ एक महीने की ही मोहलत दी जा रही है और कहा कि यह अंतिम अवसर होगा। इस संबंध में विस्तृत आदेश आना अभी बाकी है।

पाक हॉकी टीम को भारत में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता था। उन्होंने कहा कि सरकार के इस निर्णय का मतलब यह भी है कि भविष्य में पाकिस्तान के खिलाड़ी अन्य आईओसी प्रशासित खेल आयोजनों में भी भारत आ सकेंगे। हॉकी एशिया कप का आयोजन 27 अगस्त से 7 सितंबर तक राजगीर में होगा, जबकि अंडर-21 जूनियर वर्ल्ड कप का 14वां संस्करण चेन्नई और मदुरै के मेयर राधाकृष्णन स्टेडियम में 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। इस बार पहली बार टूर्नामेंट में 24 टीमें भाग लेंगी।

सरकार के एक सूत्र ने कहा, "भारत किसी भी टीम के बहुराष्ट्रीय खेल आयोजनों में भाग लेने के खिलाफ नहीं है। लेकिन द्विपक्षीय कार्यक्रम अलग होते हैं। पाकिस्तान की हॉकी टीम एशिया कप और जूनियर वर्ल्ड कप में इसलिए आएगी क्योंकि अन्य टीमें भी आ रही हैं। संबंधित मंत्रालयों से आवश्यक मंजूरी ली जा चुकी है। भारत को ओलंपिक चार्टर का पालन करना है। हम किसी भी देश को प्रतियोगिता में भाग लेने से नहीं रोक सकते।"

गौरतलब है कि पाकिस्तान की भागीदारी पर पहलगाम आतंकी हमले और उसके बाद सीमा पार स्थित आतंकी ठिकानों पर चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के कारण संदेह बना हुआ था।

जब यह पूछा गया कि क्या भारत को सितंबर में क्रिकेट के एशिया कप में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने की अनुमति दी जाएगी, तो उन्होंने जवाब दिया, "बीसीसीआई ने अभी तक इस बारे में हमसे संपर्क नहीं किया है। जब वे हमसे संपर्क करेंगे, तब इस पर विचार किया जाएगा।"

'अमेरिका, उन देशों पर जो ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साथ प्रवेश कर रहे हैं। अगर भारत अमेरिकी प्रतिबंधों की अवहेलना करते हुए रूसी तेल आयात जारी रखता है, तो अमेरिका इन उत्पादों पर 500 प्रतिशत आयात शुल्क लगा सकता है। इसका अर्थ होगा कि भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में अत्यधिक महंगे हो जाएंगे और प्रतिस्पर्धा में टिक नही पाएंगे।

उदाहरण के लिए, अगर एक परिधान की कीमत 10 डॉलर है, तो टैरिफ के बाद वह 60 डॉलर हो सकती है, जिससे अमेरिका में उसकी मांग और भारतीय निर्यातकों के अनुबंध खत्म हो सकते हैं। भले ही अमेरिका-भारत व्यापार संबंध मजबूत और विकसित हो रहे हैं, लेकिन वे अत्यधिक संवेदनशील भी हैं, अचानक नीतिगत बदलावों, रणनीतिक समीकरणों और भू-राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित हो सकते हैं। रूसी तेल को लेकर 500 प्रतिशत टैरिफ की धमकी इसका ताजा उदाहरण है, अमेरिका शायद भारत की विदेश नीति को आर्थिक दबाव के ज़रिए प्रभावित करना चाहता है। भारत की ओर से इस खतरे को कम करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे ऊर्जा स्त्रोतों में विविधता लाना, अमेरिका से तेल आयात बढ़ाना, कूटनीतिक संतुलन साधना और अमेरिकी बाजारों तक दीर्घकालिक पहुंच सुनिश्चित करने की कोशिश करना आदि।

दिल्ली में पुरानी गाड़ियों को सीज़ करने के अभियान पर रोक

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को पत्र लिखकर अनुमति प्राप्त की

■ **मंत्री ने आयोग से आग्रह किया कि पुरानी गाड़ियों को पैट्रोल-डीज़ल नहीं देने के आदेश को वापस लिया जाए।**

नई दिल्ली, 03 जुलाई। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पुरानी गाड़ियों पर लगा बैन हटा लिया गया है। इसे लेकर दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) को पत्र लिखा और राजधानी में एक जुलाई से लागू हुए एंड-ऑफ-लाइफ (ईओएल) वाहनों के नियमों की कमियां गिनाईं। साथ ही, उन्होंने पुरानी गाड़ियों को फ्यूल न देने के निर्देश पर रोक लगाने को कहा। दरअसल, दिल्ली में एंड ऑफ व्हीकल वाहनों के नियमों के तहत की जा रही पुरानी गाड़ियों की जब्ती पर फिलहाल रोक लगा दी गई है।

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि अभी इस नियम को इंप्लीमेंट नहीं कर रहे हैं। गाड़ियों को उम्र के हिसाब से नहीं, बल्कि पॉल्यूशन स्तर के हिसाब से बंद किया जाएगा। इस पर सरकार काम कर रही है। मनजिंदर सिंह सिरसा ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को पत्र लिखकर डायरेक्शन नंबर 89 के क्रियान्वयन पर रोक लगाने को कहा है, जिसके तहत दिल्ली में एंड-ऑफ-लाइफ (ईओएल) वाहनों को फ्यूल देने से मना किया गया है।

उन्होंने पत्र में लिखा है कि हम सीएक्यूएम से आग्रह करते हैं कि डायरेक्शन नंबर 89 के क्रियान्वयन पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाए, जब तक कि ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन (एएनपीआर) प्रणाली पूरे एनसीआर में एकीकृत नहीं हो जाती। हमें विश्वास है कि दिल्ली सरकार के चल रहे बहुआयामी प्रयासों से वायु गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार आएगा।

मनजिंदर सिंह सिरसा ने मीडिया से बातचीत कर कहा कि उन्होंने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को पत्र लिखकर दिल्ली में एंड-ऑफ-लाइफ (ईओएल) वाहनों को ईंधन न देने के निर्देश पर रोक लगाने को कहा है।

उन्होंने कहा कि हमने उन्हें बताया है कि जो ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन (एएनपीआर) कैमरे लगाए गए हैं, वे मजबूत सिस्टम नहीं हैं और उनमें अभी भी कई खामियां हैं। तकनीकी गड़बड़ियां, सेंसर का काम न करना और स्पीकर का खराब होना, ये सभी कमियां हैं। इसे अभी तक एनसीआर डेटा के साथ एकीकृत नहीं किया गया है। यह हाई-सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेटों (एचएसआरपी) की पहचान करने में सक्षम नहीं है।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908